Nagari-Pracharini Granthmala Series No. II.

श्रीदादूदयाल की बानी।

महामहोपाध्यायसुधाकरद्विवेदि-सम्पादित

और

काशी-नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा
प्रकाशित।

1906
TARA PRINTING WORKS,
BENARES.
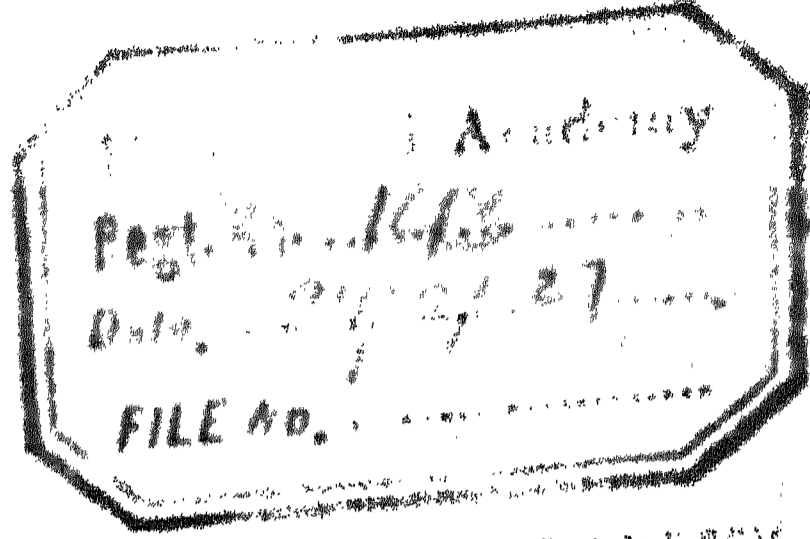
श्रीदादूदयाल की बानी ।

महामहोपाध्यायसुधाकरद्विवेदि-सम्पादित ।

मूल्य १॥)

निवेदन।

श्रीदादूदयाल जी के वचनों को मैं ने दो भागों में विभक्त किया है एक में उनकी बानी है और दूसरे में उनके पद हैं। यह पहिला भाग छाप कर प्रकाशित किया जाता है। दूसरा भाग भी छप रहा है और यथासमय शीघ्र प्रकाशित किया जायगा। दूसरे भाग की समाप्ति पर मैं श्रीदादूजी की जीवनी और उनके वचनों के विषय में अपने विचार भूमिकारूप में लिख कर पाठकों को अर्पण करूँगा। जब तक ग्रन्थ समस्त न छप जाय तब तक उसके विषय में कुछ लिखना उचित नहीं यही समझ कर मैं ने भूमिका लिखने का विचार जब तक श्रीदादू जी के पद भी न छप जाँय तब तक के लिये टाल रक्खा है।

इस स्थान पर मैं जयपुरनिवासी रेवरेण्ड ट्रैल साहब और काशी निवासी बाबू राधाकृष्न दास को धन्यवाद देता हूँ कि जिनकी कृपा से काशी नागरीप्रचारिणी सभा को श्रीदादू जी के ग्रन्थों की प्रतियाँ प्राप्त हुईं और मै उनके सम्पादन में समर्थ हुआ।

१०-९-०४ } सुधाकरद्विवेदी

विषयसूची ।

—:o:—

		पृष्ठ — पृष्ठ
(१)	गुरु को अंग ...	१ — १३
(२)	सुमिरन को अंग	१४— २४
(३)	बिरह को अंग	२५— ३७
(४)	परचा को अंग	३८— ४५
(५)	जरना को अंग	४६— ४८
(६)	हैरान को अंग	४९— ७१
(७)	लय को अंग	७२— ७५
(८)	निहकरमी पतिव्रता को अंग	७६— ८३
(९)	चेतावनी को अंग	८४— ८५
(१०)	मन को अंग	८६— ९६
(११)	सूच्छम जनम को अंग	९७— ९७
(१२)	माया को अंग...	९८—१११
(१३)	साँच को अंग...	११२—१२५
(१४)	भेष को अंग ..	१२६—१२९
(१५)	साधु को अंग...	१३०—१३९
(१६)	मध्य को अंग...	१४०—१४५
(१७)	सारग्राही को अंग	१४६—१४८
(१८)	विचार को अंग...	१४९—१५२
(१९)	बिस्वास को अंग	१५३—१५७
(२०)	पीय पिछानन को अंग	१५८—१६१
(२१)	समरथाई को अंग	१६२—१६५
(२२)	सबद को अंग ...	१६६—१६८

			पृष्ठ पृष्ठ
(२३) जीवित म्रितक को अंग	...	...	१६९—१७३
(२४) सूरातन को अंग	...	...	१७४—१८०
(२५) काल को अंग ...	...	...	१८१—१८८
(२६) सजीवन को अंग	...	...	१८६—१९३
(२७) पारिख को अंग	...	...	१९४—१९७
(२८) उपज को अंग...	...	...	१९८ १९९
(२९) दयां निरबलता को अंग ...	...		२००—२०३
(३०) सुंदरी को अंग	...	...	२०४—२०६
(३१) कस्तूरिया मृग को अंग ...	...		२०७—२०८
(३२) निंदा को अंग ...	...	...	२०९—२१०
(३३) निरगुन को अंग	...	...	२११—२१३
(३४) बिनती को अंग	...	...	२१४—२२१
(३५) साषीभूत को अंग	...	...	२२२—२२४
(३६) बेली को अंग...	...	...	२२५—२२६
(३७) अबिहड को अंग	...	...	२२७—२२९

श्रीदादूदयाल की बानी ।

गुरु को अंग ।
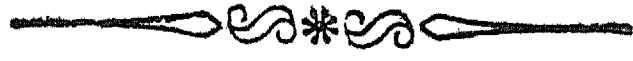
दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
गैब माँहि गुरुदेव मिला । पाया हम परसाद ॥
मस्तक मेरे कर धरा । देखा अगम अगाध ॥ २ ॥
सत्तगुरू सहजइ मिला । किया बहुत उपकार ॥
निरधन धनवँत करि लिया । गुरू मिला दातार ॥ ३ ॥
सतगुरु सो सहजइ मिला । लीया कंठ लगाइ ॥
दाया भई दयाल की । दीपक दिया जगाइ ॥ ४ ॥
दादू देव दयाल की । गुरू दिखाई बाट ॥
ताला कुंजी लाइ करि । खोले सबै कपाट ॥ ५ ॥
सतगुरू अंजन बाहि करि । नैन पटल सब खोले ॥
बहरे कानोँ सुनने लागे । गूँगे मुख सोँ बोले ॥ ६ ॥
सतगुरु दाता जीव का । स्रवन सीस कर नैन ॥
तन मन सौँज सँवारि सब । मुख रसना अरु बैन ॥ ७ ॥
राम नाम उपदेस करि । अगम गवन यह सैन ॥
दादू सतगुरु सब दिया । आप मिलाए एैन ॥ ८ ॥
सतगुरु कीया फेरि करि । मन का औरै रूप ॥
दादू पंचौ पलट करि । कैसे भए अनूप ॥ ६ ॥
साचा सतगुरु जो मिलै । सब साज सँवारै ॥
दादू नाव चढाइ करि । ले पार उतारै ॥ १० ॥

सतगुरु पसु मानुस करइ । मानुस तैं सिध सोइ ॥
दादू सिध तैं देवता । देव निरंजन होइ ॥ ११ ॥
दादू काढे काल मुख । अंधे लोचन देइ ॥
दादू ऐसा गुरु मिला । जीव ब्रह्म करि लेइ ॥ १२ ॥
दादू काढे काल मुख । स्रवनहु सबद सुनाइ ॥
दादू ऐसा गुरु मिला । मिरतक लिए जिलाइ ॥ १३ ॥
दादू काढे काल मुख । गूँगे लिए बुलाइ ॥
दादू ऐसा गुरु मिला । सुख मैं रहे समाइ ॥ १४ ॥
दादू काढे काल मुख । मेहरि दया करि आइ ॥
दादू ऐसा गुरु मिला । महिमा कही न जाइ ॥ १५ ॥
सतगुरु काढे केस गहि । डूबत एहि संसार ॥
दादू नाव चढाइ करि कीए पैरी पार ॥ १६ ॥
भव सागर मैं डूबता । सतगुरु काढे आइ ॥
दादू खेवट गुरु मिला । लीये नाव चढाइ ॥ १७ ॥
दादू उस गुरुदेव की । मैं बलिहारी जाउँ ॥
आसन अमर अलेख था । ले राखे उस ठाउँ ॥ १८ ॥
आतम माँहै ऊपजइ । दादू पंगुल ग्यान ॥
किरतम जाइ उलंघि करि । जहाँ निरंजन थान ॥ १९. ॥
आतम बोध बाँझ का बेटा । गुरु मुख उपजइ आइ ॥
दादू पंगुल पंच बिन । जहाँ राँम तहँ जाइ ॥ २० ॥
साचा सहजइ ले मिलइ । सबद गुरू का ग्यान ॥
दादू हम को ले चला । जहँ प्रीतम का थान ॥ २१ ॥
दादू सबद बिचारि करि । लागि रहइ मन लाइ ॥
ग्यान गहइ गुरुदेव का । दादू सहज समाइ ॥ २२ ॥
सतगुरु सबद सुनाइ करि । भावइ जीव जगाइ ॥
भावइ अंतरि आप करि । अपनो अंग लगाइ ॥ २३ ॥

बाहर सारा देखिए। भीतरि कीया चूर ॥
सतगुरु सबदों मारिया। जान न पावइ दूर ॥ २४ ॥
सतगुरु मारे सबद सों। निरखि निरखि निज ठौर ॥
राम अकेला रहि गया। चित्त न आवइ और ॥ २५ ॥
दादू हम को सुख भया। साधु सबद गुरु ग्यान ॥
सुधि बुधि सोधी समझि करि। पाया पद निरबान ॥ २६ ॥
सबद बान गुरु साधु के। दूरि दिसंतरि जाइ ॥
जेहि लागे सो ऊबरे। सूते लिए जगाइ ॥ २७ ॥
गुरू सबद मुख सों कहा। क्या नेरे क्या दूर ॥
दादू सिख स्रवनन सुना। सुमिरन लागा सूर ॥ २८ ॥
सबद दूध घृत राम रस। मथि करि काढइ कोइ ॥
दादू गुरु गोबिंद बिन। घट घट समझि न होइ ॥ २९ ॥
सबद दूध घृत राम रस। साधु बिलोवनहार ॥
दादू अम्रित काढि ले। गुरुमुख गहइ बिचार ॥ ३० ॥
घीव दूध में रमि रहा। ब्यापक सबही ठौर ॥
दादू बकता बहुत हैं। मथि काढहिं ते और ॥ ३१ ॥
कामधेनु घट घीव है। दिन दिन दुरबल होइ ॥
गुरू ग्यान ना ऊपजइ। मथि नहिं खाया सोइ ॥ ३२ ।
साचा समरथ गुरु मिला। तिन तत दिया बताइ ॥
दादू मोट महाबली। घट घृत मथि करि खाइ ॥ ३३ ॥
मथि करि दीपक कीजिए। सब घट भया प्रकास ॥
दादू दीया हाथ करि। गया निरंजन पास ॥ ३४ ॥
दीपे दीआ कीजिए। गुरुमुख मारग जाइ ॥
दादू अपने पीउ का। दर्सन देखइ आइ ॥ ३५ ॥
दादू दीया है भला। दिया करो सब कोइ ॥
घर में धरा न पाइए। जे कर दिया न होइ ॥ ३६ ॥

दीप का गुन तेल है । दीया मोटी बाति ॥
दीया जग में चाँदना । दीया चालइ साथि ॥ ३७ ॥
निरमल गुरु का ग्यान गहि । निरमल भगति बिचार ॥
निरमल पाया प्रेम रस । छूटे सकल बिकार ॥ ३८ ॥
निरमल तन मन आतमा । निरमल मनसा सार ॥
निरमल प्रानी पंच करि । दादू लंबे पार ॥ ३६ ॥
परा परी पासइ रहइ । कोई न जानब ताहि ॥
सतगुरु दिया दिखाइ करि । दादु रहइ लव लाइ ॥ ४० ॥
जिन्ह हम सिरजे सो कहाँ । सतगुरु देहु दिखाइ ॥
दादू दिल अरवाह का । तहँ मालिक लव लाइ ॥ ४१ ॥
मुझही में मेरा धनी । परदा खोलि दिखाइ ॥
आतम सों परआतमा । परगट आनि मिलाइ ॥ ४२ ॥
भरि भरि प्याला प्रेमरस । अपने हाथ पिलाइ ॥
सतगुरु के सदकै किया । दादू बलि बलि जाइ ॥ ४३ ॥
सरवर भरिया दह दिसा । पंखी प्यासा जाइ ॥
दादू गुरु-परसाद बिन । क्यों जल पावइ आइ ॥ ४४ ॥
मानसरोवर माँहि जल । प्यासा पीवइ आइ ॥
दादू दोस न दीजिए । घर घर कहन न जाइ ॥ ४५ ॥
दादू गुरु गरुआ मिला । नाथइ सब गमि होइ ॥
लोहा पारस परसता । सहज समाना सोइ ॥ ४६ ॥
दान गरीबी गहि रहा । गरुआ गुरू गँभीर ॥
सूखि मसी तल सुरति मति । सहज दया गुरु धीर ॥ ४७
सीधी दाता पलक में । तिरइ तिरावन जोग ॥
दादू ऐसा परम गुरु । पाया केहि संजोग ॥ ४८ ॥
सतगुरु ऐसा कीजिए । रामरस माता ॥
पार उतारइ पलक में । दरसन का दाता ॥ ४६ ॥

देवइ किरका दरद का। टूटा जोरइ तार॥
दादू साधइ सुरति को। सो गुरु पीर हमार॥ ५० ॥
दादू घाइल होइ रहे। सतगुरु के मारे॥
दादू अंग लगाइ करि। भव-सागर तारे॥ ५१ ॥
दादू साँचा गुरु मिला। साँचा दिया दिखाइ॥
साँचे को साँचा मिला। साँचा रहा समाइ॥ ५२ ॥
साँचा सतगुरु साधि ले। साँचे लीजइ साध॥
साँचा साहिब सोधि करि। दादू भगति अगाध॥ ५३ ॥
सनमुख सतगुरु साध सोँ। साईँ सोँ राता॥
दादू प्याला प्रेम का। महारस माता॥ ५४ ॥
साईँ सोँ साँचा रहइ। सतगुरु सोँ सूरा॥
साधू सोँ सनमुख रहइ। सो दादू पूरा॥ ५५ ॥
सतगुरु मिलइ तपाइए। भगति मुकुति भंडार॥
दादू सहजइ देखिए। साहिब की दीदार॥ ५६ ॥
साईँ सतगुरु सेइए। भगति मुकुति फल होइ॥
अमर अभय पद पाइए। काल न लागइ कोइ॥ ५७ ॥
इक लख चंदा आनि धरि। सूरज कोटि मिलाइ॥
दादू गुरु गोबिंद बिन। तौभी तिमिर न जाइ॥ ५८ ॥
अनेक चंद उदय करइ। असंख सूर प्रकास॥
एक निरंजन नावँ बिन। दादू नहीँ उजास॥ ५९ ॥
कधि यह आपा जाइगा। कधि यह बिसरइ और॥
कधि यह सूछिम होइगा। कधि यह पावइ ठौर॥ ६० ॥
बिषम दुहेला जीव को। सतगुरु तेँ आसान॥
जब दरवैँ तब पाइए। नेराही अस्थान॥ ६१ ॥
नैन न देखइ नैन को। अंतर भी कुछ नाहिँ॥
सतगुरु दरपन कर दिया। अरस परस मिलि माहिँ॥ ६२ ॥

घट घट रामहि रतन है । दादू लखइ न कोइ ॥
सतगुरु सबदउ पाइए । सहजेही गम होइ ॥ ६३ ॥
जबही कर दीपक दिया । तब सब सूझन लाग ॥
यों दादू गुरु-ग्यान तें । राम कहत जन जाग ॥ ६४ ॥
मन-माला तहँ फेरिए । दिवस न परसइ रात ॥
तहाँ गुरू बाना दिया । सहजइ जपिए तात ॥ ६५ ॥
मन-माला तहँ फेरिए । प्रीतम बैठे पास ॥
अगम गुरू तें गम भया । पाया नूर निवास ॥ ६६ ॥
मन-माला तहँ फेरिए । आपइ एक अनंत ॥
सहजइ सो सतगुरु मिला । जुग जुग फाग वसंत ॥ ६७ ॥
सतगुरु माला मन दिया । पवन सुरति सो पोइ ॥
बिना हाथ निस दिन जपइ । परम जाप यों होइ ॥ ॥ ६८ ॥
मन फकीर माँहै हुआ । भीतरि लीया भेख ॥
सबद गहइ गुरुदेव का । माँगइ भीख अलेख ॥ ६९ ॥
मन फकीर सतगुरु किया । कहि समझाया ग्यान ॥
निहचल आसन बैठि कर । अकल पुरुस का ध्यान ॥ ७० ॥
मन फकीर जग तें रहा । सतगुरु लीया लाइ ॥
अहनिसि लागा एक सौं । सहज सुरत रस खाइ ॥ ७१ ॥
मन फकीर ऐसे भया । सतगुरु के परसाद ॥
जहँ का था लागा तहाँ । छूटे बाद बिबाद ॥ ७२ ॥
ना घर रहा न बन गया । ना कुछु किया कलेस ॥
दादू मनहीं मन मिला । सतगुरु के उपदेस ॥ ७३ ॥
यह मसीति यह देवहरा । सतगुरु दिया दिखाइ ॥
भीतरि सेवा बंदगी । बाहर काहे जाइ ॥ ७४ ॥
दादू मंझेही चला । मंझे ही उपदेस ॥
बाहर ढूढहिं बावरे । जटा बँधाए केस ॥ ७५ ॥

मन का मस्तक मूँडिए । काम क्रोध के केस ॥
दादू बिषय बिकार सब । सतगुरु के उपदेस ॥ ७६ ॥
दादू परदा भरम का । रहा सकल घट छाइ ॥
गुरु गोबिंद कृपा करइ । सहजेंही मिटि जाइ ॥ ७७ ॥
जिस मत साधू ऊधरे । सो मत लीया सोध ॥
मन लेइ मारग मूल गहि । सतगुरु को परमोध ॥ ७८ ॥
सोई मारग मन गहा । मारग मिलिए जाइ ॥
बेद कुरानउ ना कहा । सो गुरु दिया दिखाइ ॥ ७६ ॥
मन भुअंग यह बिष भरा । निरबिष क्योँहि न होइ ॥
दादु मिला गुरु ग्यानिया । निरबिष कीया सोइ ॥ ८० ॥
एता कीजइ आप तेँ । तन मन उनमन लाइ ॥
पंच समाधी राखिए । दूजा सहज सुभाइ ॥ ८१ ॥
जीव जँजालौँ मढि गया । उलझा नौ मन सूत ॥
कोइ एक सुलझै सावधाँ । गुरु बाहक अवधूत ॥ ८२ ॥
चंचल चहुँ दिसि जात है । गुरु बाहक सेँ बंधि ॥
दादू संगति साधु की । पारब्रह्म सो संधि ॥ ८३ ॥
गुरु अंकुस मानइ नहीँ । उदमद माता अंध ॥
दादू मन चेतइ नहीँ । काल न देखइ कंध ॥ ८४ ॥
मारे बिन मानइ नहीँ । यह मन हरि की आन ॥
ग्यान खडग गुरुदेव का । ता सँग सदा सुजान ॥ ८५ ॥
जहवाँ तेँ मन उठि चलइ । फेरि तहाँ ही राखि ॥
तहँ दादू लय लीन करि । साधु कहहिँ गुरु साखि ॥ ८६ ॥
मनही सेँ मल उपजई । मनही सेँ मल धोइ ॥
सीख चलइ गुरु साधु की । तौ तूँ निर्मल होइ ॥८७॥
कछुवा अपनेँ करि लिए । मन इंद्री निज ठौर ॥
नावँ निरंजन लागि रहु । प्रानइ परिहरि और ॥ ८८ ॥

मन के मत सब खेलई । गुरुमुख बिरला कोइ ॥
दादू मन मानइ नहीँ । सतगुरु का सिख सोइ ॥ ८९ ॥
सब जीवन को मन ठगइ । मन को बिरला कोइ ॥
दादू गुरु के ग्यान सौँ । साइँ सनमुख होइ ॥ ९० ॥
एक सौँ लैलीन होना । सबै सयानप एहु ॥
सतगुरु साधू कहत हैँ । परम तत्त जपि लेहु ॥ ९१ ॥
सतगुरु सबद बिबेक बिन । संजम रहा न जाइ ॥
दादू ग्यान बिचार बिन । बिषय हलाहल खाइ ॥ ९२ ॥
घर घर घट कोल्हू चलइ । अमी महारस जाइ ॥
दादू गुरु के ग्यान बिन । बिषय हलाहल खाइ ॥ ९३ ॥
सतगुरु सबद उलंघि करि । जिन कोई सिख जाइ ॥
दादू पग पग काल है । जहाँ जाइ तहँ खाइ ॥ ९४ ॥
सतगुरु बरजइ सिख करइ । क्योँ करि बंचइ काल ॥
दह दिसि देखत बहि गया । पानी फोरी पाल ॥ ९५ ॥
सतगुरु कहइ सो सिख करइ । सब सिधि कारज होइ ॥
अमर अभय पद पाइए । काल न लागइ कोइ ॥ ९६ ॥
साहिब को भावइ नहीँ । सो हम तेँ जिनि होइ ॥
सतगुरु लाजइ आपना । साधु न मानइ कोइ ॥ ९७ ॥
हैाँ की ठाह रहैाँ कहौ । तन की ठाहर तौन ॥
जी की ठाहर जी कहौ । ग्यान गुरू का पौन ॥ ९८ ॥
पंच सवादी पंच दिसि । पंचे पाँचो बाट ॥
तब लग कहा न कीजिए । गुरू दिखाया घाट ॥ ९९ ॥
दादू पंचो एक मत । पंचोँ पूरा साथ ॥
पंचो मिलि सनमुख भए । पंचो गुरु की बात ॥ १०० ॥
ताता लोहा तिनै सो । क्योँ करि पकडा जाइ ॥
गगन गती सूझइ नहीँ । गुरु नाहिँ बूझइ आइ ॥ १०१ ॥

औगुन गुन करि मानई । सोई सिष्य सुजान ॥
सतगुरु औगुन क्योँ करइ । समझइ सोई सयान ॥ १०२ ॥
सोने सेती बैर क्या । मारइ घन के घाइ ॥
दादू काटि कलंक सब । राखइ कंठ लगाइ ॥ १०३ ॥
पानी माहिँ राखिये । कनक कलंक न जाइ ॥
दादू गुरु के ग्यान सोँ । ताइ अगिनि मेँ बाहि ॥ १०४॥
माहिँ मीठा हेत करि । ऊपर कडुवा राखि ॥
सतगुरु सिख को सीख दे । सब साधोँ की साखि ॥ १०५ ॥
सिष्य भरोसे आपनो । ह्वै बोलै हुसियार ॥
कहैगा सो बहैगा हमहि । पहली करइ पुकार ॥ १०६ ॥
सतगुरु कहइ सो कीजिए । जो तूँ सिष्य सुजान ॥
जहँ लाया तहँ लागि रहु । बूझइ कहा अजान ॥ १०७ ॥
गुरु पहली मनसोँ कहइ । पीछे नैन कि सैन ॥
दादू सिख समझइ नहीँ । कहि समझावइ बैन ॥ १०८ ॥
कहे लखइ सो मानवी । सैन लखइ सो साध ॥
मन की लखइ सो देवता । दादू अगम अगाध ॥ १०९ ॥
कहि कहि मेरी जीभ रह । सुनि सुनि तेरे कान ॥
सतगुरु बपुरा क्या करइ । चेला मूढ अजान ॥ ११० ॥
एक सबद सब कुछु कहा । सतगुरु सिख समझाइ ॥
जहँ लायाँ लागइ नहीँ । फिरि फिरि बूझइ आइ ॥ १११ ॥
ज्ञान लिया सब सीख सुनि । मन का मैल न जाइ ॥
गुरू बिचारा क्या करइ । सिष्य हलाहल खाइ ॥ ११२ ॥
सतगुरु की समझइ नहीँ । अपने उपजइ नाहिँ ॥
तौ दादू क्या कीजिये । बुरी बिथा मन माहिँ ॥ ११३ ॥
गुरु अपंग पग पंख बिन । सिख साखा का भार ॥
दादू खेवट नाउ बिन । क्योँ उतरैंगे पार ॥ ११४ ॥
दादू संसा जीव का । सिख साखा का साल ॥

दूनों को भारी पडी । होगा कौन हवाल ॥ ११५ ॥
अंधे अंधा मिलि चले । दादू बाँधि कतार ॥
कूप पडे हम देखते । अंधे अंधा लार ॥ ११६ ॥
सोधी नहीँ सरीर को । औरों को उपदेस ॥
दादू अचरज देखिया । ये जाँँगे किस देस ॥ ११७ ॥
सोधी नहीँ सरीर को । कहहिँ अगम की बात ॥
जान कहावहिँ बापुरे । आवध लीये हाथ ॥ ११८ ॥
माया माहिँ काढि करि । फिरि माया में दीन्ह ॥
दोऊ जन समुझहिँ नहीँ । एकउ काज न कीन्ह ॥ ११९ ॥
कहइ सो गुरु किस काम का । गहि भरमावइ आन ॥
तत्त बतावइ निर्मला । सो गुरु साध सुजान ॥ १२० ॥
तूँ मेरा है हउँ तेरा । गुरु सिख कीया मंत ॥
दोनों भूले जात हैँ । दादू बिसरा कंत ॥ १२१ ॥
दुहि दुहि पीवइ ग्वाल गुरु । सिख है छेली गाइ ॥
यह अवसर योंही गया । दादू कह समझाइ ॥ १२२ ॥
सिख गारू गुरु ग्वाल है । रच्छा करि करि लेइ ॥
दादू राखइ जतन करि । आनि धनी को देइ ॥ १२३ ॥
झूठे अंधे गुरु घने । भरम दिढावहिँ आइ ॥
दादू साचा गुरु मिलइ । जीव ब्रह्म होइ जाइ ॥ १२४ ॥
झूठे अंधे गुरु घने । बंधे बिषय बिकार ॥
दादू साचा गुरु मिलइ । सनमुख सिरजनहार ॥ १२५ ॥
झूठे अंधे गुरु घने । भरम दिढावहिँ काम ॥
बंधे माया मोह सों । दादू मुख सों राम ॥ १२६ ॥
झूठे अंधे गुरु घने । भटकहिँ घर घर बारि ॥
कारज को सीझहिँ नहीँ । दादू माथे मारि ॥ १२७ ॥
भगत कहावहिँ आप को । भगति न जानहिँ भेव ॥
सपने ही समझहिँ नहीँ । कहाँ बसहिँ गुरुदेव ॥ १२८ ॥

भरम करम जग बंधिया। पंडित दिया भुलाइ॥
दादू सतगुरु ना मिलइ। मारग देइ दिखाइ॥ १२९॥
पंथ बतावइ पाप का। भरम करम बेसास॥
निकट निरंजन जो रहइ। क्योँ न बतावइ तास॥ १३०॥
आपा उरझा उरझिया। दीसइ सब संसार॥
आपा सुरझे सुरझिया। यह गुरु ज्ञान बिचार॥ १३१॥
साधू का अँग निर्मला। तामेँ मल न समाइ॥
परम गुरू परगट कहइ। ता तेँ दादू ताइ॥ १३२॥
राम नाम गुरु सबद सेँ। रे मन पेलि भरम्म॥
निहकरमी सेँ मन मिला। दादू काटि करम्म॥ १३३॥
बिन पाइन का पंथ है। क्योँ करि पहुँचइ प्रान॥
बिकट घाट औघट खरे। माहिँ सिखर असमान॥ १३४॥
मन ताजी चेतनि चढइ। लय की करइ लगाम॥
सबद गुरू का ताजना। पहुँचइ साधु सुजान॥ १३५॥
साधू सुमिरन सो कहा। सुमिरन आया भूल॥
दादू गहि गंभीर गुरु। चेतन आनँद मूल॥ १३६॥
आप स्वारथ सब सगे। प्रान सनेही नाहिँ॥
प्रान सनेही राम हैँ। की साधू कलि माहिँ॥ १३७॥
जेहि मत साधू ऊधरे। सो मत लीया सोध॥
मन लेइ मारग मूल गहि। सतगुरु को परमोध॥ १३८॥
सुख का साथी जगत सब। दुख का नाहीँ कोइ॥
दुख का साथी साइयाँ। दादू सतगुरु होइ॥ १३९॥
सगे हमारे साधु हैँ। सिर पर सिरजनहार॥
दादू सतगुरु सो सगा। दूजा धंध बिकार॥ १४०॥
दादू के दूजा नहीँ। एकै आतमा राम॥
सतगुरु सिर परि साधु सब। प्रेम गती बिस्राम॥ १४१॥

दादू भृंगी कीट ज्यों । सतगुरु सेतीं होइ ॥
आप सरीखे करि लिये । दूजा नाहीं कोइ ॥ १४२ ॥
कच्छप राखइ दृष्टि में । कुंजौ के मन माहिं ॥
सतगुरु राखइ आपना । दूजा कोई नाहिं ॥ १४३ ॥
बच्चों के माता पिता । दूजा नाहीं कोइ ॥
दादू उपजइ भाव सों । सतगुरु के घट होइ ॥ १४४ ॥
एकै सबद अनंत सिख । जब सतगुरु बोलइ ॥
दादू जडे कपाट सब । दे कुंजी खोलइ ॥ १४५ ॥
बिनहीं कीया होइ सब । सनमुख सिरजनहार ॥
दादू करि करि को मरइ । सिख साखा सिर भार ॥ १४६ ॥
सूरज सनमुख आरसी । पावक किया प्रकास ॥
दादू साईं साधु बिचि । सहजहि उपजइ दास ॥ १४७ ॥
पंचौ ये परमोधि ले । इनहीं को उपदेस ॥
यह मन अपने हाथ करि । तौ चेला सब देस ॥ १४८ ॥
दादू सुध बुध आतमा । सतगुरु परसइ आइ ॥
दादू भृंगी कीट ज्यों । देखतही होइ जाइ ॥ १४९ ॥
अमर भये गुरु ज्ञान सों । केते हहिं कलि माहिं ॥
दादू गुरु के ज्ञान बिन । केते मरि मरि जाहिं ॥ १५० ॥
औषधि खाइ न पथ रहइ । बिषम व्याधि क्यों जाइ ॥
दादू रोगी बावरा । दोस बैद को लाइ ॥ १५१ ॥
बैद बिथा कह देखि करि । रोगी रहइ रिसाइ ॥
मन माहैं लीये रहइ । दादू व्याधि न जाइ ॥ १५२ ॥
बैद बिचारा क्या करइ । रोगी रहइ न साच ॥
खाटा मीठा चरपरा । माँगइ मेरा बाच ॥ १५३ ॥
दुर्लभ दरसन साधु का । दुर्लभ गुरु उपदेस ॥
दुर्लभ करना कठिन है । दुर्लभ परस अलेस ॥ १५४ ॥

(दादू अबिचल मंत्र, अमर मंत्र । अखय मंत्र, अभय मंत्र ॥
राम मंत्र निज़सार । सजीवनिमंत्र, सबीरज मंत्र ॥
सुंदरमंत्र, सिरोमनिमंत्र । निर्मलमंत्र निराकार ॥
अलखमंत्र, अकलमंत्र । अगाधमंत्र, अपारमंत्र ॥
अनंत मंत्र राया नूर मंत्र । तेजमंत्र जोतिमंत्र ॥
प्रकासमंत्र परममंत्र पाया । उपदेस दिखाया) १५५ ॥
दादू सबही गुरु किया । पसु पंखी बनराइ ॥
पंच तत्त गुनतीनि में । सबही माहिँ खुदाइ ॥ १५६ ॥
जे पहली सतगुरु कहा । नैनहुँ देखा आइ ॥
अरस परस मिलि एक रस । दादू रहे समाइ ॥ १५७ ॥

इति गुरुदेव को अंग संपूर्णम् ॥ १ ॥

अथ सुमिरन को अंग ।

—:o:—

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरु देवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
एकै अच्छर पीव का । सोई सत करि जानि ॥
राम नाम सतगुरु कहा । दादू सो परवानि ॥ २ ॥
पहली स्रवन दुती रसन । तृतिये हिरदै गाइ ॥
चतुरदसी चिंतन भया । रोम रोम लव लाइ ॥ ३ ॥
दादू नीका नाउँ है । तीन लोक तत सार
राति दिवस रटिबो करी । रे मन इहइ बिचार ॥ ४ ॥
दादू नीका नाउँ है । हरि हिरदै न बिसारि ॥
मूरति मन माहिँ बसइ । सासैँ साँस सँभारि ॥ ५ ॥
सासैँ साँस सँभारता । एक दिन मिलिहइ आइ ॥
सुमिरन पैंडा सहज का । सतगुरु दिया दिखाइ ॥ ६ ॥
दादू नीका नाउँ है । सो तूँ हिरदै राखि ॥
पाखँड परपँच दूरि करि । सुनि साधू जन साखि ॥ ७ ॥
दादू नीका नाउँ है । आप कहइ समझाइ ॥
और अरँभ सब छाडि दे । राम नाम लव लाइ ॥ ८ ॥
रामभजन का सोच क्या । करता होइ सो होइ ॥
दादू राम सँभारिये । फिरि बूझिये न कोइ ॥ ९ ॥
राम तुम्हारे नाउँ बिन । जे मुख निकसइ और ॥
ते अपराधी जीव को । तीनि लोक कत ठौर ॥ १० ॥
छिन छिन राम सँभारता । जे जिव जावत जाउ ॥
आतम के आधार को । नाहीँ आन उपाउ ॥ ११ ॥

एकै महूरत मन रहइ। नाउँ निरंजन पास॥
दादू तबही देखता। सकल करम की नास॥ १२॥
सहजे ही सब होइगा। गुन इंद्री का नास॥
दादू राम सँभारता। कटै करम के पास॥ १३॥
राम नाम गुरु सबद सोँ। रे मन पेलि भरम्म॥
निहकरमी सोँ मन मिला। दादू काटि करम्म॥ १४॥
एक राम के नाउँ बिन। जीव कि जरनि न जाइ॥
दादू केते पचि मुये। करि करि बहुत उपाइ॥ १५॥
एक राम की टेक गहि। दूजा सहज सुभाइ॥
राम नाम छाडइ नहीँ। दूजा आवइ जाइ॥ १६॥
दादू राम अगाध है। परिमिति नाहीँ पार॥
अबरन बरन न जानिये। दादू नाउँअधार॥ १७॥
दादू राम अगाध है। अबिगति लखइ न कोइ॥
निरगुन सरगुन का कहइ। नाउँ बिलंब न होइ॥ १८॥
दादू राम अगाध है। बेहद लखा न जाइ॥
आदि अंत नहिँ जानिये। नाउँ निरंतर गाइ॥ १९॥
दादू राम अगाध है। अकल अगोचर एक॥
दादू नाउँ बिलंबिये। साधू कहहिँ अनेक॥ २०॥
एकै अलह राम हैँ। समरथ साईँ सोइ॥
मैदे के पकवान सब। खाना होइ सो होइ॥ २१॥
सरगुन निरगुन ह्वै रहे। जैसा तैसा लीन्ह॥
हरि सुमिरन लव लाइये। का जानउँ का कीन्ह॥ २२॥
दादू सिरजनहार के। केते नाउँ अनंत॥
चित आवइ सो लीजिये। साधू सुमिरहिँ संत॥ २३॥
प्रान पिंड हमको दिया। अंतरि सेवइ ताहि॥
जो आवइ अवसान सिर। सोई नाउँ सबाहि॥ २४॥

ऐसा कौन अभागिया । कछू दिढावइ और ॥
नाउँ बिना पग धरन को । कहहु कहाँ है ठौर ॥ २५ ॥
निमिष न न्यारा कीजिये । अंतर से उर नाम ॥
कोटि पतित पावन भये । केवल कहता राम ॥ २६ ॥
जो तैं यह जाना नहीं । राम नाम निज सार ॥
फिर पीछे पछितायगा । रे मन मूढ गवाँर ॥ २७ ॥
दादू राम सँभारि ले । जब लग सुखी सरीर ॥
फिर पीछे पछितायगा । तन मन धरइ न धीर ॥ २८ ॥
दुख दरिया संसार है । सुख का सागर राम ॥
सुख सागर चलि जाइये । दादू तजि बे काम ॥ २९ ॥
दरिया यह संसार है । राम नाम निज नाव ॥
दादू ढील न कीजिये । यह अवसर यह दाव ॥ ३० ॥
मेरे संसा को नहीं । जीवन मरन के राम ॥
सपनेहूँ जिनि बीसरइ । मुख हिरदै हरिनाम ॥ ३१ ॥
दादू दुखिया तब लगइ । जब लग नाउँ न लेइ ॥
तबहीं पावन परम सुख । मेरी जीवनि येइ ॥ ३२ ॥
कछु न कहावइ आप को । साईं को सेवइ ॥
दादू दूजा छाडि सब । नाउँ निज लेवइ ॥ ३३ ॥
जे चित चिहुँटइ राम सौं । सुमिरन मन लागइ ॥
दादू आत्मा जीव का । संसा सब भागइ ॥ ३४ ॥
दादू पीव क नाउँ ले । तोर मिटइ सिरसाल ॥
घडी महूरत चालना । कैसी आवइ काल ॥ ३५ ॥
दादू औसर जीव तें । कहा न केवल राम ॥
अंत काल हम कहैंगे । जमबैरी सौं काम ॥ ३६ ॥
ऐसे महँगे मोल के । एक खास जो जाइ ॥
चौदह लोक समान सो । काहे रेत मिलाइ ॥ ३७ ॥
साईं साधु सुजान नर । साईं सेतीं लाइ ॥

साटा सिरजनहार सौं। महँगे मोल बिकाइ ॥ ३८ ॥
जतन करइ नहिँ जीव का। तन मन पवना फेर ॥
दादू महँगे मोल का। होय दो वटि एक सेर ॥ ३९ ॥
रावत राजा राम का। कधि न बिसारी नाउँ ॥
आतम राम संभारिये। तौ बस काया गाउँ ॥ ४० ॥
अह निस सदा सरीर में। हरि चितवत दिन जाइ ॥
प्रेम मगन लयलीन मन। अंतरि गति लव लाइ ॥ ४१ ॥
निमिष एक न्यारा नहीँ। तन मन माँझ समाइ ॥
एक अंग लागा रहइ। ताको काल न खाइ ॥ ४२ ॥
पिंजर पिंड सरीर का। सुवटा सहज समाइ ॥
रमता सेतीँ रमि रहइ। बिमल बिमल जस गाइ ॥ ४३ ॥
अबिनासी सोँ एक हो। निमिष न इत उत जाइ ॥
कहत बिलाई क्या करइ। जे हरि सबद सुनाइ ॥ ४४ ॥
जहाँ रहउ तहँ राम सोँ। भावइ कंदलि जाइ ॥
भावइ गिरि परबत रहउ। भावइ गेह बसाइ ॥ ४५ ॥
भावइ जाइ जलहि रहउ। भावइ सीस नवाइ ॥
जहाँ तहाँ हरि नाउँ सौं। हिरदै हेत लगाइ ॥ ४६ ॥
राम कहे सब रहत हैँ। नख सिख सकल सरीर ॥
राम कहे बिन जात है। समुझउ मनवाँ बीर ॥ ४७ ॥
राम कहे सब रहत है। लाहा मूल सहेत ॥
राम कहे बिन जात है। मूरख मनवाँ चेत ॥ ४८ ॥
राम कहे सब रहत है। आदि अंत लौँ सोइ ॥
राम कहे बिन जात है। यह मन बहुरि न होइ ॥ ४९ ॥
राम कहे सब रहत है। जीव ब्रह्म की लार ॥
राम कहे बिन जात है। रे मन हो हुसियार ॥ ५० ॥
हरि भज काफिर जीव ना। पर उपकार समाइ ॥

दादू मरना तहँ भला । जहँ पसु पंखी खाइ ॥ ५१ ॥
राम सबद मुख ले रहइ । पीछे लागा जाइ ॥
मनसा बाचा कर्मना । तेहि तति सहज समाइ ॥ ५२ ॥
रचि मचि लागे नाउँ सोँ । राते माते होइ ॥
देखइँगे दीदार को । सुख पावइँगे सोइ ॥ ५३ ॥
साईं सबई सब भले । बुरा न कहिये कोइ ॥
सारो माँहइँ सो बुरा । जिस घट नाउँ न होइ ॥ ५४ ॥
दादू जियरा राम बिन । दुखिया येहि संसार ॥
उपजइ बिनसइ खपि मरइ । दुख सुख बारंबार ॥ ५५ ॥
राम नाम रुचि ऊपजइ । लेवइ हित चित लाइ ॥
दादू सोई जीयरा । काहे जमपुर जाइ ॥ ५६ ॥
नीकी बरिया आइ करि । राम जपी लीन्हा ॥
आतम साधन सोधि करि । कारज भल कीन्हा ॥ ५७ ॥
अगम वस्तु जामे पडी । राखी मंझि छिपाइ ॥
छिन छिन सोई सँभारिये । मति वे बीसरि जाइ ॥ ५८ ॥
दादू उज्जल निर्मला । हरि-रँग राता होइ ॥
काहे दादू पचि मरइ । पानी सेतीँ धोइ ॥ ५९ ॥
सरिर सरोबर राम जल । मनहि सजीवन सार ॥
दादू सहजहि सब गये । मन के मैल बिकार ॥ ६० ॥
राम नाम जलं कृत्वा । स्नानं कृत्वा सदा मतिः ॥
तन मन आत्मा निर्मलं । पंच भूपत्वसंगतः ॥ ६१ ॥
उत्तम इंद्री निग्रहं । मुच्यंते माया मनः ॥
परपुरुष पुरातनं । चिंतते सदा मनः ॥ ६२ ॥
दादू सब जग बिष भरा । निरबिष बिरला कोइ ॥
सोई निरबिष होइगा । नावँ निरंजन होइ ॥ ६३ ॥
दादू निरबिष नाउँ सोँ । तन मन सहजहि होइ ॥

राम निरोगा करइगा। दूजा नाहीं कोइ ॥ ६४ ॥
ब्रह्म भगति मन ऊपजइ। माया भगति बिलाइ ॥
दादू निरमल मल गया। ज्यों रबि तिमिर न जाइ ॥ ६५ ॥
दादू बिषय बिकार सों। जब लग मन राता ॥
तब लग चीत न आवई। त्रिभुवनपतिदाता ॥ ६६ ॥
का जानउँ कब होइगा। हरि सुमिरन एक तार ॥
का जानउँ कब छाडिहइ। यह मन बिषय बिकार ॥ ६७ ॥
जो सुमिरन होता नहीं। नहीं सो कीजिअ काम ॥
दादू यह तन यों गया। क्योंकर पाइअ राम ॥ ६८ ॥
राम नाम निज मोहनी। जिन मोहे करतार ॥
सुर नर संकर मुनि जना। ब्रह्मा सृष्टि बिचार ॥ ६९ ॥
राम नाम निज औषधी। काटइ कोटि बिकार ॥
बिषम व्याधि तें ऊबरइ। काया कंचन सार ॥ ७० ॥
निरबिकार निज नाउँ ले। जीवन इहइ उपाइ ॥
दादू क्रित्रिम काल है। ताके निकट न जाइ ॥ ७१ ॥
मन पवना गहि सुरति सों। दादू पावइ स्वाद ॥
सुमिरन माँहइँ सुख घना। छाडि देहु बकवाद ॥ ७२ ॥
नावँ से पीडा लीजिये। प्रेम भगति गुन गाइ ॥
दादू सुमिरन प्रीति सों। हेत सहित लव लाइ ॥ ७३ ॥
प्रान कवँल मुख राम कह। मन पवना मुख राम ॥
दादु सुरति मुख राम कह। ब्रह्म सुरत निज ठाम ॥ ७४ ॥
कहता सुनता राम कह। लेता देता राम ॥
खाता पीता राम कह। आतम कवँल बिस्राम ॥ ७५ ॥
ज्यों जल पइठइ दूध में। ज्यों पानी में लोन ॥
ऐसे आतमराम सों। मन हठ साधइ कोन ॥ ७६ ॥
राम नाम में पैठि करि। राम नाम लव लाइ ॥

यह इकंत त्रयलोक मेँ। अनत काहि को जाइ ॥ ७७ ॥
ना घर भला न बन भला। जहाँ नहीँ निज नाउँ ॥
दादू उनमन मन रहइ। भला त सोई ठाउँ ॥ ७८ ॥
निर्गुणं नामं मई। हिरदइ भाव प्रवर्त्तितम् ॥
भर्म कर्म कलि बिषं। माया मोहं कंपितम् ॥ ७९ ॥
कालं जालं सोचितं। भयानक जम किंकरम् ॥
हार्षं मुदितं सतगुरुं। दाता अविगति-दरसनम् ॥ ८० ॥
सब सुख सरग पताल के। तौलि तराजू बाहि ॥
हरि सुख एक पलक्क का। ता सम कहा न जाइ ॥ ८१ ॥
राम नाम सब कोइ कहइ। कहिबे बहुत बिबेक ॥
एक अनेकौँ फिरि मिले। एक समाना एक ॥ ८२ ॥
अपनी अपनी हद्द मेँ। सब कोइ लेयइ नाउँ ॥
जे लागे बेहद्द सोँ। तिनकी मैँ बलि जाउँ ॥ ८३ ॥
कौन पटंतर दीजिये। दूजा नाहीँ कोइ ॥
राम सरीखा राम है। सुमिरेही सुख होइ ॥ ८४ ॥
अपनी जानउँ आप गति। और न जानउँ कोइ ॥
सुमिरि सुमिरि रस पीजिये। दादू आनँद होइ ॥ ८५ ॥
सब ही बेद पुरान पढ़ि। मेटि नाउँ निरधार ॥
सब कुछ इसहीँ माहिँ है। क्या करिये बिस्तार ॥ ८६ ॥
पढ़ि पढ़ि थाके पंडिता। किनहुँ न पाया पार ॥
कथि कथि थाके मुनिजना। दादू नाहिँ अधार ॥ ८७ ॥
निगमहिँ अगम बिचारिये। तऊ पार नहिँ आवइ ॥
तातैँ सेवक क्या करइ। सुमिरन लव लावइ ॥ ८८ ॥
दादू अलिफ अलाह का। जो पढ़ि जानउ कोइ ॥
कुरान कतेबा इलम सब। पढ़ि करि पूरा होइ ॥ ८९ ॥
दादू यह तन पिंजरा। माहइँ मन सूवा ॥

एक नाउँ अल्लाह का। पढि हाफिज हूवा ॥ ९० ॥
नाउँ लिया तब जानिये। तन मन रहइ समाइ ॥
आदि अंत मधि एक रस। कबहूँ भूलि न जाइ ॥ ९१ ॥
एकइ दसा अनंत की। दूजी दसा न जाइ ॥
आपा भूले आन सब। एकइ रहइ समाइ ॥ ९२ ॥
दादू पीवइ एक रस। बिसरि जाइ सब और ॥
अबिगति यह गति कीजिये। मन राखउ येहि ठौर ॥ ९३ ॥
आतम चेतन कीजिये। प्रेम का रस पीवइ ॥
दादू भूलइ देह गुन। ऐसइ जन जीवइ ॥ ९४ ॥
कहि कहि केते दादू थके। सुनि सुनि कहु क्या लेइ ॥
लोन मिलइ गलि पानियाँ। तासनि चितवा देइ ॥ ९५ ॥
दादू हरि रस पीवता। रती बिलंब न लाइ ॥
बारंबार सँभारिये। मति वै बीसरि जाइ ॥ ९६ ॥
जगत सो सपना होइ गया। चिंतामनि जब जाइ ॥
तबही साँचा होत है। आदि अंति डर लाइ ॥ ९७ ॥
नाउँ न आवइ तब दुखी। आवइ सुख संतोख ॥
दादू सेवक राम का। दूजा हरष न सोक ॥ ९८ ॥
मिलते सब सुख पाइये। बिछुरे बहु दुख होइ ॥
दादू सुख दुख राम का। दूजा नाहीं कोइ ॥ ९९ ॥
दादू हरि का नाउँ जल। मैं मीन ता माहिं ॥
संग सदा आनँद करहिँ। बिछुरत ही मरि जाहिँ ॥ १०० ॥
दादू राम बिसारि करि। जीवइ केहि आधार ॥
ज्यों चातक जल बूँद को। करइ पुकार तुकार ॥ १०१ ॥
यह जीवइ येहि आसरे। सुमिरन के आधार ॥
दादू छिटकइ हाथ तें। हम को वार न पार ॥ १०२ ॥
दादू नाउँ निमित भजइ। गति निमित्त भजि सोइ ॥

सेवा निमित सोई भजइ। सदा सजीवनि होइ॥ १०३॥
राम रसाइन नित चुवइ। हरि हीरा हैं साथ॥
सो धन मेरे साइँयाँ। अलख खजाना हाथ॥ १०४॥
हिरदै राम रहइ जा जन के। ताके ऊना कौन कहइ॥
अठसिधि नवनिधि ताके आगे। सन्मुख ठाढी सदा रहइ॥१०५॥
बंदति तीनि लोक का बपुरा। कैसै दरस लहइ॥
नाउँ निसान सकल जग ऊपरि। दादू देखत रहइ॥ १०६॥
दादू सब जग नीधना। धनवंता नाहिं कोइ॥
सो धनवंता जानिये। राम पदारथ होइ॥ १०७॥
सँगही लागा सब फिरइ। राम नाम के साथ॥
चिंतामनि हिरदै बसइ। सकल पदारथ हाथ॥ १०८॥
दादू आँनँद आतमा। अबिनासी के साथ॥
प्राननाथ हिरदै बसइ। सकल पदारथ हाथ॥ १०९॥
भावइ तहाँ छिपाइये। साँच न छाना होइ॥
सेस रसातल गगन ध्रुव। परगट कहिये सोइ॥ ११०॥
दादू कहँ नारद जना। कहाँ भगत प्रह्लाद॥
परगट तीनउँ लोक में। सकल पुकारइ साध॥ १११॥
कहँ सिव बइठा ध्यान धरि। कहाँ कबीरा नाम॥
सो क्यों छाना होइगा। जो रे कहैगा राम॥ ११२॥
कहाँ लीन सुकदेव था। कहँ पीपा रैदास॥
दादू साँचा क्यों छिपइ। सकल लोक परकास॥ ११३॥
कहँ था गोरख भरथरी। अँनँत सिधों का मंत॥
परगट गोपीचंद है। सत्त कहहिं सब संत॥ ८॥ ११४॥
अगम अगोचर राखिये। करि करि कोटि जतन्न॥
दादू छाना क्यों रहइ। जिस घट राम रतन्न॥ ११५॥
दादू सरग पताल में। साँचा लेवइ नाउँ॥
सकल लोक सिर देखिये। परगट सबही ठाउँ॥ ११६॥

सुमिरन का संसा रहा। पछितावा मन माहिँ॥
दादू मीठा रामरस। सगला पीया नाहिँ॥ ११७॥
दादू जैसा नाउँ था। तैसा लीया नाहिँ॥
हौस रही यह जीव मेँ। पछितावा मन माहिँ॥ ११८॥
दादू सिर करवत बहइ। बिसरइ आतम राम॥
माहिँ कलेजा काटिये। जीवनही विस्राम॥ ११९॥
दादू सिर करवत बहइ। राम रिदै थी जाइ॥
माहिँ कलेजा काटिये। काल दसउ दिसि खाइ॥ १२०॥
दादू सिर करवत बहइ। अंग परस नाहिँ होइ॥
माहिँ कलेजा काटिये। बिथा न जानइ कोइ॥ १२१॥
दादू सिर करवत बहइ। नैनहुँ निरखइ नाहिँ॥
माहिँ कलेजा काटिये। साल रहा मन माहिँ॥ १२२॥
जेता पाप सब जग करइ। नाउँ बिसारे होइ॥
दादू राम सँभारिये। एता डारइ धोइ॥ १२३॥
जबहीँ राम बिसारिये। तबहीँ मोटी मार॥
खंड खंड करि नाखिये। बीज पडइ तेहि बार॥ १२४॥
जबहीँ राम बिसारिये। तबही झंपइ काल॥
सिर ऊपर करवत बहइ। आइ पडइ जमजाल॥ १२५॥
जबहीँ राम बिसारिये। तबहीँ कंध विनास॥
पग पग परलइ पिँड पडइ। प्रानी जाइ निरास॥ १२६॥
जबही राम बिसारिये। तबहीँ हानी होइ॥
प्रान पिंड सरवस गया। सुखी न देखा कोइ॥ १२७॥
साहिब जी के नाउँ माँ। बिरहा पीँड पुकार॥
ताला बेली रावना। दादू है दीदार॥ १२८॥
साहिब जी के नाउँ माँ। भाव भक्ति बेसास॥
लेइ समाधि लागा रहइ। दादू साईँ पास॥ १२९॥

साहिब जी के नाउँ माँ । मति बुधि ज्ञान बिचार ॥
प्रेम प्रीति सतनेह सुख । दादू जोति अपार ॥ १३० ॥
साहिब जी का नाउँ माँ । सब कुछ भरे भँडार ॥
नूरा तेज अनंत है । दादू सिरजनहार ॥ १३१ ॥
जिसमें सब कुछ सो लिया । नीरंजन का नाउँ ॥
दादू हिरदै राखि ले । मैं बलिहारी जाउँ ॥ १३२ ॥

इति सुमिरन का अंग सम्पूर्ण ॥ २ ॥ २७९ ॥

———:o:———

अथ बिरह को अंग।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुर देवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
रतिवंती आरति करइ । राम सनेही आव ॥
दादू अवसर अब मिलइ । यह बिरहिनि का भाव ॥ २ ॥
पीव पुकारइ बिरहिनी । निस दिन रहइ उदास ॥
राम राम दादू कहइ । ताला बेली पास ॥ ३ ॥
मन चित चातक ज्यों रटइ । पिव पिव लागी प्यास ॥
दादू दरसन कारने । पुरवहु मेरी आस ॥ ४ ॥
बिरहिनि दुख का सन कहइ । का सन देइ सँदेस ॥
पंथ निहारत पीव का । बिरहिनि पलटे केस ॥ ५ ॥
बिरहिनि दुख कासन कहइ । जानत है जगदीस ॥
निस दिन हिअरा बिहारिहइ । बिरहा करवत सीस ॥ ६ ॥
बिरहिनि कुरलइ कुंज ज्यों । निस दिन तलफत जाइ ॥
राम सनेही कारनइ । रोवत रैनि बिहाइ ॥ ७ ॥
पासइ बइठा सब सुनउँ । हमकों जाब न देइ ॥
दादू तेरे सिर चढइ । जीव हमारा लेइ ॥ ८ ॥
सब को सुखिया देखिये । दुखिया नाहीं कोइ ॥
दुखिया दादू दास है । ऐन परस नहिं होइ ॥ ९ ॥
साहिब मुख बोलइ नहीं । सेवक फिरइ उदास ॥
यह बेदन जिव में रहइ । दुखिया दादू दास ॥ १० ॥
पिय बिन पल पल जुग भया । कठिन दिवस क्यों जाइ ॥
दादू दुखिया राम बिन । काल रूप सब खाइ ॥ ११ ॥

दादू इस संसार में । मुझ से दुखी न कोइ ॥
पिय मिलने के कारने । मैं जल भरिया रोइ ॥ १२ ॥
ना वह मिलइ न मैं सुखी । कहु क्यों जीवन होइ ॥
जिन मुझ को घायल किया । मेरी दारू सोइ ॥ १३ ॥
जबलागि सुरति मिटइ नहीं । मन निहचल नाहिं होइ ॥
जबलागि पिय परसइ नहीं । बडी बिपति यह मोइ ॥ १४ ॥
राम बिछोही बिरहिनी । फिरि मिलन न पावइ ॥
दादू तलफइ मीन ज्यों । तुझ दया न आवइ ॥ १५ ॥
दरसन कारन बिरहिनी । बैरागिन होवइ ॥
दादू बिरह बियोगिनी । हरि मारग जोहइ ॥ १६ ॥
अति गत आतुर मिलन को । जैसे जल बिन मीन ॥
सो देखइ दीदार को । दादू आतम लीन ॥ १७ ॥
ज्यों अमली चित अमल है सूरे के संग्राम ॥
निरधन के चित धन बसइ । यों दादू मन राम ॥१८॥
ज्यों चातक चित जल बसइ । ज्यों पानी चित मीन ॥
जइसे चंद चकोर है । ऐसइ हरि सों कीन ॥ १९ ॥
ज्यों कुंजर के मन बसइ । अनल पंखि आकास ॥
यों दादू मन राम सों । बैरागी बन बास ॥२०॥
भवँरा लुबधी बास का । मोहा नाद कुरंग ॥
दादू का मन राम सों । दीपक जोति पतंग ॥२१॥
स्रवना राते नाद सों । नैना राते रूप ॥
जिभ्भा राती स्वाद सों । दादू एक अनूप ॥ ॥ २२ ॥
देह पियारी जीव को । निस दिन सेवा माहिं ॥
दादू जीवन मरन लों । कबहूँ छाडइ नाहिं ॥ २३ ॥
देह पियारी जीव को । जीव पियारा देह ॥
दादू हरि रस पाइये । ऐसा होइ सनेह ॥ २४ ॥

दादू हरदम माहिँ दिवान। सेज हमारी पीय है॥
देखउँ सो सुबिहान। इसक हमारी जीय है॥ २५॥
दादू हरदम माहिँ दिवान। कहूँ दरूनैँ दरद सोँ॥
दरद दरूनैँ जाहिँ। जब देखउँ दीदार को॥ २६॥
दादु दरूनैँ दरदवँद। यह दिल दरद न जाइ॥
हम दुखिया दीदार के। मिहरवान दिखलाइ॥ २७॥
मूये पीर पुकारता। वैद न मिलिया आइ॥
दादू थोडी बात थी। जे टुक दरस दिखाइ॥ २८॥
मैँ भिष्यारी माँगता। दरसन देहु दयाल॥
तुम दाता दुख भंजना। मेरी करहु सँभाल॥ २९॥
क्या जीयेँ मैँ जीवना। बिन दरसन बेहाल॥
दादू सोई जीवना। परगट दरसन लाल॥ ३०॥
येहि जग जीवन सो भला। जब लग हिरदय राम॥
राम बिना जो जीवना। सो दादू बे काम॥ ३१॥
दादू कहु दीदार की। साईँ सेतीँ बात॥
कब हरि दरसन देहुगे। यह अवसर चलि जात॥ ३२॥
बिथा तुम्हारे दरस की। मोहि ब्यापइ दिन रात॥
दुखी न कीजे दीन को। दरसन दीजे तात॥ ३३॥
इस हियरे पइ साल। पिय बिन क्योँ नहिँ जाइसी॥
जब देखउँ मेरा लाल। रोम रोम सुख आइसी॥ ३४॥
तूँ है तइस प्रकास करि। अपना आप दिखाइ॥
दादू को दीदार दे। बलि बिलंब नहिँ लाइ॥ ३५॥
पिय जो देखइ मुज्झको। हौँ भी देखउँ पीव॥
हौँ देखउँ देखत मिलइ। तौ सुख पावइ जीव॥ ३६॥
तन मन तुम्ह पर वारनैँ। करि दीजै कइ बार॥
जो ऐसी बिधि पाइये। लीजै सिरजनहार॥ ३७॥

दीन दुनी सादिकइ करउँ । देखन दे दीदार ॥
तन मन भी छिन छिन करउँ । भिस्त दोजग भी वार ॥ ३८ ॥

हम दुखिया दीदार के । दिल पइ दूरि न होइ ॥
भावइ हम को जार दे । होना है सो होइ ॥ ३९ ॥

दादू कहइ जे कुछ दिया । सो सब तुम्हहीँ लेहु ॥
तुम्ह बिन मन मानइ नहीँ । दरस अपाना देहु ॥ ४० ॥

दूजा कुछ मागइ नहीँ । हम को दे दीदार ॥
तूँ है तब लग एक ठग । दादू के दिलदार ॥ ४१ ॥

तूँ है तैसी भगति दे । तूँ है तैसा प्रेम ॥
तूँ है तैसी सुरति दे । तूँ है तैसा खेम ॥४२॥

सदिकइ करउँ सरीर को । बेर बेर बहु भंत ॥
भाव भगति हित प्रेम लेइ । खरा पियारा कंत ॥ ४३ ॥

दादू दरसन की रली । हम को बहुत अपार ॥
क्या जानउँ कबहूँ मिलइ । मेरा प्रान अधार ॥ ४४ ॥

दादू कारन कंत के । खरा दुखी बेहाल ॥
मीरा मेरा मेहर कर । दे दरसन दर हाल ॥ ४५ ॥

ताला बेली प्यास बिन । क्योँ रस पीया जाइ ॥
बिरहा दरसन दरद सोँ । हम को देहु खुदाइ ॥ ४६ ॥

ताला बेली पीर सोँ । बिरहा प्रेम पिआस ॥
दरसन सेतीँ दीजिये । बिलसइ दादू दास ॥ ४७ ॥

हम को अपना आप दे । इस्क मोहब्बत दर्द ॥
सेज सुहाग सुख प्रेम रस । मिलि खेलइँ ला पर्द ॥ ४८ ॥

प्रेम भगति माता रहइ । ताला बेली अंग ॥
सदा सपीडा मन रहइ । राम रमइ उन संग ॥ ४९ ॥

प्रेम मगन रस पाइये । भगति हेत रुचि भाव ॥
बिरह बिथा निज नाउँ सोँ । देव दया करि आव ॥ ५० ॥

गई दसा सब बाहुरइ। जो तुम्ह प्रगटहु आइ॥
दादू ऊजड सब बसइ। दरसन देहु दिखाइ॥ ५१॥
हम कसि के क्या होयगा। बिरद तुम्हारा जाइ॥
पीछे ही पछिताहुगे। तातेँ प्रगटहु आइ॥ ५२॥
मीयाँ भेँडा आठघरि। बाढीवंता लोइ॥
दुःखेडँ हडे गयेहु। मरा बिछोहइ रोइ॥ ५३॥
है सो निधि नहिँ पाइये। नहिँ सोहइ भर पूर॥
दादू मन मानइ नहीँ। तातेँ मरिये झूर॥ ५४॥
जिस घट इस्क अलाह का। तिस घट लोहु न मास॥
दादू जियरे जक नहीँ। सुसकइ साँसइ साँस॥ ५५॥
रती खून बिसरइ मरइ। संभारली सँभालि॥
दादू सुहदा थीर है। आसिक अल्लह नालि॥ ५६॥
दादू आसिक करबदा। सिर भीडे ओहि लाहि॥
अल्लह कारन आप को। सालइ अंदर माँहि॥ ५७॥
भोरैँ भोरैँ तन करहिँ। बडे करहिँ कुरबान॥
मीठा कडुअ न लगई। दादू तौ हू सान॥ ५८॥
जब लग सीस न सौँपिये। तब लग इस्क न होइ॥
आसिक मारे ना मरइ। पिया पियाला सोइ॥ ५६॥
तइडी नोई संभु। जे डीपैँ दीदार के॥
उज्जल हंदी अंभु। पस्साई दुहि पान के॥ ६०॥
बिचौ सभौ दूरी करउ। अंदरि बिया न पाइ॥
दादू राता है फदा। मन माँहीँ बतिलाइ॥ ६१॥
इस्क मुहब्बत मस्त मन। तालिब दर दीदार॥
दोस्ता दिल हर दम रहइ। यादगार हुसियार॥ ६२॥
आसिक एक अलाह के। फारिक दुनियाँ दीन॥
तारिक इस को जूद थे। दादू पाक अकीन॥ ६३॥

आसिकार हक बाज करदा। दिल वजार फतंद॥
अलाह आले नूर दीदम। दिलहि दादू बंद॥ ६४॥
दादू इस्क अवाज सोँ। ऐसे कहइ न कोइ॥
दरद मोहब्बत पाइये। साहिब हासिल होइ॥ ६५॥
कह आसिक अल्लाह के। मारे अपने हाथ॥
कहँ आलम मौजूद सोँ। कहइ जबाँ की बात॥ ६६॥
दादू इस्क अलाह का। कबहूँ प्रगटइ आइ॥
तन मन दिल अरवाह का। सब परदा जरि जाइ॥ ६७॥
अरवाहे सिजदा कुनँद। औजूदरा चिकार॥
दादू नूरा दादनीँ। आसीकाँ दीदार॥ ६८॥
बिरह अगिन तन जारिये। ज्ञान अग्नि दव लाइ॥
दादू नख सिख परजरइ। राम बुझावइ आइ॥ ६९॥
बिरह अगिनि मेँ जारिबा। दरसन के ताईँ॥
दादू आतुर रोइबा। दूजा कुछ नाहीँ॥ ७०॥
साहिब सोँ कछु बल नहीँ। जिनि हठ साधइ कोइ॥
दादू पीर पुकारियें। रोता होइ सो होइ॥ ७१॥
ज्ञान ध्यान सब छाडि दे। जप तप साधन जोग॥
दादू बिरहा ले रहइ। छाडि सकल रस भोग॥ ७२॥
जहाँ बिरह तहँ और क्या। सुधि बुधि नाठइ ज्ञान॥
लोक बेद मारग तजे। दादू एकइ ध्यान॥ ७३॥
बिरही जन जीवइ नहीँ। कोटि कहउ समझाइ॥
दादू गहिलाहै रहइ। तलफि तलफि मरि जाइ॥ ७४॥
दादू तलफइ पीर सोँ। बिरही जन तेरा॥
सुसकै साईँ कारने। मिलि साहिब मेरा॥ ७५॥
पडा पुकारे पीर सोँ। दादू बिरही जन्न॥
राम सनेही चित बसइ। और न भावइ मन्न॥ ७६॥
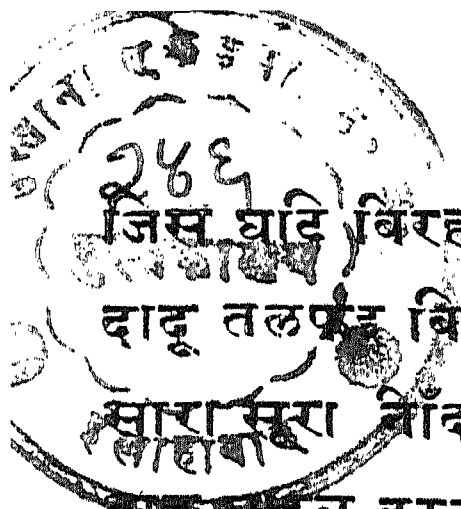
जिस घटि बिरहा राम का । तिस नींदँ न आवइ ॥
दादू तलफइ बिरहिनी । उस पीर जगावइ ॥ ७७ ॥
सारा सूरा नींद भरि । सब कोई सोवइ ॥
दादू घाइल दरदवँद । जागइ अरु रोवइ ॥ ७८ ॥
पीर पुरानी ना पडइ । अंतर बेधा होइ ॥
दादू जीवन मरन लौं । पडा पुकारइ सोइ ॥ ७९ ॥
दादू बिरही पीर सों । पडा पुकारइ मीत ॥
राम बिना जीवइ नहीं । पीय मिलन की चीत ॥ ८० ॥
जो कबहूँ बिरहिनि मरइ । तौ भी बिरही होइ ॥
दादू पिउ पिउ जीवता । मूल भी टेरइ सोइ ॥ ८१ ॥
अपनी पीर पुकारिये । पीर पराई नाहिँ ॥
पीर पुकारइ सो भला । करक करेजे माहिँ ॥ ८२ ॥
ज्यों जीवत मृत कारनौ । गति करि नासइ आप ॥
दादू कारन राम के । बिरही करइ बिलाप ॥ ८३ ॥
तलफि तलफि बिरहिनि मरइ । करि करि बहुत बिलाप ॥
बिरह अगिनि मैं जरि गई । पीय न पूछइ बात ॥ ८४ ॥
कहाँ जाउँ को पुकारऊँ । पीय न पूछइ बात ॥
पिय बिन चैन न आवई । क्यों मरऊँ दिन रात ॥ ८५ ॥
बिरह बियोग न सहि सकउँ । मो पइ सहा न जाइ ॥
कोइ कहउ मेरे पीय को । दरस दिखावइ आइ ॥ ८६ ॥
बिरह बियोग न सहि सकउँ । निस दिन सालइ मोहि ॥
कोइ कहइ मेरे पीय को । कब मुख देखउँ तोहि ॥ ८७ ॥
बिरह बियोग न सहि सकउँ । तन मन धरइ न धीर ॥
कोइ कहइ मेरे पीय को । मेटइ मेरी पीर ॥ ८८ ॥
साधु दुखी संसार में । तुम्ह बिन रहा न जाइ ॥
औरों के आनंद है । सुख से रैनि बिहाइ ॥ ८९ ॥

दादू लायक हम नहीँ। हरि के दरसन जोग ॥
बिन देखे मरि जाहिँगे। पिय के बिरह बियोग ॥ ९० ॥
दादू सुख है साइँ सौँ। और सबइ हो दुक्ख ॥
देखउँ दरसन पीव का। तिसहिँ लागे सुक्ख ॥ ९१ ॥
चंदन सीतल चंद्रमा। जल सीतल सब कोइ ॥
दादू बिरही राम का। इन सौँ कधी न होइ ॥ ९२ ॥
दादू घायल दरदवँद। अंतर करइ पुकार ॥
साइँ सुनइ सब लोक मेँ। दादू यह अधिकार ॥ ९३ ॥
दादू जागइ जगत गुरु। जग सगरा सोवइ ॥
बिरही जागइ पीर सोँ। जो घायल होवइ ॥ ९४ ॥
बिरह अगिनि का दाग दे। जीवत मिरतक गोर ॥
दादू पहिले घर किया। आदि हमारी ठौर ॥ ९५ ॥
देखे का अचरज नहीँ। अनदेखे का होइ ॥
देखे ऊपर दिल नहीँ। अनदेखे को रोइ ॥ ९६ ॥
पहिला आगम बिरह का। पीछइ प्रीति प्रकास ॥
प्रेम मगन लवलीन मन। तहाँ मिलन की आस ॥ ९७ ॥
बिरह बियोगी मन भला। साईँ का बैराग ॥
सहज सँतोखी पाइये। दादू मोटे भाग ॥ ९८ ॥
त्रिखा बिना तन प्रीति न उपजइ। सीत निकट जल धरिया ॥
जनम लगे जीवन मन पीवइ। निर्मल दह दिसि भरिया ॥ ९९ ॥
बुद्धि बिना तन प्रीति न उपजइ। बहुबिधि भोजन नेरा ॥
जनम लगे जिव रती न चाखइ। पाक पूर बहु तेरा ॥ १०० ॥
तपनि बिना तन प्रीति न उपजइ। संगहि सीतल छाया ॥
जनम लगे जिव जानउँ नाहीँ। तरबर त्रिभुवन राया ॥ १०१ ॥
चोट बिना तन प्रीति न उपजइ। ओषध अंग रहंत ॥
जनम लगे जिव पलक न परसइ। बूटी अमर अनंत ॥ १०२ ॥

चोट न लागी बिरह की। पीर न उपजी आइ ॥
जागि न रोये आह दे। सोवत गई बिहाइ ॥ १०३ ॥
दादू पीर न ऊपजी। ना हम करी पुकार ॥
ता तें साहिब ना मिला। दादू जीती बार ॥ १०४ ॥
अंदर पीर न ऊभरइ। बाहर करइ पुकार ॥
दादू सो क्यों करि लहइ। साहिब का दीदार ॥ १०५ ॥
मनहीं माहैं झूरना। रोवइ मनहीं माहिं ॥
मनहीं माहैं आह दे। दादू बाहर नाहिं ॥ १०६ ॥
बिनही नैनन्ह रोवना। बिन मुख पीर पुकार ॥
बिनही हाथ के पीटना। दादू बारंबार ॥ १०७ ॥
प्रीति न उपजइ बिरह बिन। प्रेम भक्ति क्यों होइ ॥
झूठे दादू भाव बिन। कोटि करइ जो कोइ ॥ १०८ ॥
बातों बिरह न ऊपजइ। बातों प्रीति न होइ ॥
बातों प्रेम न पाइये। जिन न पतीजइ कोइ ॥ १०९ ॥
दादू तौ पिय पाइये। कसमल है सो जाइ ॥
निर्मल मन करि आरसी। मूरति माहिं लखाइ ॥ ११० ॥
दादू तौ पिय पाइये। करि मंझे बीलाप ॥
सुनिहै कबहूँ चित्त धरि। परगट होवइ आप ॥ १११ ॥
दादू तौ पिय पाइये। कर साईं की सेव ॥
काया माहिं लखायसी। घटही भीतर देव ॥ ११२ ॥
दादू तौ पिय पाइये। भावइ प्रीति लगाइ ॥
हेजैं हरी बुलाइये। मोहन मंदिर आइ ॥ ११३ ॥
जाके जैसी पीर है। तैसी करइ पुकार ॥
को सूछिम को सहज में। को मिरतक तेहि बार ॥ ११४ ॥
दरदहि बूझइ दरदवँद। जाकी दिल होवइ ॥
क्या जानइ दादू दरद की। नींदँ भरि सोवइ ॥ ११५ ॥

५

दादू लायक हम नहीँ। हरि के दरसन जोग॥
बिन देखे मरि जाहिँगे। पिय के बिरह बियोग॥ ९० ॥
दादू सुख है साइँ सोँ। और सबइ हो दुक्ख॥
देखउँ दरसन पीव का। तिसहीँ लागे सुक्ख॥ ९१ ॥
चंदन सीतल चंद्रमा। जल सीतल सब कोइ॥
दादू बिरही राम का। इन सोँ कधी न होइ॥ ९२ ॥
दादू घायल दरदवँद। अंतर करइ पुकार॥
साइँ सुनइ सब लोक मेँ। दादू यह अधिकार॥ ९३ ॥
दादू जागइ जगत गुरु। जग सगरा सोवइ॥
बिरही जागइ पीर सोँ। जो घायल होवइ॥ ९४ ॥
बिरह अगिनि का दाग दे। जीवत मिरतक गोर॥
दादू पहिले घर किया। आदि हमारी ठौर॥ ९५ ॥
देखे का अचरज नहीँ। अनदेखे का होइ॥
देखे ऊपर दिल नहीँ। अनदेखे को रोइ॥ ९६ ॥
पहिला आगम बिरह का। पीछइ प्रीति प्रकास॥
प्रेम मगन लवलीन मन। तहाँ मिलन की आस॥ ९७ ॥
बिरह बियोगी मन भला। साईँ का बैराग॥
सहज सँतोखी पाइये। दादू मोटे भाग॥ ९८ ॥
त्रिखा बिना तन प्रीति न उपजइ। सीत निकट जल धरिया॥
जनम लगे जीवन मन पीवइ। निर्मल दह दिसि भरिया॥९९॥
बुद्धि बिना तन प्रीति न उपजइ। बहुबिधि भोजन नेरा॥
जनम लगे जिव रती न चाखइ। पाक पूर बहु तेरा॥ १०० ॥
तपनि बिना तन प्रीति न उपजइ। संगहि सीतल छाया॥
जनम लगे जिव जानउँ नाहीँ। तरबर त्रिभुवन राया॥१०१॥
चोट बिना तन प्रीति न उपजइ। ओषध अंग रहंत॥
जनम लगे जिव पलक न परसइ। बूटी अमर अनंत॥ १०२ ॥

चोट न लागी बिरह की । पीर न उपजी आइ ॥
जागि न रोये आह दे । सोवत गई बिहाइ ॥ १०३ ॥
दादू पीर न ऊपजी । ना हम करी पुकार ॥
ता तेँ साहिब ना मिला । दादू जीती बार ॥ १०४ ॥
अंदर पीर न ऊभरइ । बाहर करइ पुकार ॥
दादू सो क्योँ करि लहइ । साहिब का दीदार ॥ १०५ ॥
मनहीँ माहैँ झूरना । रोवइ मनहीँ माहिँ ॥
मनहीँ माहैँ आह दे । दादू बाहर नाहिँ ॥ १०६ ॥
बिनही नैनन्ह रोवना । बिन मुख पीर पुकार ॥
बिनही हाथ के पीटना । दादू बारंबार ॥ १०७ ॥
प्रीति न उपजइ बिरह बिन । प्रेम भक्ति क्योँ होइ ॥
झूठे दादू भाव बिन । कोटि करइ जो कोइ ॥ १०८ ॥
बातोँ बिरह न ऊपजइ । बातोँ प्रीति न होइ ॥
बातोँ प्रेम न पाइये । जिन न पतीजइ कोइ ॥ १०९ ॥
दादू तौ पिय पाइये । कसमल है सो जाइ ॥
निर्मल मन करि आरसी । मूरति माहिँ लखाइ ॥ ११० ॥
दादू तौ पिय पाइये । करि मंझे बीलाप ॥
सुनिहै कबहूँ चित्त धरि । परगट होवइ आप ॥ १११ ॥
दादू तौ पिय पाइये । कर साईँ की सेव ॥
काया माहिँ लखायसी । घटही भीतर देव ॥ ११२ ॥
दादू तौ पिय पाइये । भावइ प्रीति लगाइ ॥
हेजैँ हरी बुलाइये । मोहन मंदिर आइ ॥ ११३ ॥
जाके जैसी पीर है । तैसी करइ पुकार ॥
को सूछिम को सहज मेँ । को मिरतक तेहि बार ॥ ११४ ॥
दरदहि बूझइ दरदवँद । जाकी दिल होवइ ॥
क्या जानइ दादू दरद की । नीदँ भरि सोवइ ॥ ११५ ॥

दादू अच्छर प्रेम का । कोइ पढैगा एक ॥
दादू पुस्तक प्रेम बिन । केते पढै अनेक ॥ ११६ ॥
दादू पाती प्रेम की । बिरला बाँचइ कोइ ॥
बेद पुरान पुस्तक पढइ । प्रेम बिना क्यों होइ ॥ ११७ ॥
जर बिन सर बिन कमान बिन । मारे खैंच के सीस ॥
लागी चोट सरीर में । नख सिख लागइ सीस ॥ ११८ ॥
भल का मारइ भेद सों सालइ मंझि परान ॥
मारनहारा जानिहइ या जिहि लागे बान ॥ ११९ ॥
सो सर हमको मारि ले । जिहि सर मिलिये जाइ ॥
निस दिन मारग देखिये । कबहूँ लागइ आइ ॥ १२० ॥
जेहि लागी सो जानिहइ । बेधा करइ पुकार ॥
दादू पाँजर पीर हइ । सालइ बारंबार ॥ १२१ ॥
बिरही सुसकइ पीर सों । ज्यों घायल रन माहिं ॥
प्रीतम मारे बान भरि । दादू जीवइ नाहिं ॥ १२२ ॥
बिरह जगावइ दरद को । दरद जगावइ जीव ॥
जीव जगावइ सुरति को । पंच पुकारइ पीव ॥ १२३ ॥
दादू मारइ प्रेम सों । बेधे साधु सुजान ॥
मारनहारे को मिले । दादू बिरही बान ॥ १२४ ॥
सहजइ मनसा मन सधइ । सहजइ पवना सोइ ॥
सहजइ पाँचो थिर भये । चोट बिरह की होइ ॥ १२५ ॥
मारनहारा रहि गया । जेहि लागी सो नाहिं ॥
कबहूँ सो दिन होइगा । यह मेरे मन माहिं ॥ १२६ ॥
प्रीतम मारे प्रेम सों । तिन को क्या मारइ ॥
दादू जारे बिरह के । तिन को क्या जारइ ॥ १२७ ॥
दादू परदा पलक का । एता अंतर होइ ॥
दादू बिरही राम बिन । क्यों करि जीवइ सोइ ॥ १२८ ॥

काया माहैं क्यों रहा। बिन देखे दीदार ॥
दादू बिरही बावरा। मरइ नहीं तेहि बार ॥ १२९ ॥
बिन देखे जीवइ नहीं। बिरहे का सहि नान ॥
दादू जीवन जब लगइ। तब लग बिरह न जान ॥ १३० ॥
रोम रोम रस प्यास है। दादू करइ पुकार ॥
राम घटा दिल उमगि करि। बरसहु सिरजनहार ॥ १३१ ॥
प्रीति जो मेरे पीय की। पइठी पंजर माहिँ ॥
रोम रोम पिय पिय करइ। दादू दूसर नाहिँ ॥ १३२ ॥
सब घट स्रवना सुरति सों। सब घट रसना बैन ॥
सब घट नैना होइ रहइ। दादू बिरहा ऐन ॥ १३३ ॥
राति दिवस का रोवना। पहर पलक का नाहिँ ॥
रोवत रोवत मिलि गया। दादू साहिब माहिँ ॥ १३४ ॥
नैन हमारे बावरे। रोवइ नहिँ दिन राति ॥
साईं संग न जागहीं। पिय क्यों पूछइ बात ॥ १३५ ॥
नैनहु नीर न आइया। क्या जानइँ ये रोइ ॥
तइसे हीं करि रोइये। साहिब नैनहु जोइ ॥ १३६ ॥
नैन हमारे ढीठ हैं। नाले नीर न जाहिँ ॥
सूख सरा सहेत वे। करँक भये गलि माहिँ ॥ १३७ ॥
बिरह प्रेम की लहर में। यह मन पंगुल होइ ॥
राम नाम में गलि गया। बूझइ बिरला कोइ ॥ १३८ ॥
बिरह अगिन में जरि गये। मन के मैल बिकार ॥
दादू बिरही पीय का। देखइगा दीदार ॥ १३९ ॥
बिरह अगिन में बरि गये। मन के बिषय बिकार ॥
ताते पंगुल होइ रहा। दादू दर दीदार ॥ १४० ॥
बिरहा आया दरद सों। मीठा लागा राम ॥
काया लागी काल होइ। कडुवे लागे काम ॥ १४१ ॥

राम अकेला रहि गया । तन मन गया बिलाइ ॥
दादू बिरही तब सुखी । दरस परस मिलि जाइ ॥ १४२ ॥
जो हम छाडहिँ राम को । तौ राम न छाडइ ॥
दादू अमली अमल तेँ । मन क्योँ करि काढइ ॥ १४३ ॥
बिरहा पारस जब मिलइ । बिरहिन बिरहा होइ ॥
दादू परसइ बिरहनी । पिय पिय टेरइ सोइ ॥ १४४ ॥
आसिक मासुक होइ गया । इस्क कहावइ सोइ ॥
दादू उस मासूक का । अल्लहि आसिक होइ ॥ १४५ ॥
राम बिरहिनी होइ रहा । बिरहिन होइ गइ राम ॥
दादू बिरहा बापुरा । अइसइ करि गया काम ॥ १४६ ॥
बिरह बिचारा ले गया । दादू हमको आइ ॥
अगम अगोचर राम था । बिरह बिना को जाइ ॥१४७॥
बिरहा बपुरा आइ करि । सोवत जगावइ जीव ॥
दादू अंग लगाइ करि । ले पहुँचावइ पीव ॥ १४८ ॥
बिरहा मेरा मीत है । बिरहा बैरी नाहिँ ॥
बिरहे को बैरी कहइ । सो दादू किस माहिँ ॥ १४९ ॥
इस्क अलाह की जाति है । इस्क अलह का अंग ॥
इस्क अलह आजूद है । इस्क अलह का रंग ॥ १५० ॥
प्रीतम के पग परसिये । मुझ देखन का चाव ॥
तहँ ले सीस नवाइये । जहाँ धरे थे पाव ॥ १५१ ॥
बाट बिरह की सोधि करि । पंथ प्रेम का लेहु ॥
लेइ के मारग जाइये । दूसर पाव न देहु ॥ १५२ ॥
बिरहा बेगा सहज मेँ । आगे पीछे जाइ ॥
थोड़े माहैँ बहुत है । दादू रहु लव लाइ ॥ १५३ ॥
बिरहा बेगा ले मिलइ । ताला बेली पीर ॥
दादू मन घायल भया । सालइ सकल सरीर ॥ १५४ ॥

सबद तुम्हारा ऊजला । चिड़िया क्यों कारी ॥
तुही तुही निस दिन करइ । बिरहा की जारी ॥ १५५ ॥

अज्ञा अपरंपार की । बसि अंबर भरतार ॥
हरे पटंबर पहिर करि । धरती करइ सिंगार ॥
बसुधा सब फूलइ फलइ । पृथिवि अनंत अपार ॥
गगन गरजि जल थल भरे । दादू जयजय कार ॥ १५५ ॥

काला मुह करि काल का । साईं सदा सुकाल ॥
मेघ तुम्हारे घर घनाँ । बरसहु दीनदयाल ॥ १५६ ॥

इति बिरह को अंग सम्पूर्ण ।

अथ परचा को अंग ।

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरु देवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
दादू नीरंतर पिय पाइया । पंखी उनमन जाइ ॥
सप्तो मंडल भेदिया । अष्टे रहा समाइ ॥ २ ॥
नीरंतर पिय पाइयाँ । निगम न पहुँचइ बेद ॥
तेज सरूपी पिय बसइ । बिरला जानइ भेद ॥ ३ ॥
नीरंतर पिय पाइयाँ । तीनि लोक भर पूरि ॥
सब से जो साईं बसइ । लोक बतावइ दूरि ॥ ४ ॥
नीरंतर पिय पाइया । आनँद बारह बास ॥
हंस सों प्रमहँस खेलइँ । सेवक स्वामी पास ॥ ५ ॥
रंग भरि खेलों पीय सों । बाजइ बेन रसाल ॥
अकल पाट बइठा स्वामी । प्रेम पिलावइ लाल ॥ ६ ॥
रँग भरि खेलउँ पीव सों । सेतीं दीनदयाल ॥
निस बासर तहवाँ बसइ । मान सरोबर पाल ॥ ७ ॥
रँग भरि खेलउँ पीय सोँ । कबहुँ न होइ बियोग ॥
आदि पुरुष अंतर मिला । कछु परबले सँजोग ॥ ८ ॥
रँग भरि खेलउँ पीय सोँ । बारह मास बसंत ॥
सेवक सदा अनंद है । जुग जुग देखउँ कंत ॥ ९ ॥
काया अंतर पाइया । भृकुटी केरे तीर ॥
सहजइ आप लखाइया । व्यापा सकल सरीर ॥ १० ॥
काया अंतर पाइया । नीरंतर निरधार ॥
सहजइ आप लखाइयाँ । ऐसा समरथ सार ॥ ११ ॥

काया अंतर पाइया। अनहद बेन बजाइ॥
सहजइ आप लखाइया। सुन मंडल में जाइ॥ १२॥
काया अंतरि पाइया। सब देवन का देव॥
सहजइ आप लखाइया। ऐसा अलख अभेव॥ १३॥
भवँर कवँल रस बेधिया। सुख सरवर रस पीव॥
तहँ हंसा मोती चुँगइ। पिय देखे सुख जीव॥ १४॥
भवँर कवँल रस बेधिया। गहे चरन कर हेत॥
पिय जो परसत ही भया। रोम रोम सब सेत॥ १५॥
भवँर कमल रस बेधियाँ। अनत न भरमइ जाइ॥
तहाँ बास बिलंबिया। मगन भया रस खाइ॥ १६॥
भवँर कवँल रस बेधिया। गही जो पिय की बाट॥
तहाँ दलि भवँरी रहइ। कौन करइ सरचोट॥ १७॥
खोजि तहाँ पिय पाइये। सबद उपन्नइ पास॥
तहाँ एक एकांत है। तहाँ जोति परकास॥ १८॥
खोजि तहाँ पिय पाइये। चंद न ऊगइ सूर॥
नीरंतर निरधार है। तेज रहा भरपूर॥ १९॥
खोजि तहाँ पिय पाइये। बिन जिभ्भा गुन गाइ॥
आदि पुरुष अनलेख है। सहजे रहा समाइ॥ २०॥
दादू खोजि तहाँ पिय पाइये। अजरा अमर उमंग॥
जरा मरन भय भाजसी। राखइ अपने संग॥ २१॥
दादू गाफिल सोवतइ। मंझइ रब्ब निहार॥
मँझेई पिय पान जो। मंझेई सो बिचार॥ २२॥
दादू गाफिल छोडतइ। आहे मंझि अलाह॥
पिरी पान जो पान सइ। लहइ सभोई साव॥ २३॥
दादू गाफिल छोडतइ। आहे मंझि मुकाम॥
दरिगह में दीवान तनि। पसे न बैठौ याम॥ २४॥

दादू गाफिल छोडतइ । अंदर पीरां यस्तु ॥
तखत रबानी बीच मैं । परइ तिनहीं बस्तु ॥ २५ ॥

हरिचिंता मनि चेनता । चिंता चित की जाइ ॥
चिंतामनि चित मैं मिला । दादू रहा लुभाइ ॥ २६ ॥

अपने नैनहुँ आप को । जब आतम देखइ ॥
तहाँ दादू परआतमा । ताही को पेखइ ॥ २७ ॥

बिन रसना बोलिअ जहाँ । अंतरजामी आप ॥
बिन स्रवनहुँ साईं सुनइ । जो कुछ कहिये जाइ ॥ २८ ॥

ज्ञानलहरि जहँ तैं उठइ । बानी का परकास ॥
अनभव जहँ ते ऊपजइ । सबद किया तहँवास ॥
सो घर सदा बिचार का । तहाँ निरंजन बास ॥
तहँ तूँ दादू खोजि ले । ब्रह्म जीव के पास ॥ २९ ॥

जहँ तन मन का मूल है । ऊपजई ओंकार ॥
अनहद सेजा सबद का । आतम करइ बिचार ॥
भाव भगति ले ऊपजइ । सो ठाहर निज सार ॥
तहँ दादू निधि पाइयें । नीरंतर निरधार ॥ ३० ॥

एक ठहर सूझइ सदा । निकट निरंतर ठाउँ ॥
तहाँ निरंजन पूछि ले । अज राउर तेहि नाउँ ॥
साधू जन क्रीडा करइ । सदा सुखी तेहि गाउँ ॥
चलि दादू उस ठउर को । मैं बलिहारी जाउँ ॥ ३१ ॥

दादू यसु यरानि के । येही मंझि कलूब ॥
बैठो आइ के बीचि मैं । प्रान जो हां महबूब ॥ ३२ ॥

नैनहुँ वाला निरख करि । दादू घालइ हाथ ॥
तबहीं पीवइ रामधन । निकट निरंजन नाथ ॥
नैनहुँ बिन सूझइ नहीं । भूला कतहूँ जाइ ॥
दादू धन पीवइ नहीं । आया मूल गवांइ ॥ ३३ ॥

जहँ आतम तहँ राम है । सकल रहा भरपूर ॥
अंतर गति लव लाइ रहु । दादू सेवक सूर ॥ ३४ ॥
पहिले लोचन दीजिये । पीछे ब्रह्म देखाइ ॥
दादू सूझइ सार सब । सुख मे रहइ समाइ ॥ ३५ ॥
अंधे को आनँद हुआ । नैनहुँ सूझन लाग ॥
दरसन देखइ पीय का । दादू मोटे भाग ॥३६॥
महीँ महल बारीक है । गाउँ ठाउँ ना नाउँ ॥
तासोँ मन लागा रहइ । मैँ बलिहारी जाउँ ॥३७ ॥
खेला चाहइ प्रेम रस । आलम आगि लगाइ ॥
दूजे को ठाहर नहीँ । पुहुप न गंध समाइ ॥ ३८ ॥
नाहीँ होइ करि नाउँ ले । कुछ न कहाई रे ॥
साहिब जी की सेज परि । दादू जाई रे ॥३९॥
जहाँ राम तहँ मैँ नहीँ । मैँ तहँ नाहीँ राम ॥
दादु महल बारीक है । दुइ को नाहीँ ठाम ॥४०॥
मैँ नाहीँ तहँ मैँ गया । एकइ दूसर नाहिँ ॥
नाहीँ को ठाहर घनी । दादू निज घर माहिँ ॥४१॥
मैँ नाहीँ तहँ मैँ गया । आगे एक अलाउ ॥
दादू ऐसी बंदगी । दूजा नाहीँ आउ ॥ ४२ ॥
दादू आया जब लगइ । तब लग दूजा होइ ॥
जब आया तब मिटि गया । तब दूजा नहिँ कोइ ॥४३ ।
दादू है को मैँ घना । नाहीँ को कछु नाहिँ ॥
दादू नाहीँ होइ रहु । अपनो साहिब माहिँ ॥४४॥
तीनि सुन्न आकार की । चौथी निर्गुन नावँ ॥
सहजै मन मैँ रमि रहा । जहाँ तहाँ सब ठावँ ॥४५॥
पाँच तत्त्व के पाँच हैँ । आठ तत्त्व के आठ ॥
आठ तत्त्व का एक है । तहाँ निरंजन हाट ॥४६॥

जहँ मन माया ब्रह्म था। गुन इंद्री आकार॥
तहँ मन बिरचइ सब नथइ। रचि रहु सिरजनहार॥४७॥
काया सुन्न पाँच का बासा। आतम सुन्न प्रान परकासा॥
परम सुन्न ब्रह्म सो मेला। आगे दादू आप अकेला॥४८॥
तहँ ही से सब ऊपजे। चंद सुरुज आकास॥
पानि पवन पावक किये। धरती का परकास॥४६॥
काल करम जिव ऊपजे। माया मन घट सास॥
रहता रमता राम है। सहज सुन्न सब पास॥५०॥
सहज सुन्न सब ठौर है। सब घट सबही माहिँ॥
तहाँ निरंजन रम रहा। कोइ गुन व्यापइ नाहिँ॥५१॥
तिस सरवर के तीर। सो हंसा मोती चुँगइ॥
पीवइ नीझर नीर। सोहै हँसा सो सुनइ॥५२॥
तिस सरवर के पार। जप तप संजम कीजिये॥
सन्मुख सिरजनहार। प्रेम पिलावइ पीजिये॥५३॥
तिस सरवर के तीर। संगी सबइ सुहावना॥
बिन कर बाजइ बेन। तहँ जिह्वा ही गावना॥५४॥
तिस सरवर के तीर। चरन कमल चित लाइया॥
आदि निरंजन पीय। तहँ भाग हमारे आइया॥५५॥
सहज सरोवर आतमा। हंसा करइ कलोल॥
सुख सागर सो भर भरा। मुक्ताहल मन मोल॥५६॥
हरि सरवर पुरइन सबइ। जित तित पानी पीव॥
जहाँ तहाँ जल अँचवता। गई तृषा सुख जीव॥५७॥
सुख सागर सो भर भरा। उज्जल निर्मल नीर॥
प्यास बिना पावइ नहीँ। दादू सागर तीर॥५८॥
सुन्न सरोवर हंस मन। मोती आप अनंत॥
दादू चुँगि चुँगि चोँच भरि। ज्योँ जन जीवइ संत॥५९॥

सुन्न सरोवर मीन मन। नीर निरंजन देव॥
दादू यह रस बिलसिये। ऐसा अलख अभेव॥ ६०॥
सुन्न सरोवर मन भवँर। तहाँ कमल करतार॥
दादू परिमल पीजिये। सनमुख सिरजनहार॥ ६१॥
सुन्न सरोवर सहज का। तहँ मर जीवा मन्न॥
दादू चुनि चुनि लेइगा। भीतर राम रतन्न॥ ६२॥
मंझि सरोवर बिमल जल। हंसा केलि कराहिँ॥
मुक्त हंस मुक्ता चुँगइ। तेहि हंसा डर नाहिँ॥ ६३॥
अखँड सरवरा थाह जल। हंसा सरवर न्हाहिँ॥
निरभइ पाया आप घर। अब उडि अंत न जाहिँ॥ ६४॥
दादू दरिया प्रेम का। ता मेँ भूलइ दोइ॥
एक आतम परमातमा। एकमेक रस होइ॥ ६५॥
दादू हिंन दरियाव। मानिक मंझेई॥
टुबी डेई पान मैँ। डिठोहंझेइ॥ ६६॥
परमातम सो आतमा। हंस सरोवर माहिँ॥
मिलि मिलि खेलइ पीय सोँ। दादू दूसर नाहिँ॥ ६७॥
दादू सरबर सहज का। ता मेँ प्रेम तरंग॥
तहँ मन झूलइ आतमा। अपने साईँ संग ६८॥
दादु देखउँ निज पीय को। दूसर देखउँ नाहिँ॥
सबइ दिसा सो सोधि कर। पाया घटही माहिँ॥ ६९॥
दादु देखउँ निज पीय को। और न देखउँ कोइ॥
पूरा देखउँ पीय को। बाहर भीतर सोइ॥ ७०॥
दादु देखउँ निज पीय को। देखत ही दुख जाइ॥
हम तो देखा पीय को। सब मेँ रहा समाइ॥ ७१॥
दादु देखउँ निज पीय को। सोई देखन जोग॥
परगट देखउँ पीय को। कहाँ बतावइ लोग॥ ७२॥

दादू देखु दयाल को । सकल रहा भरपूर ॥
रोम रोम में रमि रहा । तूँ जिन जानइ दूर ॥ ७३ ॥

दादू देखु दयाल को । बाहर भीतर सोइ ॥
सब दिसि देखउँ पीय को । दूसर नाहीं कोइ ॥ ७४ ॥

दादू देखु दयाल को । सनमुख साईं सार ॥
जीधर देखउँ नैन भरि । तीधर सिरजनहार ॥ ७५ ॥

दादू देखु दयाल को । रोकि रहा सब ठौर ॥
घट घट मेरा साइयाँ । तूँ जिनि जानइ और ॥ ७६ ॥

तन मन नाहीं मैं नहीं । नाहिं माया नहिं जीव ॥
दादू एकइ देखिये । दह दिसि मेरा पीव ॥ ७७ ॥

पानी माहैं पइसि कर । देखइ दृष्टि उघार ॥
जला भँवर सब भरि रहा । ऐसा ब्रह्म बिचार ॥ ७८ ॥

सदा लीन आनंद में । सहज रूप सब ठौर ॥
दादू देखइ एक को । दूजा नाहीं और ॥ ७९ ॥

जहँ तहँ साथी संग हइ । मेरे सदा अनंद ॥
नैन बैन हिरदइ रहइ । पूरन परमानंद ॥ ८० ॥

जागत जगपति देखिये । पूरन परमानंद ॥
सोवत भी साईं मिलइ । दादू अतिआनंद ॥ ८१ ॥

दहदिसि दीपक तेज के । बिन बाती बिन तेल ॥
चहुँदिसि सूरज देखिये । दादू अदभुत खेल ॥ ८२ ॥

सूरज कोटि प्रकास हइ । रोम रोम की लार ॥
दादु जाति जगदीस की । अंत आवइ पार ॥ ८३ ॥

ज्यों रबि एक अकास रह । ऐस सकल भरपूर ॥
दादू तेज अनंत है । अल्ला आले नूर ॥ ८४ ॥

सूरज नहिं तहँ सूरज देखे । चाँद नहीं तहाँ चँदा ॥
तारे नहिं तहँ झिलमिलि देखा । दादू अति आनंदा ॥ ८५ ॥

बादल नाहिं तहँ बरसत देखा । सबद नहीं गरजंदा ॥
बीज नहीं तहँ चमकत देखा । दादू परमानंदा ॥ ८६ ॥
जोति चमकइ झिलमिले । तेज पुंज परकास ॥
अमृत झरइ रस पीजिये । अमरबेलि आकास ॥ ८७ ॥
अबिनासी अँग तेज का । अइसा तत्त अनूप ॥
सो हम देखा नैन भरि । सुंदर सहज सरूप ॥ ८८ ॥
परम तेज परगट भया । तहँ मन रहा समाइ ॥
दादू खेलइ पीय सोँ । नहिँ आवइ नहिँ जाइ ॥ ८९ ॥
निराधार निज देखिये । नैनहुँ लागा बंद ॥
तहँ मन खेलइ पीय सोँ । दादू सदा अनंद ॥ ९० ॥
ऐसा एक अनूप फल । बीजा वाको नाहिँ ॥
मीठा निरमल एक रस । दादू नैनहुँ माहिँ ॥ ९१ ॥
हीरे हीरे तेज के । निरखइ तीनो लोइ ॥
कोइ एक देखइ संत जन । और न देखइ कोइ ॥ ९२ ॥
नैन हमारे नूर में । तहाँ रहइ लव लाइ ॥
दादू उस दीदार को । निस दिन निरखत जाइ ॥ ९३ ॥
नैनहुँ आगे देखिये । आतम अंतर सोइ ॥
तेज पुंज सब भरि रहा । झिलिमिलि झिलिमिलि होइ ॥९४॥
अनहद बाजे बाजिये । अमरापुर में बास ॥
जोति सरूपी जगमगइ । को निरखइ निज दास ॥ ९५ ॥
परम तेज तहँ मन रहइ । परम नूर निज देखइ ॥
परम जोति तहँ आतम खेलइ । दादू जीवन लेखइ ॥ ९६ ॥
जरइ सुजोति सरूप है । जरइ सो तेज अनंत ॥
जरइ सो झिलिमिलि नूर है । जरइ सो पुंज रहंत ॥ ९७ ॥
दादू अलख अलाह का । कहु कैसा है नूर ॥
बेहद वाको हद नहीं । सकल रहा भरपूर ॥ ९८ ॥

वार पार नहिँ नूर का। दादू तेज अनंत ॥
कीमति नहिँ करतार की। ऐसा है भगवंत ॥ ६६ ॥
निरसँधि नूर अपार है। तेज पुंज सब माहिँ ॥ ॥
दादू जोति अनंत है। आगे पीछे नाहिँ ॥ १०० ॥
खंड खंड निज ना भया। एकसाँ एकइ नूर ॥
ज्योँ था त्योँही तेज है। जोति रही भरपूर ॥ १०१ ॥
परम तेज परकास है। परम नूर को बास ॥
परम जोति आनंद मेँ। हंसा दादूदास ॥ १०२ ॥
नूर सरीखा नूर है। तेज सरीखा तेज ॥
जोति सरीखी जोति है। दादू खेलइ सेज ॥ १०३ ॥
तेजपुंज की सुंदरी। तेजपुंज का कंत ॥
तेजपुंज की सेज परि। दादू बनेउ बसंत ॥ १०४ ॥
पुहुप प्रेम बरसइ सदा। हरिजन खेलहिँ फाग ॥
ऐसा कउतुक देखिये। दादू मोटे भाग ॥ १०५ ॥
अम्रित धारा देखिये। पारब्रह्म बरसंत ॥
तेजपुंज झिलिमिलि झरइ। साधू जन पीवंत ॥ १०६ ॥
रस ही मेँ रस बरसिहइ। धारा कोटि अनंत ॥
तहँ मन निहचल राखिये। दादू सदा बसंत ॥ १०७ ॥
घन बादल बिन बरसिहइ। नीझर निरमल धार ॥
दादू भीजँइ आतमा। साधू पीवनहार ॥ १०८ ॥
ऐसा अचरज देखिया। बिन घन बरसइ मेह ॥
तहँ चित चातक होइ रहा। दादू अधिक सनेह ॥ १०६ ॥
महारस मीठा पीजिये। अबिगति अलख अनंत ॥
दादू निरमल देखिये। सहजइ सदा झरंत ॥ ११० ॥
कामधेनु दुहि पीजिये। अकिल अनूपम एक ॥
दादू पीवइ प्रेम सोँ। निरमल धार अनेक ॥ १११ ॥

कामधेनु दुहि पीजिये। ता को लखइ न कोइ॥
दादू पिवइ प्यास सोँ। महारस मीठा सोइ॥ ११२॥
कामधेनु दुहि पीजिये। अलख रूप आनंद॥
दादू पीवइ हेत सोँ। सुखमन लागा बंद॥ ११३॥
कामधेनु दुहि पीजिये। अगम अगोचर जाइ॥
दादू पीवइ प्रीति सोँ। तेजपुंज की गाइ॥ ११४॥
कामधेनु करतार है। अम्रित सरवइ सोइ॥
दादू बछरा दूध को। पीवइ तो सुख होइ॥ ११५॥
ऐसी एकइ गाय है। दूहइ बारह मास॥
सदा हमारे संग है। दादू आतम पास॥ ११६॥
तरवर साखा मूल बिन। है धरती पर नाहिँ॥
अबिचल अमर अनंत फल। सोई दादू खाहिँ॥ ११७॥
तरवर साखा मूल बिन। धर अमर न्यारा॥
अबिनासी आनंद फल। दादू का प्यारा॥ ११८॥
तरवर साखा मूल बिन। रज बिरज रहता॥
अजरा अमर अतीत फल। सो दादू गहता॥ ११९॥
तरवर साखा मूल बिन। उतपति परलय नाहिँ॥
रहता रमता राम फल। दादू नैनहुँ माहिँ॥ १२०॥
प्रान तरोबर सुरति जड। ब्रह्म भोगि ता माहिँ॥
रस पीवइ फूलइ फलइ। दादू सूखइ नाहिँ॥ १२१॥
ब्रह्म सुन्न तहँ क्या रहइ। आतम के अस्थान॥
काया अस्थल क्या बसइ। सतगुरु कहहिँ सुजान॥ १२२॥
काया के अस्थल रहइ। राजा पंच प्रधान॥
पचीस प्रकीरति तीन गुन। आपा गरब गुमान॥ १२३॥
आतम के अस्थान हैँ। ज्ञान ध्यान बिसवास॥
सहज सील संतोष सत। भाव भगति निधि पास॥ १२४॥

ब्रह्म सुन्न तहँ ब्रह्म है। नीरंजन निरकार॥
नूर तेज जहँ जोति है। दादू देखनहार॥ १२५॥
मौजूद ख़बर माबूद ख़बर, अरवाह ख़बर वजूद।
मुक़ाम चे चीज हस्त, दादनी सजूद॥ १२६॥

मौजूद मुक़ाम हस्त।

नफ़स गालिब कर क़ाबिज़, गुस्सा मनी पेश।
दुई दरोग़ हिर्स हुज्जत, नाम नेकी नेस्त॥ १२७॥

अरवाह मुक़ाम हस्त।

इश्क इबादत बंदगी, यगाना अखलास।
मेहर मोहब्बत ख़ैर ख़ूबी, नाम नेकी पास॥ १२८॥

माबूद मुक़ामे हस्त।

यके नूर खूब खूबा, दीदनी हैराँ।
अजब-चीज़ खुर्दनी, ख़याल मस्ताँ॥ १२९॥
हैवान आलिम गुमराह ग़ाफ़िल, औव्वल शरीयत पंद।
हलाहल मरा नेकी बदी, दरस दानिशमंद॥ १३०॥
कुल फरीक़ तर्क दुनियाँ, हर रोज़ हर दम याद।
अल्ला आला इश्क़ आशिक़, दार नै फिरियाद॥ १३१॥
आब आतश अर्श कुरसी, सूरते सुबहान।
सिर्र सिफत करदा बूदन्द, मारफत मुक़ाम॥१३२॥
हक्कहासिल नूर दीदम, करारे मकसूद।
दीदार दरिया अरवाह आदम, मौजूदे मौजूद॥ १३३॥
चहार मंज़िल बयां गुफ्तम, दस्तकरदा बूद।
पीरां मुरीदां ख़बर करदा, राहे माबूद॥ १३४॥
पहली प्रान पसू नर कीजै। साच झूठ संसार।
नीति अनीति भला बुरा। सुभ औ असुभ निरधार॥ १३५॥
सब तजि देखि बिचारि करि। मेरा नाहीं कोइ।

अन दिन राते राम सौं । भाव भगति रत होइ ॥ १३६ ॥
अंबर धरती सुरुज ससि । सब ले लावइ अंग ॥
जस कीरति करुना करइ । तन मन लागा अंग ॥ १३७ ॥
परम तेज तहँ मन गया । नैनहुँ देखा आइ ॥
सुख सँतोष पाया घडा । जोतिहि जोति समाइ ॥ १३८ ॥
अर्थ चारि अस्थान का । गुरु सिख कह समझाइ ॥
मारग सिरजनहार का । भाग बडे सो जाइ ॥ १३९ ॥

अरवाहें सिजदा कुनद, वजूदरा चेकार ।
दादू नूर दादनी, आशिक़ां दीदार ॥ १४० ॥
आशिक़ां रा क़बज़ा करदा, दिल व जां रफतन्द ।
अल्ला आला नूर दीदम, दिलहा दादू बंद ॥ १४१ ॥
आशिक़ां मस्तान आलम, खुर्दनी दीदार ।
चन्दे रह चेकार दादू, यार मा दिलदार ॥ १४२ ॥

दादू दया दयाल की । सो क्यों छानी होइ ॥
प्रेम पुलक मुलकत रहइ । सदा सोहागिनि सोइ ॥ १४३ ॥
बिगसि बिगसि दरसन करइ । पुलकि पुलकि रस पान ॥
मगन जलित माता रहइ । अरस परस मिलि प्रान ॥ १४४ ॥
देखि देखि सुमिरन करइ । देखि देखि लवलीन ॥
देखि देखि तन मन बिलइ । देखि देखि चित दीन ॥ १४५ ॥
निरखि निरखि निज नाउँ लेइ । निरखि निरखि रस पीव ॥
निरखि पीय को तब मिलइ । निरखि निरखि सुख जीव ॥ १४६ ॥

तन सों सुमिरन सब करइ । आतम सुमिरन एक ॥
आतम आगइ एक रस । दादू बडा बिबेक ॥ १४७ ॥
माटी के मोकाम का । सब को जानइ जाय ॥
एक आध अरवाह का । बिरला आपइ आय ॥ १४८ ॥
जब लग अस्थल देह का । तब लग सब व्यापइ ॥

निरभय अस्थल आतमा । आगइ रस आपइ ॥ १४६ ॥
नाहीं सुरति सरीर की । बिसरइ सब संसार ॥
आतम जानइ आप को । एक रहा निरधार ॥ १५० ॥
तन सौं सुमिरन कीजिये । जब लग तन नीका ॥
आतम सुमिरन ऊपजइ । तब लागइ फीका ॥
(आगे आपइ आप है । तहाँ क्या जीवका) ॥ १५१ ॥
समदृष्टि देखइ बहुत करि । आतम दृष्टी एक ॥
ब्रह्मदृष्टि परचइ भया । दादू बइठा देख ॥ १५२ ॥
येई नैना देह के । येई आतम होइ ॥
येही नैना ब्रह्म के । दादू पलटइ दोइ ॥ १५३ ॥
घट परचइ सब घट लखइ । प्रान परचइ प्रान ॥
ब्रह्म परचइ पाइये । दादू है हैरान ॥ १५४ ॥
दादू जल पाषान ज्यों । सेवइ सब संसार ॥
पानी नूना ज्यों गलइ । बिरला पूजनहार ॥ १५५ ॥
अलख नाउँ अँतरिक रहइ । सब घट हरि हरि होइ ॥
दादू पानी नून ज्यौं । नावँ कहीजे सोइ ॥ १५६ ॥
छाडइ सुरति सरीर को । तेज पुंज में आइ ॥
दादू ऐसइ मिलि रहइ । ज्यों जल जलहि समाइ ॥ १५७ ॥
सूरति रूप सरीर की । पिय के परसे होइ ॥
दादू तन मन एक रस । सुमिरन कहिये सोइ ॥ १५८ ॥
राम कहत रामहिं रहा । आप विसरजन होइ ॥
मन पवना पाँचो बिलइ । दादू सुमिरन सोइ ॥ १५९ ॥
आतम राम सँभारिये । तहँ दूजा नाहिं और ॥
देही आगे अगम है । दादू सूछिम ठौर ॥ १६० ॥
परमातम में आतमा । ज्यों पानी मे नोन ॥
दादू तन मन एक रस । दूजा कहिये कोन ॥ १६१ ॥

तन मन बिलइ यों कीजिये । ज्यों पानी में नोन ॥
ब्रह्म जीव एकइ भया । दूजा कहिये कोन ॥ १६२ ॥
तन मन बिलइ यों कीजिये । ज्यों घृत लागइ घाम ॥
आतम केवल बंदगी । दादू परगट राम ॥ १६३ ॥
कोमल कवँला पइसि करि । जहाँ न देखइ कोइ ॥
मन थिर सुमिरन कीजिये । दादू दरसन होइ ॥ १६४ ॥
नख सिख सब सुमिरन करइ । ऐसा करिये जाप ॥
अंतर बिगसइ आतमा । दादू प्रगटइ आप ॥ १६५ ॥
अंतर गति हरि हरि करइ । मुख की हाजति नाहिं ॥
सहजइ धुनि लागी रहइ । दादू मन ही माहिं ॥ १६६ ॥
सहजइ सुमिरन होत है । रोम रोम रमि राम ॥
चित्त चहूँटा चित्त सों । यों लीजे हरिनाम ॥ १६७ ॥
दादू सुमिरन सहज का । दीन्हा आप अनंत ॥
अरस परस उस एक सों । खेलइ सदा बसंत ॥ १६८ ॥
सबद अनाहद हम सुना । नख सिख सकल सरीर ॥
सब घटि हरि हरि होत हैं । सहजइ हो मन थीर ॥ १६९ ॥
ओहि दिल लागा एकसाँ । मों को यहाँ है ताति ॥
दादू काम खुदाइ दे । वे ठाडी हैं राति ॥ १७० ॥
माला सब आकार की । साधू सुमिरइ राम ॥
करनी करते क्या किया । ऐसा तेरा नाम ॥ १७१ ॥
सब घट मुख रसना करइ । रटइ राम का नाम ॥
दादू पीवइ राम रस । अगम अगोचर ठाम ॥ १७२ ॥
मन चित अस्थिर कीजिये । नख सिख सुमिरन होइ ॥
स्रवन नेत्र मुख नासिका । पाँचों पूरे सोइ ॥ १७३ ॥
आतम आसन राम का । तहाँ बसइ भगवान ॥
दादू दोनों परसपर । हरि आतम का थान ॥ १७४ ॥

जहाँ राम तहँ संत जन । जहँ साधू तहँ राम ॥
दादू दोनौं एकठे । अरस परस बिस्राम ॥ १७५ ॥
हरि साधू यों पाइये । अबिगति के आराधु ॥
साधू संगति हरि मिलइ । हरि संगति से साधु ॥ १७६ ॥
रामनाम सौं मिलि रहइ । मन के छाड़ि बिकार ॥
दिलही माहैं देखिये । दोनौं का दीदार ॥ १७७ ॥
साधु समाना राम में । राम रहा भरपूर ॥
दादू दोनौं एक रस । क्यौं करि कीजे दूर ॥ १७८ ॥
सेवक साईं का भया । सेवक का सब कोइ ॥
सेवक साईं को मिला । साईं सरीखा होइ ॥ १७९ ॥
मिसिरी माहैं मेलि करि । मोलि बिकाना बंस ॥
यों दादू महँगा भया । परब्रह्म मिलि हंस ॥ १८० ॥
मीठे माहैं राखिये । काहि न मीठा होइ ॥
दादू मीठा हाथ ले । रस पीवइ सब कोइ ॥ १८१ ॥
मीठे सौं मीठा भया । खारे सौं खारा ॥
दादू ऐसा जीव है । यह रंग हमारा ॥ १८२ ॥
मीठे मीठे करि लिये । मीठा माहैं बाहि ॥
दादू मीठा होइ रहा । मीठे माहिं समाइ ॥ १८३ ॥
राम बिना किस काम का । नाहिं कौडी का जीव ॥
साईं सरीखा होइ रहा । दादू परसे पीव ॥ १८४ ॥
हीरा कौडी ना लहइ । मूरख हाथ गवाँर ॥
पाया पारिख जौहिरी । दादू मोल अपार ॥ १८५ ॥
अंधे हीरा परखिया । कीया कौडी मोल ॥
दादू साधू जौहिरी । हीरे मोल न तोल ॥ १८६ ॥
मीरा कीया मेहर सौं । परदे थैला परद ॥
राखि लिया दीदार में । दादू भूला दरद ॥ १८७ ॥

नैन बिन देखिबा अंग बिन पेखबा।
रसन बिन बोलिबा ब्रह्म संती॥
स्रवन बिन सुनबा चरन बिन चलिबा॥
चित बिन चितबा सहज येती॥ १८८॥
दादू देखा एक मन। सो मन सब ही माहिँ॥
तेहि मन सोँ मन मानिया। दूजा भावइ नाहिँ॥ १८६॥
जेहि घट दीपक राम का। तेहि घट तिमिर न होइ॥
उस उँजियारे जोति के। सब जग देखइ सोइ॥ १६०॥
दादू दिल अरवाह का। सो अपना ईमान॥
सोई साबित राखिये। जहँ देखइ रहिमान॥ १६१॥
अल्ला आप इमान है। दादू के दिल माहिँ॥
सोई साबित राखिये। दूजा कोई नाहिँ॥ १६२॥
प्रान पवन ज्योँ पातला। काया करइ कमाइ॥
दादू सब संसार मेँ। क्योँ हू गहा न जाइ॥ १६३॥
नूर तेज ज्योँ जोति है। प्रान पिंड योँ होइ॥
दृष्टि मुष्टि आवइ नहीँ। साहिब के बसि सोइ॥ १२४॥
काया सूछिम करि मिलइ। ऐसा कोई एक॥
दादू आतम ले मिलइ। ऐसा बहुत अनेक॥ १९५॥
आडा आतम तन धरइ। आप रहइ ता माहिँ॥
आपइ खेलइ आप सोँ। जीवन सेतीँ नाहिँ॥ १६६॥
अनुभव तेँ आनँद भया। पाया निरभय नाउँ॥
निहचल निर्मल निर्बान पद। अगम अगोचर ठाउँ॥ १६७॥
अनुभव बानी अगम की। ले गइ संग लगाइ॥
अगह गहइ अगहइ कहइ। भेद अभेद लहाइ॥ १६८॥
जो कुछ बेद कोरान ते। अगम अगोचर बात॥
सो अनुभव साचा कहइ। दादू अकह कहात॥ १६६॥

जब घट अनुभव ऊपजइ। किया करम का नास॥
भय भरमा भागे सबइ। पूरन ब्रह्म प्रकास॥ २००॥
अनुभव काटइ रोग को। अनहद उपजइ आइ॥
साँझइ का जल निर्मला। पीवइ रुचि ल्यलाइ॥ २०१॥
दादू बानी ब्रह्म की। अनुभव घट परकास॥
राम अकेला रहि गया। सबद निरंजन पास॥ २०२॥
कबहूँ समझइ आतमा। दृढ गहि राखइ मूल॥
दादू सोझा रामरस। अम्रित काया कूल॥ २०३॥
मुझ ही माहैं मैं रहूँ। मैं मेरा घरबार॥
मुझ ही माहैं मैं बसूँ। आप कहइ करतार॥ २०४॥
मैं ही मेरा अर्स मैं। मैं ही मेरा थान॥
मैं ही मेरा ठौर मैं। आप कहइ रहिमान॥ २०५॥
मैं ही मेरे आसरे। मैं मेरे आधार॥
मेरे तकिये मैं रहूँ। कहइ को सिरजनहार॥ २०६॥
मैं ही मेरी जाति मैं। मैं ही मेरा अंग॥
मैं ही मेरा जीव मैं। आप कहइ परसंग॥ २०७॥
सबइ दिसा सो सारिखा। सबइ दिसा मुख बैन॥
सबइ दिसा स्रवनहुँ सुनउँ। सबइ दिसा कर नैन॥
सबइ दिसा पग सीस है। सबइ दिसा मन चैन॥
सबइ दिसा सनमुख रहइ। सबइ दिसा अँग पेन॥ २०८॥
बिन स्रवनहुँ सब कुछ सुनइ। बिन नैनहुँ सब देखइ॥
बिन रसना मुख सब कुछ बोलइ। दादू अचरज पेखइ॥२०९॥
सब अँग सब ही ठौर सब। सारंगी सब सार॥
कहइ गहइ देखइ सुनइ। दादू सब दीदार॥ २१०॥
कहइ सब बैर गहइ सब ठौर। रहइ सब ठौर जोति परवानैं
नैन सब ठौर बैन सब ठौर। पेन सब ठौर सोई भल जानैं

सीस सब ठौर स्रवन सब ठौर चरन सब ठौर को यह मानैं ॥
अंग सब ठौर संग सब ठौर। सबइ सब ठौर दादू ध्यानैं ॥२११॥
तेज ही कहना तेज ही गहना । तेज ही रहना सारे ॥
तेज ही बैना तेज ही नैना तेज ही पेन हमारे ॥
तेज ही मेला तेज ही खेला । तेज अकेला तेज ही तेज सँवारे ॥
तेज ही लेवइ तेज ही देवइ । तेज ही खेवइ तेज ही दादू तारे ॥२१२॥
नूर ही का धर नूर ही का घर । नूर ही का बल मेरा ॥
नूर ही मेला नूर ही खेला नूर अकेला नूर ही मंझि बसेरा ॥
नूर ही का अंग नूर ही का संग । नूर ही का रंग नेरा ॥
नूर ही राता नूर ही माता । नूर ही खाता दादू तेरा ॥ २१३ ॥
नूरी दिल अरवाह का । तहाँ बसइ माबूद ॥
तहँ बंदे की बंदगी । जहाँ रहइ मौजूद ॥ २१४ ॥
नूरी दिल अरवाह का । तहँ खालिक भरपूर ॥
आले नूर अलाह का । खिदमतगार हजूर ॥ २१५ ॥
नूरी दिल अरवाह का । तहँ देखा करतार ॥
तहँ सेवक सेवा करइ । अनँत कला रबिसार ॥ २१६ ॥
नूरी दिल अरवाह का । तहाँ निरंजन बास ॥
तहँ जन तेरा एक पग । तेजपुंज परकास ॥ २१७ ॥
तेज कमलदिल नूर का । तहाँ राम रहिमान ॥
तहँ कर सेवा बंदगी । जो तूँ चतुर सयान ॥ २१८ ॥
तहाँ हजूरी बंदगी । नूरी दिल में होइ ॥
तहँ दादू सिजदा करइ । जहाँ न देखइ कोइ ॥ २१९ ॥
ओही माँह दोऊ दिल । एक खाकी एक नूर ॥
खाकी दिल सूझइ नहीं । नूरी मंझि हजूर ॥ २२० ॥
हौद हजूरी दिल ही भीतर । कुसल हमारा सार ॥
आज साजि अलह के आगे । तहाँ निमाजगुजार ॥ २२१ ॥

दादू कायम सीति करि । पंच जमाती मनहीं मुला इमाम ॥
आप अलेख इलाही आगे । तहँ सिजदा करइ सलाम ॥ २२२॥
सब तन तसबी कहइ करीम । ऐसा करि लें जाप ॥
रोज एक दूरि करि दूजा । कलिमा आपइ आप ॥ २२३ ॥
आठ पहर अलह के आगे । एक टक रहिबो ध्यान ॥
आपइ आप अरस के ऊपरि । जहाँ रहइ रहिमान ॥ २२४ ॥
आठ पहर इवावती । जीवन मरन निबाहि ॥
साहिब दरि सेवइ खडा । दादू छाडि न जाइ ॥ २२५ ॥
आठ पहर अरस में । उभोइ आहे ॥
दादू ऐसे तिन के । अला गलहाहे ॥ २२६ ॥
आठ पहर अरस में । बइठ पिरी पसनि ॥
दादू ऐसे तिन के । जे दीदार लहनि ॥ २२७ ॥
आठ पहर अरस में । जिन्हीं रूह रहनि ॥
दादू ऐसे तिन के । गूझ्यों गाल्यों कनि ॥ २२८ ॥
आठ पहर अरस में । लुडंदा आहीन ॥
दादू ऐसे तिन के । आसा खवरि दीन्ह ॥ २२९ ॥
आठ पहर अरस में । बर्जी जेगा हीन ॥
दादू ऐसे तिन के । केते ई आहीन ॥ २३० ॥
प्रेम पिआला नूर का । आसिक भरि दिया ॥
दादू दर दीदार में । मतवाला किया ॥ २३१ ॥
इस्क सलोना आसिका । दरद हते दिया ॥
दरद मुहब्बती प्रेम रस । प्याला भरि पिया ॥ २३२ ॥
दादू दिल दीदार दे । मतवाला किया ॥
जहाँ अरस इलाही आप था । अपना करि लिया ॥ २३३ ॥
दादू प्याला नूर का । आसिक अरस पीवनि ॥
आठ पहर अल्लाह का । मुहदिठे जीवनि ॥ २३४ ॥

आसिक अमली साधु सब । अलख दरीबइ जाइ ॥
साहिब दर दीदार में । सब मिल बइठे आइ ॥ २३५ ॥
राते माते प्रेम रस । भरि भरि देइ खुदाइ ॥
मस्ताँ मालिक करि लिये । दादु रहे लवलाइ ॥ २३६ ॥
भगति निरंजन राम की । अबिचल अबिनासी ॥
सदा सजीवन आतमा । सहजइ परकासी ॥ २३७ ॥
जैसा राम अपार है । तैसा भगति अगाध ॥
इन दोनों की मित नहीं । सकल पुकारइ साधु ॥ २३८ ॥
जैसा अबिगत राम है । तैसा भगति अलेख ॥
इन दोनों की मित नहीं । सहसमुखी कह सेख ॥ २३९ ॥
जैसा निरगुन राम है । भगति निरंजन जानि ॥
इन दोनों की मित नहीं । संत कहहिँ परवानि ॥ २४० ॥
जैसा पूरा राम है । पूरन भगति समान ॥
इन दोनों की मित नहीँ । दादू नाहीँ आन ॥ २४१ ॥
दादू जब लग राम है । तब लग सेवक होइ ॥
अखँडित सेवा एक रस । दादू सेवक सोइ ॥ २४२ ॥
दादू जैसा राम है । तैसा सेवा जानि ॥
पावइगा तब करइगा । दादू सो परवानि ॥ २४३ ॥
साइँ सरीखा सुमिरन कीजइ । साइँ सरीखा गावइ ॥
साइँ सरीखा सेवा कीजइ । तब सेवक सुख पावइ ॥ २४४ ॥
सेवक सेवा करि डरइ । हम ते कछू न होइ ॥
तूँ है तैसी बंदगी । करि नहिँ जानइ कोइ ॥ २४५ ॥
जो साहिब मानइ नहीं । तऊ न छाडइ सेव ॥
यह अवलंबन कीजिये । साहिब अलख अभेव ॥ २४६ ॥
आदि अंत आगे रहइ । एक अनूपम देव ॥
निराकार निज निर्मला । कोइ न जानइ भेव ॥ २४७ ॥

अबिनासी अपरमपरम । वार पार नाहिँ छेव ॥
सो तूँ दादू देखि ले । उर अंतर करि सेव ॥ २४८ ॥
दादू भीतर पइसि करि । घट के जडइ कपाट ॥
साईँ की सेवा करइ । दादू अबिगति घाट ॥ २४६ ॥
घट परचइ सेवा करइ । परतछ देखइ देव ॥
अबिनासी दरसन करइ । दादू पूरी सेव ॥ २५० ॥
पूजनहारे पास हैँ । देहइ माहैँ देव ॥
दादू ता को छाडि करि । बाहर माडी सेव ॥ २५१ ॥
दादू रमता राम सोँ । खेलइ अंतर माहिँ ॥
उलटि समाना आप है । सो सुख कतहूँ नाहिँ ॥ २५२ ॥
परगट खेलइ पीव सोँ । अगम अगोचर ठाउँ ॥
एक पलक का देखना । जीवन मरन क नाउँ ॥ २५३ ॥
आतम माहैँ राम है । पूजा ता की होइ ॥
सेवा बंदन आरती । साधु करइ सब कोइ ॥ २५४ ॥
परचइ सेवा आरती । परचइ भोग लगाइ ॥
दादू उस परसाद की । महिमा कही न जाइ ॥ २५५ ॥
माहिँ निरंजन देव है । माहैँ सेवा होइ ॥
माहिँ उतारइ आरती । दादू सेवक सोइ ॥ २५६ ॥
माहैँ कीजइ आरती । माहैँ पूजा होइ ॥
माहैँ सतगुरु सेइये । बूझइ बिरला कोइ ॥ २५७ ॥
संत उतारइ आरती । तन मन मंगलचार ॥
दादू बाबा बरनई । तुम्ह पर सिरजनहार ॥ २५८ ॥
दादू अबिचल आरती । जुग जुग देव अनंत ॥
सदा अखंडित एक रस । सकल उतारइ संत ॥ २५६ ॥
सत्य राम परमातमा । सुबुधि भौम संतोष थान ॥
मूल मंत्र मन माला । गुरु तिलक संत संजम ॥

सील सुचा ध्यान धोवती। काया कलस प्रेम जल ॥
मनसा मंदिर निरंजन देव। आतमा पाती पुहुप प्रीति ॥
चेतना चंदन नवधा नाउँ। भाव पूजा मति पात्र ॥
सहज समरपन सबद घंटा। आनंद आरती दया प्रसाद ॥
आनंद एक दसा तीरथ सतसंग। दान उपदेस ब्रत सुमिरन ॥
षट गुन ज्ञान अजया जाप। अनुभव आचार मरजादा राम ॥
फल दरसन अभिअंतरि। सदा निरंतर सति सौच दादू ब्रत ते ॥
आतमा उपदेस। अंतरगति पूजा ॥ २६० ॥

पिव सौं खेलउँ प्रेमरस। तउ जिय रेचक होइ ॥
दादू पावइ सेजसुख। परदा नाहीं कोइ ॥ २६१ ॥

सेवक बिसरइ आप कों। सेवा बिसरि न जाइ ॥
दादू पूछइ राम को। सो तत कह समझाइ ॥ २६२ ॥

ज्यौं रसिया रस पीवता। आपा भूलइ और ॥
दादू रहि गा एक रस। पीवत पीवत ठौर ॥ २६३ ॥

जहँ सेवक तहँ साहिबा। सेवक सेवा माहिँ ॥
दादू साँई सब करइ। कोई जानइ नाहिँ ॥ २६४ ॥

सेवक साईं बस किया। सउँपा सब परिवार ॥
तब साहिब सेवा करइ। सेवक के दरबार ॥ २६५ ॥

तेज पुंज को बेलसना। मिलि खेलइ एक ठावँ ॥
भरि भरि पीवइ रामरस। सेवक इसका नावँ ॥ २६६ ॥

अरस परस मिलि खेलिये। तब सुख आनँद होइ ॥
मन मंगल चहुँ दिसि भये। दादू देखइ सोइ ॥ २६७ ॥

मस्तक मेरे पाँव धरि। मंदिर माहैं आव ॥
साईं सोवइ सेज पर। दादू चाँपइ पाँव ॥ २६८ ॥

ये चारो पद पलँग के। साईं की सुखसेज ॥
दादू इन्ह पर बसि करइ। साईं सेतीं हेज ॥ २६९ ॥

प्रेम लहर की पालकी । आतम बइसे आइ ॥
दादू खेलइ पीय सों । यह सुख कहा न जाइ ॥ २७० ॥
देव निरंजन पूजिये । पाती पंच चढाइ ॥
तन मन चंदन राचिये । सेवा सुरति लगाइ ॥ २७१ ॥
भगति भगति सब कोइ कहइ । भगति न जानइ कोइ ॥
दादु भगति भगवंत की । देह निरंतर होइ ॥ २७२ ॥
देही माहैं देव है । सब गुन तें न्यारा ॥
सकल निरंतर भरि रहा । दादू का प्यारा ॥ २७३ ॥
जीव पियारे राम को । पाती पंच चढाइ ॥
तन मन मनसा सउँपि सब । दादू बिलँब न लाइ ॥ २७४ ॥
सबद सुरति लेइ सानि चित । तन मन मनसा माहिं ॥
मति बुधि पाँचो आतमा । दादू अनत न जाहिं ॥ २७५ ॥
तन मन पवना पाँच गहि । ले राखइ निज ठौर ॥
जहाँ अकेला आप है । दूजा नाहीं और ॥ २७६ ॥
यह मन सुरति समेटि करि । पाँच अनूठे आनि ॥
निकट निरंजन लागि रहु । संगि सनेही जानि ॥ २७७ ॥
मन चित मनसा आतमा । सहज सुरति ता माहिं ॥
दादू पाँचो पूरि ले । धरती अंबर नाहिं ॥ २७८ ॥

दादू भींगे प्रेम रस । मन पाँचो के साथ ॥
मगन भये रस में रहइ । सनमुख त्रिभुवननाथ ॥ २७९ ॥
सबदैं सबद समाइ ले । परआतम सोंइ प्रान ॥
यह मन मन सों बाँधि ले । चितइ चित्त सों जान ॥ २८० ॥
सहजइ सहज समाइ ले । ज्ञानइ बाँधा ज्ञान ॥
सूत्रइ सूत्र समाइ ले । ध्यानइ बाँधा ध्यान ॥ २८१ ॥
दृष्टिइ दृष्टि समाइ ले । सुरतइ सुरति समाइ ॥
समझइ समझि समाइ ले । लइ सों ले लइ लाइ ॥ २८२ ॥

भावइ भाव समाइ ले । भगतइ भगति समान ॥
प्रेमइ प्रेम समाइ ले । प्रीति प्रीति रस पान ॥ २८३ ॥
सुरतइ सुरति समाइ रहु । अरु बैनहुँ सोँ बैन ॥
मनहीँ सोँ मन लाइ रहु । अरु नैनहुँ सोँ नैन ॥ २८४ ॥
जहाँ राम तहँ मन गया । मन तहँ नैना जाइ ॥
जहँ नैना तहँ आतमा । दादू सहज समाइ ॥ २८५ ॥
प्रान न खेलइ प्रान सोँ । मन ना खेलइ मन्न ॥
सबद न खेलइ सबद सोँ । दादू राम रतन्न ॥ २८६ ॥
चित्त न खेलइ चित्त सोँ । बैन न खेलइ बैन ॥
नैन न खेलइ नैन सोँ । दादू परगट पेन ॥ २८७ ॥
पाक न खेलइ पाक सोँ । सार न खेलइ सार ॥
खूब न खेलइ खूब सोँ । दादू अंग अपार ॥ २८८ ॥
नूर न खेलइ नूर सोँ । तेज न खेलइ तेज ॥
जोति न खेलइ जोति सोँ । दादू एकइ सेज ॥ २८६ ॥
पंच पदारथ मन रतन । पवना मानिक होइ ॥
आतम हीरा सुरति सोँ । मनसा मोती पोइ ॥ २६० ॥
अजब अनूपम हार है । साइँ सरीखा सोइ ॥
दादू आतम राम लग । जहाँ न देखइ कोइ ॥ २६१ ॥
पाँचो संगी संग ले । आए आकासा ॥
आसन अमर अलेख का । निरगुन निज बासा ॥ २६२ ॥
प्रान पवन मन मगन होइ । संगी सदा निवासा ॥
परचा परम दयाल सोँ । सहजइ सुख दासा ॥ २६३ ॥
प्रान पवन मन मन बसइ । त्रिकुटी के संधि ॥
पाँचो इंद्री पीय सोँ । ले चरनोँ बाँधि ॥ २९४ ॥
प्रान हमारा पीय सोँ । योँ लागा सहिये ॥
पुहुप बास घृत दूध मेँ । अब कासोँ कहिये ॥ २९५ ॥

पाहन लोह बिच बास दे । ऐसे मिलि रहिये ॥
दादू दीनदयाल सोँ । संगहि सुख लहिये ॥ २९६ ॥
ऐसा बड़ा अगाध है । सूछम ऐसा अंग ॥
पुहुप बास तेँ पातला । सदा हमारे संग ॥ २९७ ॥
जब दिल मिला दयाल सोँ । तब अंतर कछु नाहिँ ॥
ज्योँ पाला पानी मिला । त्योँ हरिजन हरि माहिँ ॥ २९८ ॥
जब दिल मिला दयाल सोँ । तब सब परदा दूरि ॥
ऐसे मिलि एकइ भया । दीपक पावक पूरि ॥ २९९ ॥
जब दिल मिला दयाल सोँ । अंतर नाहीँ रेख ॥
नानाबिध बहु भूखना । कनक कसउटी एक ॥ ३०० ॥
जब दिल मिला दयाल सोँ । पलक न परदा कोइ ॥
डार मूल फल बीज मेँ । सब मिलि एकइ होइ ॥ ३०१ ॥
फल पाका बेली तजी । छिटकाया मुख माहिँ ॥
साईँ अपना करि लिया । सो फिरि ऊगइ नाहिँ ॥ ३०२ ॥
कया कटोरा दूध मन । प्रेम प्रीति सोँ पाइ ॥
हरि साहिब बिधि अँचवई । बेगा बार न लाइ ॥ ३०३ ॥
राम जपइ रुचि साधु को । साधु जपइ रुचि राम ॥
दादू दूनोँ एक ठग । यह आरँभ यह काम ॥ ३०४ ॥
ठगा ठगी जीवन मरन । ब्रह्म बराबर होइ ॥
परगट खेलइ पीय सोँ । दादू बिरला कोइ ॥ ३०५ ॥
दादू निवराना रहइ । ब्रह्म सरीखा होइ ॥
लेइ समाधि रस पीजिये । दादू जब लगि दोइ ॥ ३०६ ॥
बे खुद खबर हुसियार वासिद । खुदखबर पैमाल ॥
बे कीमते मस्तान गलताँ । नूर प्याले ख्याल ॥ ३०७ ॥
दादू माता प्रेम का । रस मेँ रहा समाइ ॥
अंत न आवइ जब लगइ । तब लगि पीअत जाइ ॥ ३०८ ॥

पीया तेता सुख भया । बाकी बहु बैराग ॥
ऐसे जन थाकइ नहीँ । दादू उनमन लाग ॥ ३०६ ॥
निकट निरंजन लागि रहु । जब लग अलख अभेव ॥
दादू पीवइ राम रस । निहकामी निज सेव ॥ ३१० ॥
राम रटन छाडइ नहीँ । हरि लेइ लागा जाइ ॥
बीचे ही अटकइ नहीँ । कला कोठि दिखलाइ ॥ ३११ ॥
दादू हरि रस पीयता । कबहूँ अरुचि न होइ ॥
पीवत प्यासा नित नया । पीवनहारा सोइ ॥ ३१२ ॥
जैसे स्रवना दोइ हैँ । ऐसे होहिँ अपार ॥
रामकथा रस पीजिये । दादू बारंबार ॥ ३१३ ॥
जैसे नैना दोइ हैँ । ऐसे होहिँ अनंत ॥
दादू चंद चकोर ज्योँ । रस पीवइ भगवंत ॥ ३१४ ॥
ज्योँ रसना मुख एक है । ऐसे होहिँ अनेक ॥
तौ रस पीवइ सेस ज्योँ । योँ मुख मीठा एक ॥ ३१५ ॥
ज्योँ घट आतम एक है । ऐसे होहिँ असंख ॥
भरि भरि पीवइ रामरस । दादू एकइ अंक ॥ ३१६ ॥
ज्योँ ज्योँ पीवइ रामरस । त्यो त्योँ बढइ पिआस ॥
ऐसा कोई एक है । बिरला दादूदास ॥ ३१७ ॥
राता माता राम का । मतवाला मैमंत ॥
दादू पीवत क्योँ रहइ । जे गुन जाहिँ अनंत ॥ ३१८ ॥
दादू निरमल जोति जल । बरखा बारह मास ॥
तेहि रस राता प्रानियाँ । माता प्रेम पियास ॥ ३१९ ॥
राम राम रस पीजिये । येती रसना होइ ॥
दादू प्यासा प्रेम का । योँ बिन त्रिपिति न होइ ॥ ३२० ॥
तन गृह छाडइ लाज पति । जब रस माता होइ ॥
जब लगि दादू सावधाँ । कधीँ न छाडइ कोइ ॥ ३२१ ॥

अंगन एक कलाल के । मतवाला रस माहिँ ॥
दादू देख नैन भरि । ताकइ दूबिधा नाहिँ ॥ ३२२ ॥
पीवत चेतनि जब लगे । तब लगि लेवइ आइ ॥
माता दादू प्रेम रस । तब काहे को जाइ ॥ ३२३ ॥
दादू अंतर आतमा । पीवइ हरि जल नीर ॥
सउजा सकला लेइ धरइ । निरमल होइ सरीर ॥ ३२४ ॥
दादू मीठा रामरस । एक घोँट करि जाउँ ॥
पुनि ना पीछे को रहइ । हिरदे माहिँ समाउँ ॥ ३२५ ॥
चिडिया चोँच भरि ले गई । नीर निघटि नहिँ जाइ ॥
ऐसा बासन ना किया । दरिया माहिँ समाइ ॥ ३२६ ॥
दादू अमली राम का । रस बिन रहा न जाइ ॥
पलक एक पीवइ नहीँ । तलफि तलफि मरि जाइ ॥३२७॥
दादू राता राम का । पीवइ प्रेम अघाइ ॥
मतवाला दीदार का । माँगइ मुकुति बलाइ ॥ ३२८ ॥
उज्जल भवँरा हरि कवँल । रस रुचि बारहमास ॥
पावइ निरमल बासना । सो दादू निजदास ॥ ३२९ ॥
नैनहुँ सोँ रस पीजिये । दादू सुरति सहेत ॥
तन मन मंगल होत है । हरि सोँ लागा हेत ॥ ३३० ॥
पिवइ पिलावइ रामरस । माता है हुसियार ॥
दादू रस पीवइ घना । औरोँ का उपकार ॥ ३३१ ॥
नाना बिध पिया रामरस । केती भाँति अनेक ॥
दादू बहुत अनेक सोँ । आतम अबिगत एक ॥ ३३२ ॥
परचइ कापइ प्रेमरस । जो कोई पीवइ ॥
मतवाला माता रहइ । योँ दादू जीवइ ॥ ३३३ ॥
परचइ कापइ प्रेमरस । पीवइ हित चित लाइ ॥
मनसा बाचा करमना । दादू काल न खाइ ॥ ३३४ ॥

परचइ पीवइ रामरस । जुग जुग अस्थिर होइ ॥
दादू अबिचल आतमा । काल न लागइ कोइ ॥ ३३५ ॥
परचइ पीवइ रामरस । सो अबिनासी अंग ॥
काल मींच लागइ नहीं । दादू साईं संग ॥ ३३६ ॥
परचइ पीवइ रामरस । सुख में रहइ समाइ ॥
मनसा बाचा करमना । दादू काल न खाइ ॥ ३३७ ॥
परचइ पीवइ रामरस । राता सिरजनहार ॥
दादू कछु व्यापइ नहीं । ते छूटे संसार ॥ ३३८ ॥
अम्रित भोजन रामरस । काहे न बेलसइ खाइ ॥
काल बिचारा क्या करइ । राम हि राम समाइ ॥ ३३९ ॥
जीव अजाविध काल हैं । छेली जाया सोइ ॥
जब कुछ बस नहिं काल का । तब मौतउ का होइ ॥३४०॥
मन ले राखइ पंख है । उनमन चढइ अकास ॥
पग रहि पूरे साच के । रोपि रहा हरि पास ॥ ३४१ ॥
तन मन बिरिछ बबूर का । काटे लागे सूल ॥
दादू माखन होइ गया । काहू का अस्थूल ॥ ३४२ ॥
दादू संसा सबद है । सुनहा संसा मारि ॥
मन मेडक सों मारिये । संका सकल निवारि ॥ ३४३ ॥
दादू गाँछी ज्ञान है । भंजन है सब लोक ॥
राम दूध सब भरि रहा । ऐसा अम्रित पोख ॥ ३४४ ॥
दादू झूठा जीव है । गढिया गोबिंद बैन ॥
मनसा मूँगी पंख सों । सुरुज सरीखे नैन ॥ ३४५ ॥
साईं दीया धन घना । तिसका वार न पार ॥
दादू पाया रामधन । भाव भगति दीदार ॥ ३४६ ॥

इति परचा को अंग संपूर्ण ॥ ४ ॥

——:o:——

अथ जरना को अंग ।

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्बं साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
दादू राखइ रामधन । गरुवा बचन बिचार ॥ २ ॥
मांहि आछा दूक्यों रहइ । मरकट हाथि गंवार ॥ ३ ॥
जिनि आवइ तू रामधन । हृदइ राखि जिनि जाइ ॥
रतन जतन करि राखिये । चिंतामनि चित लाइ ॥ ४ ॥
मनहीं मांहि समझि करि । मनहिं मांहिं समाइ ॥
मनहीं मांहि राखिये । बाहर कहिं न जनाइ ॥ ५ ॥
दादू समझि समाइ रहु । बाहर कहिं न जनाइ ॥
दादू अदभुत देखिया । तहँ को आवइ जाइ ॥ ६ ॥
कहि कहि का दिखलाइये । साईं सब जानै ॥
दादू परगट का कहइ । कछु समझ सयाने ॥ ७ ॥
मनहीं मांहि ऊपजइ । मनहिं मांहिं समाइ ॥
मनहिं मांहि राखिये । बाहर कहिं न जनाइ ॥ ८ ॥
लइ बिचार लागा रहइ । दादू जरता जाइ ॥
कबहूँ पेट न आफरइ । भावइ तेता खाइ ॥ ९ ॥
सांईं सेवक सब जरइ । जेता रस पीया ॥
दादू गूझ गंभीर का । परकास न कीया ॥१०॥
सांईं सेवक सब जरइ । जेती उपजइ आइ ॥
कहि न जनावइ और को । दादू मांहिं समाइ ॥११॥
सांईं सेवक सब जरइ । जे अलख लखावा ॥
दादू राखइ रामधन । जेता कुछ पावा ॥१२॥

सोई सेवक सब जरइ। प्रेम रस खेला॥
दादू सो सुख किस कहइ। जहँ आप अकेला॥१३॥
सोई सेवक सब जरइ। जेता घट परकास॥
दादू सेवक सब लखइ। कहि न जनावइ दास॥१४॥
अजर जरइ रसना झरइ। घट माहिँ समावइ॥
दादू सेवक सो भला। जो कहि न जनावइ॥१५॥
अजर जरइ रसना झरइ। घट अपना भरि लेइ॥
दादू सेवक सो भला। जारइ जान न देइ॥१६॥
अजर जरइ रसना झरइ। जेता सब पीवइ॥
दादू सेवक सो भला। राखइ रस जीवइ॥१७॥
अजर जरइ रसना झरइ। पीवत थाकइ नाहिँ।
दादू सेवक सो भला। भरि राखइ घट माहिँ॥१८॥
जरना जोगी जुग जिवइ। झरना मरि मरि जाइ॥
दादू जोगी गुरुमुखी। सहजै रहइ समाइ॥१६॥
जरनाजोगी जुग रहइ। झरना परलइ होइ॥
दादू जोगी गुरुमुखी। सहज समाना सोइ॥२०॥
जरना जोगी थिर रहइ। झरना घट फूटइ॥
दादू जोगी गुरुमुखी। कालहु ते छूटइ॥२१॥
जरना जोगी जगपती। अबिनासी अवधूत।
दादू जोगी गुरुमुखी। नीरंजन का पूत॥ २२॥
जरइ सो नाथ निरंजन बाबा। जरइ सो अलख अभेव।
जरइ सो जोगी सब का जीवनि। जरइ सो जग में देव॥२३॥
जरइ सो आप उपजावनहारा। जरइ सो जगपति साईं।
जरइ सो अलख अनूप है। जरइ सो मरना नाहीं॥ २४॥
जरइ सो अबिचल राम है। जरइ सो अमर अलेख।
जरइ सो अबिगति आप है। जरइ सो जग में एक॥ २५॥

जरइ सो अविगति आप है । जरइ सो अपरंपार ।
जरइ सो अगम अगाध है । जरइ सो सिरजनहार ॥ २६ ॥
जरइ सो निज निरकार है । जरइ सो निज निरधार ।
जरइ सो निज निरगुनमयी । जरइ सो निज तत सार ॥२७॥
जरइ सो पूरनब्रह्म है । जरइ सो पूरनहार ।
जरइ सो पूरन परमगुरु । जरइ सो प्रान हमार ॥ २८ ॥
जरइ सो जोति सरूप है । जरइ सो तेज अनंत ।
जरइ सो झिलिमिलि नूर है । जरइ सो पुंज रहंत ॥ २९ ॥
जरइ सो परमप्रकास है । जरइ सो परमउजास ।
जरइ सो परमउदोत है । जरइ सो परमबिलास ॥ ३० ॥
जरइ सो परमप्रकार है । जरइ सो परमनिवास ।
जरइ सो परमप्रभास है । जरइ सो परमनिवास ॥ ३१ ॥
एक बोल भूले हरी । कोइ न जाने प्रान ॥
अवगुन मन आनइ नहीं । सब जानइ हरि जान ॥ ३२ ॥
तुम्ह तिन्ह के अवगुन तजे । कारन कवन अगाध ॥
मेरी जरनी देखि करि । मति को सीखइ साध ॥ ३३ ॥
पवना पानी सब पिया । धरती अरु आकास ॥
चंद सूर पावक मिले । पाँचो एक गरास ॥ ३४ ॥
चौदह तीनो लोक सब । ठूँसे साँसइँ साँस ॥
दादू साधू सब जरइ । सतगुरु के बिस्वास ॥ ३५ ॥

इति जरना को अंग संपूरणम् ॥ ९ ॥

———o———

अथ हैरान को अंग।

——:o:——

दादू नमो निरंजनं। नस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥
रतन एक बहु पारिखी। सब मिलि करइ बिचार॥
गूँगे बहिरे बावरे। दादू वार न पार॥ २॥
केते पारिख जौहरी। पंडित ज्ञाता ध्यान॥
जाना जाइ न जानिये। का कहिं कथिये ज्ञान॥ ३॥
केते पारिखी पचि मुये। कीमति कही न जाइ॥
दादू सब हैरान है। गूँगे का गुड खाइ॥ ४॥
सबही ज्ञानी पंडिता। सुर नर रहे उरझाइ॥
दादू गति गोबिंद की। क्यों हीं लखी न जाइ॥ ५॥
जैसा तैसा नावं तुम्हारा। ज्यों है त्यौं कहि साईं॥
आपइ जानइ आप को। तहँ मेरा गम नाहीं॥ ६॥
केते पारिखी अंत न पावहिं। अगम अगोचर माहीं॥
दादू कीमति कोइ न जानइ। खीर नीर की नाईं॥ ७॥
जीव ब्रह्म सेवा करइ। ब्रह्म बराबरि होइ॥
दादू जानइ ब्रह्म को। ब्रह्म सरीखा सोइ॥ ८॥
वार पार कोइ ना लहइ। कीमति लेखा नाहिँ॥
दादू एकइ नूर है। तेज पुंज सब माहिँ॥ ६॥
हस्त पावँ नहिँ सीस मुख। स्रवन नेत्र कहु कैसा॥
दादू सब देखइ सुनइ। कहइ गहइ है ऐसा॥ १०॥
पाया पाया सब कहइ। केतिक देहुँ दिखाइ॥
कीमत कीन्हीं ना कहीं। दादू रहु लव लाइ॥ ११॥

अपना भंजन भरि लिया । वहाँ उताहीं जानि ॥
अपनी अपनी सब कहइ । दादू बिरद बखानि ॥ १२ ॥
पार न देवइ आपना । गोप गूँज मन माहिँ ॥
दादू कोई ना लहइ । केते आवाहिँ जाहिँ ॥ १३ ॥
गूँगे का गुड का कहूँ । मन जानत है खाइ ॥
रामरसायन पीवता । सो सुख कहा न जाइ ॥ १४ ॥
एक जीभ केता कहूँ । पूरनब्रह्म अगाध ॥
वे केते परमित नहीँ । थकित भये सब साध ॥ १५ ॥
दादू मेरा एक मुख । कीरति अनँत अपार
गुन केते परमित नहीँ । रहे बिचारि बिचारि ॥ १६ ॥
सकल सिरोमनि नावँ है । तूँ है तैसा नाहिँ ॥
दादू कोई ना लहइ । केते आवाहिँ जाहिँ ॥ १७ ॥
दादू केते कहि गये । अंत न आवइ ओर ॥
हम हूँ कहते जात हैँ । केते कहिसी होर ॥१८॥
मैँ का जानउँ का कहूँ । उस बेला की बात ॥
का जानो कैसे रहइ । मोपै लखा न जात ॥१९॥
दादू केते चालिगये । थाके बहुत सुजान ॥
बात नावँ ना नीकसा । दादू सब हैरान ॥ २० ॥
ना कहिँ देखा ना सुना । ना कोइ राखनहार ॥
ना कोऊ तीर्थी फिरा । ना उर वार न पार ॥ २१ ॥
नहीँ म्रितक नहिँ जीवता । नहिँ आवइ नहिँ जाइ ॥
नहिँ सूता नहिँ जागता । नहिँ भूखा नहिँ खाइ ॥ २२ ॥
तहाँ चूप ना बोलना । मैँ तैँ नाहीँ कोइ ॥
दादू आपा पर नहीँ । तहाँ एक ना दोइ ॥ २३ ॥
एक कहूँ तो दो रहइ । दोय कहूँ तो एक ॥
योँ दादू हैरान है । ज्योँ है त्योँहीँ देख ॥ २४ ॥

देखि दिवाना होइ गये । दादू खरे सयान ॥
वार पार को ना लहइ । दादू है हैरान ॥ २५ ॥
करनहार जो कुछ किया । सोई हूँ करि जानि ॥
जो तूँ चतुर सयान है । तौ याही परवानि ॥ २६ ॥
जिन्ह मोहन बाजी रची । सो तुम्ह पूछो जाइ ॥
अनेक एक ते क्यों किये । साहिब कहि समुझाइ ॥ २७ ॥
घट परचइ सब घट लखइ । प्रान परचइ प्रान ॥
ब्रह्म परचइ पाइये । दादू है हैरान ॥ २८ ॥
समदृष्टी देखइ बहुत । आतमदृष्टी एक ॥
ब्रह्मदृष्टि परचइ भया । दादू बइठा देख ॥ २९ ॥
एही नैना देह के । एही आतम होइ ॥
एही नैना ब्रह्म के । दादू पलटे दोइ ॥ ३० ॥

इति हैरान को अंग संपूर्णम् ॥ ६ ॥

——:o:——

अथ लय को अंग ।

——:o:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
लय लागी तब जानिये । कबहूँ छूटि न जाइ ॥
जीवत तैं लागी रहइ । मूआ मंझि समाइ ॥ २ ॥
जे नर प्रानी लय गता । सोई गति होइ जाइ ॥
जो नर प्रानी लेइ रता । सहजइ रहइ समाइ ॥ ३ ॥
सब तजि गुन आकार के । निह्चल मन लव लाइ ॥
आतम चेतन प्रेम रस । दादू रहइ समाइ ॥ ४ ॥
तन मन पवना पाँच गहि । नीरंजन लव लाइ ॥
जहँ आतम तहँ आतमा । दादू सहज समाइ ॥ ५ ॥
अरथ अनूपम आप है । और अनर्थ है भाइ ॥
दादू ऐसी जानि करि । तासौं तूँ लव लाइ ॥ ६ ॥
ज्ञान भगति मन मूल गहि । सहज प्रेम लव लाइ ॥
दादू सब आरंभ तजि । जिन काहू सँग जाइ ॥ ७ ॥
जोग समाधि सुख सुरति सौं । सहजइ सहजइ आव ॥
मुकता द्वारा महल का । इहइ भगति का भाव ॥ ८ ॥
सहज सुन्न मन राखिये । इन दोनौं के माहिं ॥
लेइ समाधिरस पीजिये । तहाँ काल भय नाहिं ॥ ९ ॥
बिन पायन का पंथ है । क्योंकर पहुँचइ प्रान ॥
बिकट घाट अवघट खडे । माहिं सिखर असमान ॥
मन ताजी चेतन चढइ । लव की करइ लगाम ॥
सबद गुरू का ताजना । पहुँचइ साधु सुजान ॥ १० ॥

केहि मारग होइ आइया। केहि मारग होइ जाइ॥
दादू कोई ना लहइ। केते करहिं उपाइ॥ ११॥
सूनहिं मारग आइया। सूनहिं मारग जाइ॥
चेतनि पैंडा सुरति का। दादू रहु लव लाइ॥ १२॥
पारब्रह्म पैंडा दिया। सहज सुरत लेइ सार॥
मन का मारग माहिं घर। संगी सिरजनहार॥ १३॥
राम कहइ जिस ज्ञान सों। अम्रित रस पीवइ॥
दादू दूजा छाडि सब। लव लागी जीवइ॥ १४॥
रामरसायन पीवता। जीव ब्रह्म होइ जाइ॥
दादू आतमराम सों। सदा रहइ लव लाइ॥ १५॥
सुरति समाइ सनमुख रहइ। जुग जुग जन पूरा॥
दादू प्यासा प्रेम का। रस पीवइ सूरा॥ १६॥
जहाँ जगतगुरु रहत है। तहाँ जो सुरति समाइ॥
तौ इन नैनहुँ उलटि करि। कौतुक देखइ आइ॥ १७॥
आस पास नाके परी। भीरे उलटो मंझ॥
जित बैठउँ तित मा परी। नीहारी दो हंभ॥ १८॥
उलटि अपूठा आप में। अंतर सोधि सुजान॥
सो ढिग तेरे बावरे। तजि बाहर की बान॥ १९॥
सुरति अपूठी फेरि करि। आतम माहैं आन॥
लागि रहइ गुरुदेव सों। दादू सोई सयान॥ २०॥
जहँ आतम तहँ राम है। सकल रहा भरपूर॥
अंतर गति लव लाइ रहु। दादू सेवक सूर॥ २१॥
अंतर गति लव लाइ रहु। सदा सुरति सौं गाइ॥
यह मन नाचइ मगन होइ। गावइ ताल बजाइ॥ २२॥
दादू गावइ सुरति सों। बानी बाजइ ताल॥
यह मन नाचइ प्रेम सों। आगे दीनदयाल॥ २३॥

सब बातन की एक है । दुनियाँ ते दिल दूर ॥
साईं सेतीं संग करि । सहज सुरति ले पूर ॥ २४ ॥
एक सुरत सों सब रहइ । पाँचो उनमन लागि ॥
अनुभव का उपदेस यह । परम जोग बैराग ॥ २५ ॥
सहजइ सुरति समाइ ले । पारब्रह्म के अंग ॥
दरस परस मिलि एक होइ । सनमुख रहिबा संग ॥ २६ ॥
सुरति सदा सनमुख रहइ । जहाँ तहाँ लवलीन ॥
सहज रूप सुमिरन करइ । निकरम दादू दीन ॥ २७ ॥
सुरति सदा सेवति रहइ । तिनके मोटे भाग ॥
दादू पीवइ रामरस । रहइ निरंजन लाग ॥ २८ ॥
दादू सेवा सुरति सों । प्रेम प्रीति सों लाइ ॥
जहँ अबिनासी देव है । सुरति बिना को जाइ ॥ २९ ॥
जैवइ बरत गगन तें टूटइ । कहाँ धरति कहँ ठाम ॥
लागी सुरति अंग तें छूटइ । साकत जीवइ राम ॥ ३० ॥
सहज जोग सुख में रहइ । दादू निरगुन जानि ॥
गंगा उलटी फेरी करि । जमुना माहैं आनि ॥ ३१ ॥
परआतमा सो आतमा । ज्यों जल उदधि समान ॥
तन मन पानी लोन ज्यों । पावइ पद निरबान ॥ ३२ ॥
मनहीं सों मन सेइये । ज्यों जल जलहि समाइ ॥
आतम चेतन प्रेमरस । दादू रह लव लाइ ॥ ३३ ॥
छाडइ सुरति सरीर को । तेज पुंज में आइ ॥
दादू ऐसे मिलि रहइ । ज्यों जल जलहि समाइ ॥ ३४ ॥
यों मन तजइ सरीर को । ज्यों जागत सोइ जाइ ॥
दादू बिसरइ देखता । सहज सदा लव लाइ ॥ ३५ ॥
जेहि आसन में प्रान था । तेहि आसन लव लाइ ॥
जो कुछ था सोई भया । कछू न ब्यापइ आइ ॥ ३६ ॥

तन मन आपन हाथ करि। ताही सोँ लव लाइ ॥
दादू निरगुन राम सोँ। ज्योँ जल जलहि समाइ ॥ ३७ ॥
अपना मन लागा रहइ। अंत मिलैगा सोइ ॥
दादू जाके मन बसे। ताको दरसन होइ ॥ ३८ ॥
दादू निबहइ त्योँ चलइ। धरि धीरज मन माहिँ ॥
परसइगा पिय एक दिन। दादू थाकइ नाहिँ ॥ ३९ ॥
जब मन मिरतक होइ रहइ। इंद्रीबल भागा ॥
काया के सब गुन तजइ। नीरंजन लागा ॥ ४० ॥
आदि अंत मध एक रस। टूटइ नहिँ धागा ॥
दादू एकइ रहि गया। तब ज्ञानी जागा ॥ ४१ ॥
जब लग सेवक तन धरइ। तब लग दूसर आहि ॥
एक एक होइ मिलि रहइ। तौ रस पीवत जाहि ॥ ४२ ॥
ये दोनोँ ऐसी कहहिँ। कीजै कौन उपाइ ॥
ना मैँ एक न दूसरा। दादू रह लव लाइ ॥ ४३ ॥

इति लय को अंग संपूर्णम् ॥ ७ ॥

——:o:——

अथ निहकरमी पतिव्रता को अंग।

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥

एक तुम्हारइ आसरा। दादू यह बिस्वास॥
राम भरोसा तो रहइ। नहिं करनी की आस॥ २॥

रहनी राजस ऊपजइ। करनी आपा होइ॥
सब तें दादू निर्मला। सुमिरन लागा सोइ॥ ३॥

मन अपना लवलीन करि। करनी सब जंजाल॥
दादू सहजै निर्मला। आपा मेटि सँभाल॥ ४॥

सिद्धि हमारे साइँया। करामाति करतार॥
रिद्धि हमारे राम हैं। अगमा अलख अपार॥ ५॥

तुम्हें अम्हंचा हे गुरू। तुम्हें अम्हंचा ज्ञान॥
तुम्हें अम्हंचा देव सब। तुम्हें अम्हंचा ध्यान॥ ६॥

तुम्हें अम्हंचा पूजा। तुम्हें अम्हंची पाती॥
तुम्हे अम्हंचा तीरथ। तुम्हें अम्हंची जाती॥ ७॥

तुम्हें अम्हंचा गाथा। तुम्हे अम्हंचा भेद॥
तुम्हें अम्हंचा पुरान। तुम्हें अम्हंचा बेद॥ ८॥

तुम्हें अम्हंची जुगुति। तुम्हें अम्हंचा जोग॥
तुम्हें अम्हंचा बैराग। तुम्हें अम्हंचा भोग॥ ९॥

तुम्हें अम्हंची जीवनी। तुम्हें अम्हंचा जप्प॥
तुम्हे अम्हंचा साधना। तुम्हें अम्हंचा तप्प॥ १०॥

तुम्हें अम्हंचा सील। तुम्हें अम्हंचा संतोष॥
तुम्हें अम्हंची मुकुति। तुम्हे अम्हंचा मोष॥ ११॥

तुम्हें अम्हंचा सिव। तुम्हे अम्हंची सकति ॥
तुम्हें अम्हंचा आगम। तुम्हें अम्हंची उकति ॥ १२ ॥
तूँ सति तूँ अबिगति। तूँ अपरंपार ॥
तूँ निराकार। तुम्हंचा नाम ॥
दादू चा बिश्राम। देहु देहु अब बिलँब न राम ॥ १३ ॥
हमरे कुल के सेब हे। सगा न सिरजनहार ॥
जाति हमारी जगतगुरु। परमेस्वर परिवार ॥ १४ ॥
एक संग संसार में। जेहिं हम सिरजे सोइ ॥
मनसा बाचा करमना। और न दूजा कोइ ॥ १५ ॥
साइँ सनमुख जीवना। मरना सनमुख होइ ॥
दादू जीवन मरन का। सोच करइ जिनि कोइ ॥ १६ ॥
राम कहूँ ते जोडिबा। राम कहूँ तें साखी ॥
राम कहूँ तें गाइबा। राम कहूँ तें राखी ॥ १७ ॥
साहिब मिला न सब मिले। भेँटइ भेँटा होइ ॥
साहिब रहा तो सब रहे। नहीं तो नाहीं कोइ ॥ १८ ॥
सब सुख मेरे साइँया। मंगल अति आनंद ॥
दादू साजन सब मिले। भेँटे परमानंद ॥ १९ ॥
दादू रीझइ राम पर। अनत न रीझइ मन्न ॥
मीठा भावइ एक रस। दादू सोई जन्न ॥ २० ॥
मेरे हिरदय हरि बसइ। दूजा नाहीं और ॥
कहउँ कहाँ धों राखिये। नहीं आन को ठौर ॥ २१ ॥
नारायन नैना बसइ। मनहीं मोहनराइ ॥
हिरदय माहिं हर बसइ। आतम एक समाइ ॥ २२ ॥
तन मन मेरा पीव सों। एक सेज सुख सोइ
गहिरा लोक न जानई। पचि पचि आया खोइ ॥ २३ ॥
एक हमारे उर बसइ। दूजा मेला दूरि
दूजा देखत जाइगा। एक रहा भरपूरि ॥ २४ ॥

निहचल का निहचल रहइ । चंचल का चालि जाइ ॥
दादू चंचल छाडि सब । निहचल सोँ लव लाइ ॥ २५ ॥
साहिब रहता सब रहा । साहिब जाता जाइ ॥
दादू साहिब राखिये । दूजा सँग न समाइ ॥ २६ ॥
मन चित मनसा पलक मेँ । साईँ दूरि न होइ ॥
निहकामी निरखइ सदा । दादू जीवन सोइ ॥ २७ ॥
जहाँ नावँ तहँ चाहिये । सदा राम का राज ॥
निर्बिकार तन मन भया । दादू सीझे काज ॥ २८ ॥
जिसकी खूबी खूब सब । सोई खूब सँभारि ॥
दादू सुंदर खूब सोँ । नख सिख साज सँवारि ॥ २९ ॥
पंच अभूषन पीव करि । सोलह सबही ठावँ ॥
सुंदर यह सिंगार करि । लेइ लेइ पिय का नावँ ॥ ३० ॥
यह ब्रत सुंदरि ले रहइ । सदा सोहागिन होइ ॥
दादू भावइ पीय को । तासम और न कोइ ॥ ३१ ॥
साहिब जिव का भावना । कोइ करइ कलि माहिँ ॥
मनसा बाचा करमना । दादू घट घट नाहिँ ॥ ३२ ॥
आज्ञा महँ बैठइ उठइ । आज्ञा आवइ जाइ ॥
आज्ञा महँ लेवइ देवइ । आज्ञा पहिरइ खाइ ॥ ३३ ॥
आज्ञा महँ बाहरि भितरि । आज्ञा रहइ समाइ ॥
आज्ञा महँ मन राखई । दादु रहइ लव लाइ ॥ ३४ ॥
पतिब्रता ग्रिह आपने । करइ खसम की सेव ॥
ज्योँ राखइ त्योँ हीँ रहइ । आज्ञाकारी टेव ॥ ३५ ॥
नीँच ऊँच कुल सुंदरी । सेवा सारी होइ ॥
सोई सोहागिन कीजिये । रूप न पीजइ धोइ ॥ ३६ ॥
तन मन सौँपा राम को । तासन का व्यभिचार ॥
सहज सील संतोष सत । प्रेम भगति लेइ सार ॥ ३७ ॥

परपुरषा सब पहरई। सुंदर देखइ जागि ॥
अपना पीय पिछानि करि। दादू रहिये लागि ॥ ३८ ॥

आन पुरुषहूँ बहु बड़ी। परम पुरुष भरतार ॥
हउँ अबला समझउँ नहीं। तूँ जानइ करतार ॥ ३९ ॥

जिसका तिसको दीजिये। साईं सनमुख आइ ॥
दादू नख सिख सौंपि सब। जिनि यह बंझा जाइ ॥ ४० ॥

दिल साईं सो राखई। दादू सोई सयान ॥
जो दिल बाटइ आपनी। सो सब मूढ अजान ॥ ४१ ॥

साईं सो दिल तोरि करि। साईं सों जोरइ ॥
साईं सेतीं जोरि करि। काहे को तोरइ ॥ ४२ ॥

साहिब देवइ राखना। सेवक दिल चोर ॥
दादू सब धन साहु का। भूला मन थोर ॥ ४३ ॥

मनसा बाचा करमना। अंतर आवइ एक ॥
ताको परतछ राम जी। बातैं और अनेक ॥ ४४ ॥

मनसा बाचा करमना। हिरदे हरि का भाव ॥
अलख पुरुष आगे खडा। ताके त्रिभुवनराव ॥ ४५ ॥

मनसा बाचा करमना। हरि ही सोँ हित होइ ॥
साहिब सनमुख संग है। आदि निरंजन सोइ ॥ ४६ ॥

मनसा बाचा करमना। आतुर कारन राम ॥
समरथ साईं सब करइ। परगट पूरे काम ॥ ४७ ॥

नारी पुरुषा देखि करि। पुरुषा नारी होइ ॥
दादू सेवक राम का। सीलवंत है सोइ ॥ ४८ ॥

परपुरुषा रति बाँझनी। जानइ जो फल होइ ॥
जनम बिगोवइ आपना। दादू निहफल सोइ ॥ ४९ ॥

दादू तजि भरतार को। परपुरुषा रति होइ ॥
ऐसी सेवा सब करइ। राम न जानइ सोइ ॥ ५० ॥

नारी सेवक तब लगइ । जब लग साईं पास ॥
दादू परसइ आन को । ताकी कैसी आस ॥ ५१ ॥
दादू नारी पुरुष को । जानइ जो बस्स होइ ॥
पिय की सेवा ना करइ । कामिनि नारी सोइ ॥ ५२ ॥
काया मन का भावना । मेटी आज्ञाकार ॥
क्या ले मुख दिखलाइये । दादू उस भरतार ॥ ५३ ॥
करामाल अकलंक है । जाके हिरदै एक ॥
अति आनँद व्यभिचारिनी । जाके खसम अनेक ॥ ५४ ॥
पतिब्रता को एक है । व्यभिचारिनि को दोइ ॥
पतिब्रता व्यभिचारिनी । मेला क्योंँ कर होइ ॥ ५५ ॥
पतिब्रता के एक है । दूजा नाहीँ आन ॥
व्यभिचारनि के दोइ है । परघर एक समान ॥ ५६ ॥
पुरुष हमारा एक है । हम नारी बहु अंग ॥
जो जैसा है ताहि सोँ । खेलइ तैसहि रंग ॥ ५७ ॥
दादू रहता राखिये । बहता देइ बहाय ॥
बहते संग न जाइये । रहते सोँ लव लाइ ॥ ५८ ॥
जिन बाझइ केहु करम सोँ । दूजे आरँभि जाइ ॥
दादू एकइ मूल गहि । दूजा देइ बहाइ ॥ ५९ ॥
बायेँ देख न दाहिनेँ । तन मन सनमुख राखि ॥
दादू निरमल तन गही । संत सबद यह साखि ॥ ६० ॥
दूजा नैन न देखिये । स्रवनहुँ सुनइ न जाइ ॥
जिभ्भा आन न बोलिये । अंग न और सोहाइ ॥ ६१ ॥
चरनहुँ अनत न जाइये । उलटा माहिँ समाइ ॥
उलट अपूठा आप मेँ । दादू रह लव लाइ ॥ ६२ ॥
दूजे अंतर होत है । जिनि आनइ मन माहिँ ॥
तहँ ले मन को राखिये । जहँ कुछ दूजा नाहिँ ॥ ६३ ॥

भरम तिमिर भाजइ नहीँ। रे जिव आन उपाइ ॥
दादू दीपक साजि ले। सहजइ सो मिटि जाइ ॥ ६४ ॥
सो बेदन नहिँ बावरे। आन किये जो जाइ ॥
सब दुख भंजन साइँयाँ। ताही सोँ लव लाइ ॥ ६५ ॥
औषध मूली कुछ नहीँ। ये सब झूठी बात ॥
जो ओषधही जीइये। काहे को मरिजात ॥ ६६ ॥
मूल गहइ सो निहचला। सुख मेँ रहइ समाइ ॥
डार पात भरमत फिरइ। बेदोँ दिया बहाइ ॥ ६७ ॥
सौ धक्का सुनहा को देवइ। घर बाहर काढइ ॥
दादू सेवक राम का। दरबार न छाडइ ॥ ६८ ॥
साहिब का दर छाडि करि। सेवक कहीँ न जाइ ॥
दादू बैठा मूल गहि। डारोँ फिरइ बलाइ ॥ ६९ ॥
जब लग मूल न सीँचिये। तब लग हरा न होइ ॥
सेवा निहफल सब गई। फिरि पछतावा सोइ ॥ ७० ॥
दादू सीँचइ मूल को। सब सींचा बिस्तार ॥
दादू सींचे मूल बिन। बादि गई बेगार ॥ ७१ ॥
सब आया उस एक मेँ। डार पात फल फूल ॥
दादू पीछे का रहा। जब निज पकडा मूल ॥ ७२ ॥
खेत न उपजइ बीज बिन। जल सीँचे का होइ ॥
निहफल दादू राम बिन। जानत हैँ सब कोइ ॥ ७३ ॥
जब मुख माहैँ मेलिये। सबही त्रिपिता होइ ॥
मुख बिन मेले आन दिसि। त्रिपित न मानइ कोइ ॥ ७४ ॥
देव निरंजन पूजिये। सब आया उस माहिँ ॥
डार पात फल फूल सब। दादू न्यारा नाहिँ ॥ ७५ ॥
दादू टीका राम का। दूसर दीजे नाहिँ ॥
ज्ञान ध्यान तप भेष पछ। सब आये उस माहिँ ॥ ७६ ॥

साधू राखइ राम को । संसारी माया ॥
संसारी पालव गहइ । मूल साधू पाया ॥ ७७ ॥
दादू जो कछु कीजिये । अबिगत बिन आराध ॥
कहिबा सुनबा देखिबा । करिबा सब अपराध ॥ ७८ ॥
सब चतुराई देखिये । जे कुछ कीजे आन ॥
दादू आया सउँपि सब । पिय को लेहु पिछान ॥ ७६ ॥
दादू दूजा कुछ नहीं । एक सत्त करि जान ॥
दादू दूजा का करइ । जिन एक लिय पहिचान ॥ ८० ॥
कोई बाँछे मुक्ति फल । कोइ अमरापुर बास ॥
कोई बाँछे परमागती । दादु मिलन कि आस ॥ ८१ ॥
तुम्ह हरि हिरदय हेत सों । प्रगटहु परमानंद ॥
दादू देखइ नैन भरि । केता होइ अनंद ॥ ८२ ॥
प्रेम पियाला रामरस । हम को भावइ एइ ॥
रिधि सिधि मागहिँ मुक्तिफल । चाह तिन्ही को देइ ॥ ८३ ॥
कोटि बरस का जीवना । अमर भये का होइ ॥
प्रेम भगति रस राम बिन । दादु जिवन का सोइ ॥ ८४ ॥
कछू न कीजे कामना । सरगुन निरगुन होइ ॥
पलटि जीव तें ब्रह्मगति । सब मिलि मानइ मोइ ॥ ८५ ॥
घट जरावर होय रहइ । बंधन नाहीं कोइ ॥
मुक्ता चौरासी मिटइ । दादू संसय सोइ ॥ ८६ ॥
निकट निरंजन लागि रह । जब लग अलख अभेव ॥
दादू पीवइ रामरस । निहकामी निज सेव ॥ ८७ ॥
सत्य लोक संगति रहइ । सामिप सनमुख सोइ ॥
सोइ सरूप सारिक भया । जोगी एकइ होइ ॥ ८८ ॥
राम रसिक बाँचइ नहीं । परम पदारथ चार ॥
आठसिद्धि नवनिधि करइ । दाता सिरजनहार ॥ ८६ ॥

स्वारथ सेवा कीजिये। ताते भला न होइ॥
दादू ऊसर उबहि करि। कोठा भरइ न कोइ॥ ९० ॥
सुत बित माँगहिं बावरे। साहिब सौं निधि मेलि॥
दादू वे निहफल गये। जैसे नागरबेलि॥ ९१ ॥
फल कारन सेवा करइ। जाँचइ त्रिभुवनराव॥
दादू सो सेवक नहीं। खेलइ अपना दाव॥ ९२ ॥
सहकामी सेवा करइ। माँगइ मुरुख गवाँर॥
दादू ऐसे बहुत हैं। फल के भच्छनहार॥ ९३ ॥
तन मन लव लागा रहइ। दाता सिरजनहार॥
दादू कुछ माँगइ नहीं। ते बिरला संसार॥ ९४ ॥
साईं को संभारता। कोटि बिघन टरि जाहिं॥
राइ समान बसुंधरा। केते काठ जराहिं॥ ९५ ॥
एक राम के नाम बिन। जिव की जरनि न जाइ॥
दादू केते पचि मुये। करि करि बहुत उपाइ॥ ९६ ॥
करम करम काटइ नहीं। करमइ करम न जाइ॥
करम करम छूटइ नहीं। करमइ करम बँधाइ॥ ९७ ॥

इति निहकरमी पतिव्रता को अंग संपूर्णम्॥८॥

———o———

अथ चेतवनी को अंग ।

:0:

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
साहिब को भावइ नहीं । सो हम तें जिन होइ ॥
सतगुरु लाजइ आपना । साधु न मानइ कोइ ॥ २ ॥
साहिब को भावइ नहीं । सो सब परहर प्रान ॥
मनसा बाचा करमना । जो तूँ चतुर सुजान ॥ ३ ॥
साहिब को भावइ नहीं । सो जिव न कीजे रे ॥
परहरि बिषय बिकार सब । अम्रित रस पीजे रे ॥ ४ ॥
साहिब को भावइ नहीं । सो बाट न बूझी रे ॥
साईं सो सनमुख रहे । इस मन से झूझी रे ॥ ५ ॥
दादु अचेत न होइये । चेतन सो चित लाइ ॥
मनुआँ सोता नींद भरि । साईं संग जगाइ ॥ ६ ॥
दादु अचेत न होइये । चेतन सौं करि चित्त ॥
अनहद जहँ तें ऊपजइ । खोजइ तहँही नित्त ॥ ७ ॥
दादू जिन कुछ चेत करि । सौदा लीजइ सार ॥
निरख कमाई ना छुटइ । अपनो जीव बिचार ॥ ८ ॥
करि साईं की चाकरी । हरी नावँ ना छोडि ॥
जाना है उस देस को । प्रीति पिया सों जोडि ॥ ९ ॥
आपा परबस दूर करि । रामनाम रस लागि ॥
दादू अवसर जात है । जागि सकइ तो जागि ॥ १० ॥
बार बार यह तन नहीं । नर नारायन देह ॥
दादू बहुरि न पाइये । जनम अमोलिक येह ॥ ११ ॥

एका एकी राम सोँ। एकइ साधू संग ॥
दादू अनत न जाइये। और काल का अंग ॥ १२ ॥
तन मन का गुन छाडि सब। होइ जब न्यारा ॥
अपने नैनहुँ देखिये। परगट पिय प्यारा ॥ १३ ॥
जहँ तेँ पाये पसु पिरी। सोई अंदरि आहि ॥
होनी पानी बीच मेँ। सो है मेहरिन लाहि ॥ १४ ॥
जहँ तेँ पाये पसु पिरी। ह्वाँ तैँ लाई बेर ॥
साथ सभोँ के यह लियो। पोइ पसंदो केर ॥ १५ ॥

इति चेतवनी को अंग संपूर्णम् ॥ ९ ॥

——:0:——

अथ मन को अंग ।

——:o:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
वंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
यह मन बरजी बावरे । घट में राखी घेरि ॥
मन हस्ती माता बहइ । अंकुस दे दे फेरि ॥ २ ॥
हस्ती छूटा मन फिरइ । क्योँ हीँ बँधा न जाइ ॥
बहुत महावत पचि गये । दादू कछु न बसाइ ॥ ३ ॥
जहवाँ तें मन उठि चलइ । फेरि तहाँहि राखि ॥
तहँ दादू लवलीन करि । साधु कहइ गुरुसाखि ॥ ४ ॥
थोरे थोरे हटि किये । न रहैगा लव लाइ ॥
जब लागा उनमन्न सों । तब मन कहीँ न जाइ ॥ ५ ॥
आडा देदे राम को । दादू राखइ मन्न ॥
साखी दे अस्थिर करइ । सोई साधू जन्न ॥ ६ ॥
सोई सूर जो मन गहइ । निमिष न चलने देइ ॥
दादू जबही पग धरइ । तबही पकडि के लेइ ॥ ७ ॥
जेती लहर समुद्र की । मनहिँ मनोरथ मारि ॥
वैसे सब संतोष करि । आतम एक बिचारि ॥ ८ ॥
दादू जो मुख बोलता । स्रवनहुँ सुनता आइ ॥
नैनहुँ महँ सो देखता । सो अंतरि उरझाइ ॥ ६ ॥
दादू चुंबक देखि करि । लोहा लागइ आइ ॥
मन गुन इंद्री एक सों । दादू लीजइ लाइ ॥ १० ॥
मनका आसन जो जिय जानइ । ठौर ठौर सब सूझइ ॥
पाँचो आनि एक घर राखइ । अगम निगम सब बूझइ ॥ ११ ॥

बैठे सदा एक रस पीवइ। निरबैरी कत जूझइ ॥
आतम राम मिलइ जब दादू। अंग न लागइ दूजइ ॥ १२ ॥
जब लग मन असथिर नहीँ। तब लग परस न होइ ॥
दादू मनुआँ थिर भया। सहज मिलइगा सोइ ॥ १३ ॥
बिन अवलंबहि क्योँ रहइ। मन चंचल चलि जाइ ॥
अस्थिर मनुआँ तब रहइ। सुमिरन सेतीँ लाइ ॥ १४ ॥
मन अस्थिर करि लीजइ नाम। दादू कहइ तहाँ ही राम ॥ १५ ॥
हरि सुमिरन सोँ हेत करि। मनुआँ निहचल होइ ॥
दादू बेधा प्रेम रस। बिष नहिँ चालइ सोइ ॥ १६ ॥
अंतर उरझा एक सोँ। थाके सकल उपाइ ॥
दादू निहचल थिर भया। तब चालि कहीँ न जाइ ॥ १७ ॥
कउवा बोहित बैठि करि। मांझि समंदा जाइ ॥
उडि उडि थाका देखि कर। निहचल बैठा आइ ॥ १८ ॥
यह मन कागद की गुडी। उडि कर चढी अकास ॥
दादू भीँगइ प्रेम जल। आइ रहइ हम पास ॥ १९ ॥
दादू खीला गाडि का। निहचल थिर न रहाइ ॥
दादू पग नहिँ साँच के। भरमइ दहदिसि जाइ ॥ २० ॥
सुख आनँद है आतमा। मन थिर मेरा होइ ॥
दादू निहचल राम सोँ। जो करि जानइ कोइ ॥ २१ ॥
मन निरमल थिर होत है। रामनाम आनंद ॥
दादू दरसन पाइया। पूरन परमानंद ॥ २२ ॥
फूटे तेँ सारा भया। संधी संधि मिलाइ ॥
बाहुरि बिषय न भूँजिये। कबहूँ फूटि न जाइ ॥ २३ ॥
यह मन भूला वह गली। नरक जान के घाट ॥
मन यह अबिगत नाथ सोँ। गुरू दिखाई बाट ॥ २४ ॥

मन सुध स्याबति आपना। निहचल होअइ हाथ॥
इहवाँ ही आनंद है। सदा निरंजन साथ॥ २५॥
मन लागइ जो राम सोँ। अनत काहि को जाइ॥
दादू पानी नून ज्योँ। ऐसे रहइ समाइ॥ २६॥
ज्योँ जल पैठइ दूध मेँ। त्योँ पानी मेँ नोन॥
ऐसे आतम राम सोँ। मन हठ साधइ कोन॥ २७॥
मन का मस्तक मूडिये। काम क्रोध के केस॥
दादू बिषय बिकार सब। सतगुरु के उपदेस॥ २८॥
वह कुछ हम तेँ ना भया। जा पर रीझइ राम॥
दादू इस संसार मेँ। हम आये बेकाम॥ २९॥
का ले मुँह हँसि बोलिये। दादू दीजइ रोइ॥
जनम अमोलिक आपना। चले अकारथ खोइ॥ ३०॥
जा कारन जग मेँ जिये। सो पद हिरदय नाहिँ॥
दादू हरि की भगति बिन। ध्रिग जीवन कलि माहिँ॥ ३१
कीया मन का भावना। मेटी आज्ञाकार॥
का ले मुख दिखलाइये। दादू उस भरतार॥ ३२॥
इंद्री स्वारथ सब किया। मन माँगइ सो दीन्ह॥
जा कारन जग सीरजा। दादू कछू न कीन्हे॥ ३३॥
कीया था इस काम को। सेवा कारन साज॥
दादू भूला बंदगी। सरा न एकउ काज॥ ३४॥
दादू बिषय बिकार सोँ। जब लग मन राता॥
तब लग चित्त न आवइ। त्रिभुवनपतिदाता॥ ३५॥
बादिहि जनम गवाँइया। कीये बहुत बिकार॥
यह मन अस्थिर ना भया। जहँ दादू निज सार॥ ३६॥
दादू सब कुछ बेलसना। खाना पीना होइ॥
दादू मन का भावना। कहि समझावइ कोइ॥ ३७॥

दादू मन का भावना। मेरी कहइ बलाइ॥
साच राम का भावना। दादु कहइ सुनि आइ॥ ३८॥
ये सब मन का भावना। जो कछु कीजइ आन॥
मन गहि राखइ एक सोँ। दादू साधु सुजान॥ ३६॥
जो कुछ भावइ राम को। सो तत कहि समझाइ॥
दादू मन का भावना। सब कोइ कहइ बनाइ॥ ४०॥
पैँडे पग चालइ नहीँ। होइ रहा गरियार॥
राम अरथ निबहइ नहीँ। खइबे को हुसियार॥ ४१॥
का परमोधैँ आन को। आपन बहिया जात॥
औराँ को अम्रित कहइ। अपना ही बिष खात॥ ४२॥
पाँचो ये परमोधि ले। इनहीँ को उपदेस॥
यह मन अपना हाथ कर। तब चेला सब देस॥ ४३॥
पाँचो का मुख मूल है। मुख का मनवाँ होइ॥
यह मन राखइ जतन करि। साधु कहावइ सोइ॥ ४४॥
जब लग मन के दुइ गुन। तब लग निपुना नाहिँ॥
दुइ गुन मन के मिटि गये। तब निपुना मिलि माहिँ॥ ४५॥
काचा पाका जब लगइ। तब लग अंतर होइ॥
काचा पाका दूर करि। दादू एकइ सोइ॥ ४६॥
सहज रूप मन का भया। होइ होइ मिटी तरंग॥
तातइ सीतल सम भया। दादू एकइ अंग॥ ४७॥
यह बहुरूपी मन लगइ। जब लग माया रंग॥
जब मन लागा राम सोँ। दादू एकइ अंग॥ ४८॥
हीरा मनि परि राखिये। दूजा चढइ न रंग॥
दादू योँ मन थिर भया। अबिनासी के संग॥ ४६॥
सुख दुख सब साईँ पठइ। तब लग काचा मन्न॥
दादू कुछ व्यापइ नहीँ। तब मन भया रतन्न॥ ५०॥

पाका मन डोलइ नहीं । निहचल रहइ समाइ ॥
काचा मन दहु दिसि फिरइ । चंचल चहुँ दिसि जाइ ॥ ५१
सीप सुधा रस ले रहइ । पिअइ न खारा नीर ॥
माहैं मोती उपजई । दादू बंद सरीर ॥ ५२ ॥
दादू मन पंगुल भया । सब गुन गये बिलाइ ॥
काया है नव ज्वान यह । मन बूढा होइ जाइ ॥ ५३ ॥
दादू अपने करि लिये । मन इंद्री निज ठौर ॥
नाम निरंजन लागि रहु । प्रानी परिहरि और ॥ ५४ ॥
मन इंद्री आधा किया । घट में लहर उठाइ ॥
साईं सतगुरु छाडि करि । देखि दिवाना जाइ ॥ ५५ ॥
बिना राम मन रंक है । जाँचइ तीनउँ लोक ॥
मन लागा जब राम सौं । भगे दरिद्दर सोक ॥ ५६ ॥
इंद्री के आधीन मन । जीव जंतु सब जाँचइ ॥
तिन तिन के आगे दादू । तीनउँ लोक फिरि नाचइ ॥ ५७ ।
इंद्री अपने बस करइ । काहे जाँचन जाइ ॥
दादू अस्थिर आतमा । आसन बइठइ आइ ॥ ५८ ॥
मन मनसा दोनों मिले । तब जिव कीया भाँड ॥
पाँचो का फेरा फिरइ । मया नचावइ राँड ॥ ५९ ॥
नकटी आगे नकटा नाचइ । नकटी ताल बजावइ ॥
नकटी आगे नकटा गावइ । नकटी नकटा भावइ ॥ ६० ॥
पाँचो इंद्री भूत हैं । मन बाँधे तरपाल ॥
मनसा देबी पूजिये । दादू तीनउँ काल ॥ ६१ ॥
जीवत लूटइ जगत सब । मिरतक लूटइ देव ॥
दादू कहाँ पुकारिये । करि करि मूये सेव ॥ ६२ ॥
अगिनि धूम ज्यों निकलई । देखत सबइ बिलाइ ॥
त्यों मन बिछुडा राम सों । दहु दिसि बिखरइ जाइ ॥ ६३ ।

घर छाडे से का भया। मन बहुरि न आया॥
दादू अगिनि के धूम ज्यों। पुर खोज न पाया॥ ६४॥
सब काहू के होत हैं। तन मन परसइ जाइ॥
ऐसा कोई एक है। उलटा माहिं समाइ॥ ६५॥
क्यों करि उलटा आनिये। पसरि गया मन फेरि॥
दादू डोरी सहज की। यों आनी घर घेरि॥ ६६॥
साधु सबद सों मिलि रहइ। मन राखइ बिलगाइ॥
साधु सबद बिन क्यों रहइ। तब ही बिखरी जाइ॥ ६७॥
चंचल चहुँ दिसि जात है। गुरु बाइक सों बंधि॥
दादू संगति साधु की। पारब्रह्म सौं संधि॥ ६८॥
एक निरंजन नावँ सों। साधू संगति माहिं॥
दादू मन बिलवाइये। दूजा कोई नाहिं॥ ६९॥
तन में मन आवइ नहीं। निस दिन बाहर जाइ॥
दादू मेरा जिव दुखी। रहइ नहीं लव लाइ॥ ७०॥
तन मे मन आवइ नहीं। चंचल चहुँ दिसि जाइ॥
दादू मेरा जिव दुखी। रहइ न राम समाइ॥ ७१॥
कोटि जतन करि करि मुये। यह मन दह दिसि जाइ॥
रामनाम रोका रहइ। नाहीं आन उपाइ॥ ७२॥
यह मन बहु बकवाद सों। बायु भूत होइ जाइ॥
दादू बहुत न बोलिये। सहजइ रहइ समाइ॥ ७३॥
भूला भरमइ फेरि मन। मूरख मगध गवाँर॥
सुमिरि सनेही आपना। आतम का आधार॥ ७४॥
मानिक मूरुख राख रे। जन जन हाथ न देहु॥
दादु पारिखी जौहरी। रामसाधु दुइ लेहु॥ ७५॥
मारा बिन मानइ नहीं। यह मन हरि का आन॥
ज्ञान खडग गुरुदेव का। ता सँग सदा सुजान॥ ७६॥

मन मिरगा मारइ सदा। ता की मीठी मास॥
दादू खइबे को हिला। तातेँ आन उदास॥ ७७॥
कहा हमारा मान मन। पापी परिहर काम॥
बिषयी का सँग छाडि दे। दादू कहि ले राम॥ ७८॥
केता कहि समझाइये। मानइ नहिँ निर्लज्ज॥
मूरुख मन समझइ नहीँ। कीये काज अकज्ज॥ ७९॥
मन ही मंजन कीजिये। दादू दरपन देह॥
माहीँ सूरत देखिये। हरि अवसर करि लेह॥ ८०॥
तब ही कारा होत है। हरि बिन चितवत आन॥
का कहिये समझइ नहीँ। दादू सिखवत ज्ञान॥ ८१॥
पानी धोवहिँ बावरे। मन का मैल न जाइ॥
मन निरमल तब होयगा। जब हरि के गुन गाइ॥ ८२॥
ध्यान धरे का होत है। मन नहिँ निरमल होइ॥
तब बक सबही ऊधरेँ। येहि बिधि सीझइ कोइ॥ ८३॥
ध्यान धरे का होत है। मन का मैल न जाइ॥
बकउ मीन का ध्यान धरि। पसू बिचारे खाइ॥ ८४॥
काले तेँ धोया भया। दिल दरिया मेँ धोइ॥
मालिक सेतीँ मिलि रहा। सहजइ निरमल होइ॥ ८५॥
जिस का दरपन ऊजरा। दरसन देखइ माहिँ॥
जिस की मैली आरसी। सो मुख देखइ नाहिँ॥ ८६॥
दादू निरमल सुद्ध मन। हरि रँग राता होइ॥
दादू कंचन करि लिया। काच कहइ नहिँ कोइ॥ ८७॥
यह मन अपना थिर नहीँ। करि नहिँ जानइ कोइ॥
दादू निरमल देव का। सेवा क्योँ करि होइ॥ ८८॥
यह मन तीनउँ लोक मेँ। अरस परस सब होइ॥
देही की रच्छा करइ। हम जिन भेँटइ कोइ॥ ८९॥

देह जतन करि राखिये । मन राखा नाहि जाइ ॥
उत्तम माद्धिम बासना । भला बुरा सब खाइ ॥ ९० ॥
दादू हाडहु मुख भरा । चाम रहा लपटाइ ॥
माहैं जिभ्भा मास की । ताही सेतीं खाइ ॥ ९१ ॥
नवहू द्वारे नरक के । निस दिन बहइ बलाइ ॥
सौच कहाँ तक कीजिये । राम सुमिरि गुन गाइ ॥ ९२ ॥
प्रानी तन मन मिलि रहा । इंद्री सकल बिकार ॥
दादू ब्रह्मा सूद्र घर । कहाँ रहइ आचार ॥ ९३ ॥
दादू जीवइ पलक में । मरता कलप बिहाइ ॥
दादू यह मन मसखरा । जिन कोई पतियाइ ॥ ९४ ॥
दादू मूआ मन हमैं । जैसे मरघट भूत ॥
मूआ पीछे उठि लगइ । ऐसा मेरा पूत ॥ ९५ ॥
निहचल करता जुग गये । चंचल तबही होइ ॥
दादू पसरइ पलक में । यह मन मारइ मोइ ॥ ९६ ॥
दादू यह मन मीन का । जल सों जीवइ सोइ ॥
दादू यह मन रद्द है । जिन न पतीजइ कोइ ॥ ९७ ॥
माहैं सुखिया होइ रहइ । बहर पसारइ अंग ॥
पवन लागि पौढा भया । काला नाग भुअंग ॥ ९८ ॥
सपना तब लग देखिये । जब लग चंचल होइ ॥
निहचल लागा नावँ सों । सपना नाहीं कोइ ॥ ९९ ॥
जागत जहँ जहँ मन रहइ । सोवत तहँ तहँ जाइ ॥
दादू जो जो मन बसइ । सो सो देखइ आइ ॥ १०० ॥
दादू जो जो चित बसइ । सो सो आवइ चीति ॥
बाहर भीतर देखिये । जाही सेतीं प्रीति ॥ १०१ ॥
सावन हरिअरि देखिये । मन चित ध्यान लगाइ ॥
दादू केते जुग गये । तो भी हरा न जाइ ॥ १०२ ॥

जिस की सुरति जहँ रहइ । तिसंकी तहँ बिस्राम ॥
भावइ माया मोह में । भावइ आतमराम ॥ १०३ ॥
जहँ मन राखइ जीवता । मरता तिस घर जाइ ॥
दादू बासा प्रान का । पहिले रहा समाइ ॥ १०४ ॥
जहाँ सुरति तहँ जीव है । जहँ नहीं तहँ नाहिं ॥
गुन निरगुन जहँ राखिये । दादू घर बन माहिं ॥ १०५ ॥
जहाँ सुरति तहँ जीव है । आदि अंत अस्थान ॥
मया ब्रह्म जहँ राखिये । दादू तहँ बिस्राम ॥ १०६ ॥
जहाँ सुरति तहँ जीव है । जिवन मरन जिस ठौर ॥
बिष अम्रित तहँ राखिये । दादू नाहीं और ॥ १०७ ॥
जहाँ सुरति तहँ जीव है । जहँ चाहइ तहँ जाइ ॥
आगम गम जहँ राखिये । दादू तहाँ समाइ ॥ १०८ ॥
मन मनसा का भाव है । अंत फलैगा सोइ ॥
दादू बानिक बानियाँ । आसय आसनि होइ ॥ १०९ ॥
जप तप करनी करि गये । सरग पहूँचे जाइ ॥
दादू मन की बासना । नरक पडे फिरि आइ ॥ ११० ॥
पाका काचा होइ गया । जीतइ हारइ दाव ॥
अंतकाल गाफिल भया । दादू फिसलइ पाव ॥ १११ ॥
यह मन पंगुल पाँच दिन । सब काहू का होइ ॥
दादू उतरि आकास तें । धरती आया सोइ ॥ ११२ ॥
ऐसा कोई एक मन । मरइ सो जीवइ नाहिं ॥
दादू ऐसे बहुत हैं । फिरि आवहिं कलि माहिं ॥ ११३ ॥
देखा देखी सब चले । पार न पहुँचा जाइ ॥
दादू आसनि पहिर कें । फिरि फिरि बइठे आइ ॥ ११४ ॥
बरतन एकइ भाँति सब । दादू संत असंत ॥
भिन्न भाव अंतर घना । मनसा तहँ गछंत ॥ ११५ ॥

यह मन मारइ मोमिना । यह मन मारइ मीर ॥
यह मन मारइ साधु का । यह मन मारइ पीर ॥ ११६ ॥
मन मारे मुनिबर मुये । सुर नर किये सँघार ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस सब । राखइ सिरजनहार ॥ ११७ ॥
मन चाहे मुनिबर बडे । ब्रह्मा बिस्नु महेस ॥
सिध साधक जोगी जती । दादू दे सब देस ॥ ११८ ॥
पूजा मान बडाइयाँ । आदर माँगइ मन्न ॥
राम गहइ सब परिहरइ । सोई साधू जन्न ॥ ११९ ॥
जहँ जहँ आदर पाइये । तहाँ तहाँ जिव जाइ ॥
बिन आदर का रामरस । छाडि हलाहल खाइ ॥ १२० ॥
करनी किरका को नहीं । कथी अनंत अपार ॥
दादू यों क्यों पाइये । रे मन मूढ गवाँर ॥ १२१ ॥
दादू मन मिरतक भया । ईंद्री अपने हाथ ॥
तौभी कधी न कीजिये । कनक कामिनी साथ ॥ १२२ ॥
मन निरभय है घर नहीं । भय में बइठा आइ ॥
निरभय सँग तें बीछुडा । सोइ कायर होइ जाइ ॥ १२३ ॥
दादू मन के सीस मुख । हस्त पाँव है जीव ।
स्रवन नेत्र रसना रटइ । दादू पाया पीव ॥ १२४ ॥
जहाँ नवाये सब नवइ । सोई सिर करि जानि ॥
जहाँ बोलाये बोलिये । सोई मुख परवानि ॥ १२५ ॥
जहाँ सुनाये सब सुनइ । सोई स्रवन सयान ॥
जहँ के देखाये देखिये । सोई नैन सुजान ॥ १२६ ॥
मनहीं सों मल उपजई । मनहीं सोँ मल धोइ ॥
सीख चलइ गुरु साधु की । तो तूँ निर्मल होइ ॥ १२७ ॥
मनहीं माया उपजई । मनहीं माया जाइ ॥
मनहीं राता राम सों । मनहीं रहा समाइ ॥ १२८ ॥

मनही ँ मरना उपजई । मनही ँ मरना खाइ ॥
मन अबिनासी होइ रहा । साहिब सों ँ लव लाइ ॥ १२९

मनही ँ सनमुख नूर है । मनही ँ सनमुख तेज ॥
मनही ँ सनमुख जोति है । मनही ँ सनमुख सेज ॥ १३०

मनही ँ सों ँ मन थिर भया । मनही ँ सों ँ मन लाइ ॥
मनही ँ सों ँ मन मिलि रहा । दादू अनत न जाइ ॥ १३१

इति मन को अंग संपूर्णम् ॥ १० ॥

———:o:———

अथ सूच्छम जनम को अंग।

---:o:---

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्ब साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥
चौरासी लख जीव की। पर कीरति घट माहिं॥
नेक जनम दिन के करइ। कोई जानइ नाहिं॥ २॥
जेत गुन व्यापइ जीव को। तेते ही अवतार॥
अवागमन यह दूरि करि। समरथ सिरजनहार॥ ३॥
सब गुन सबही जीव के। दादू व्यापइ आइ॥
घट माहैं जामइ मरइ। कोई न जानइ ताहि॥ ४॥
जीव जनम जानइ नहीं। पलक पलक में होइ॥
चौरासी लख भोगई। दादू लखइ न कोइ॥ ५॥
नेक रूप दिन के करइ। यह मन आवइ जाइ॥
अवागमन मन का मिटइ। दादू रहइ समाइ॥ ६॥
निसबासर यह मन चलइ। सूच्छम जीव सँघार॥
दादू मन थिर कीजिये। आतम लेहु उबारि॥ ७॥
कबहूँ पावक कबहूँ पानी। धर अंबर गुन बाई॥
कबहूँ कुंजर कबहूँ कीरी। नर पसु होई जाई॥ ८॥
सूकर स्वान सियार सिंह। सरप रहइ घट माहिं॥
कुंजर कीरी जीव सब। पँवरहिं जानहिं नाहिं॥ ९॥

इति सूच्छम जनम को अंग संपूर्णम्॥ ११॥

---:o:---

अथ माया को अंग ।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनाम पारंगतः ॥ १ ॥
साहिब है पर हम नहीं । सब जग आवइ जाइ ॥
दादू सपना देखिये । जागत गया बिलाइ ॥ २ ॥
माया का सुख पाँच दिन । गरब्यो कहाँ गवाँर ॥
सपने पायेउ राजधन । जात न लागइ बार ॥ ३ ॥
सपने सोता प्रान है । कीये भोग बिलास ॥
जागत झूठा होइ गया । ताकी कैसी आस ॥ ४ ॥
माया का सुख मन करइ । सेजा सुंदरि पास ॥
अंतकाल आया गया । दादू होहु उदास ॥ ५ ॥
जो नाहीं सो देखिये । सूता सपने माहिं ॥
दादू झूठा होइ गया । जागइ तो कुछ नाहिं ॥ ६ ॥
यह सब माया मिरिग जल । झूठी झिलिमिलि होइ ॥
दादू चिसका देखि करि । सत करि जाना सोइ ॥ ७ ॥
झूठी झिलिमिलि मिरिग जल । पानी करि लीया ॥
दादू जग प्यासा मरइ । पसु प्रानी पीया ॥ ८ ॥
छालावा छलि जाइगा । सपना बाजी सोइ ॥
दादू देखि न भूलिये । यह निज रूप न होइ ॥ ९ ॥
सपने सब कुछ देखिये । जागइ तो कुछ नाहिं ॥
ऐसा यह संसार है । समझि देखि मन माहिं ॥ १० ॥
जो कछु सपने देखिये । तैसा यह संसार ॥
ऐसा आपा जानिये । फूलहु कहाँ गवाँर ॥ ११ ॥

दादु जतन करि राखिये। दिढ गहि आतम मूल॥
दूजा दृष्टि न देखिये। सबही से बल फूल॥ १२॥
नैनहुँ भरि नहिँ देखिये। सब माया का रूप॥
तहँ ले नैना राखिये। जहँ है तत्त अनूप॥ १३॥
हस्ती बरधन देखि करि। फूलेउ अँग न समाइ॥
फेरि दमामा एक दिन। सबही छाडे जाइ॥ १४॥
माया बिहडइ देखतइ। काया संग न जाइ॥
क्रित्रिम बिहडइ बावरे। अजरअमर लव लाइ॥ १५॥
माया का बल देखि करि। आया अँत अहँकार॥
अंध भया सूझइ नहीँ। का है सिरजनहार॥ १६॥
मन मनसा माया रती। पाँच तत्त परकास॥
चौदह तीनउँ लोक सब। दादू दोऊ उदास॥ १७॥
माया देखे मन सुखी। हिरदय होइ बिकास॥
दादू यह गति जीव का। अंत न पूजइ आस॥ १८॥
मन की मूठि न माडिये। माया केर निसान॥
पीछे ही पछताउगे। दादू खोटे बान॥ १९॥
कुछ खाते कुछ खेलते। कुछ सोवत दिन जाइ॥
कुछ बिषयारस बेलसते। दादू गये बिलाइ॥ २०॥
माखन मन पाहन भया। मायारस पीया॥
पाहन मन माखन भया। रामरस लीया॥ २१॥
माया सोँ मन बीगडा। ज्योँ काँजी करि दूध॥
है कोई संसार मेँ। मन करि देवइ सूध॥ २२॥
गंदे सोँ गंदा भया। योँ गंदा सब कोइ॥
दादू लागइ खूब सोँ। खूब सरीखा होइ॥ २३॥
माया सोँ मन रत भया। बिषयरस माता॥
दादू साचा छाडि करि। झूठइ रँग राता॥ २४॥

माया के सँग जो गये। ते बहुरि न आये ॥
दादू माया डाँकिनी। इन्ह केते खाये ॥ २५ ॥
माया मोह बिकार की। कोई सकइ न डारि ॥
बहि बहि मूये बापुरे। गये बहुत पचि हारि ॥ २६ ॥
रूप राग गुन अनुसरे। जहँ माया तहँ जाइ ॥
विद्या आखर पंडिता। तहाँ रहइ घर छाइ ॥ २७ ॥
साधु न कोई पग भरइ। कबहूँ राज दुआरि ॥
दादू उलटा आप मेँ। बैठा ब्रह्म बिचारि ॥ २८ ॥
अपने अपने घर गये। माया अंग बिचारि ॥
सहकामी माया मिले। निकमी ब्रह्म सँभारि ॥ २९ ॥
मायामगन जो होइ रहइ। हम से जीव अपार।
माया माहैँ ले रही। डूबे काली धार ॥ ३० ॥
बिषय कारन रूप राते रहैँ। नैन नापाक योँ कीन्ह भाई ॥
बदी की बात सुनत सारा दिन। स्रवन नापाक योँ कीन्ह जाई ॥
स्वाद कारन लुबधि लागी रहै। जिभ्भा नापाक योँ कीन्ह खाई ॥
भोग कारन भूख लागी रहै। अंग नापाक योँ कीन्ह लाई ॥ ३२ ॥
दादू नगरी चैन तब। जब एकराजी होइ ॥
दोउ राजी दुख द्वंद मेँ। सुखी न बइठ कोइ ॥ ३३ ॥
एकराजी आनंद है। नगरी निहचल बास ॥
राजा परजा सुख बसइ। दादू जोतिप्रकास ॥ ३४ ॥
जैसे कुंजर कामरस। आपा बंधा आइ ॥
ऐसे दादू हम भये। क्योँकर निकसा जाइ ॥ ३५ ॥
जैसे मरकट जीभरस। आपा बंधा अंध ॥
ऐसे दादू हम भये। क्योँकर छूटइ फंद ॥ ३६ ॥
ज्योँ सूवा सुख कारने। बंधा मूरख माहिँ ॥
ऐसे दादू हम भये। क्योँही निकसइ नाहिँ ॥ ३७ ॥

ऐसे अंध अज्ञान ग्रिह। बंधा मूरख स्वादि॥
ऐसे दादू हम भये। जनम गवाँया बादि॥ ३८॥
बूडि रहा रे बापुरे। माया ग्रिह के कूप॥
मोह कनक अरु कामिनी। नाना बिध के रूप॥ ३९॥
स्वाद लागि संसार सब। देखत परलय जाइ॥
इंद्री स्वारथ साच तजि। सबइ बँधाये आइ॥ ४०॥
बिष सुख माहैँ रमि रहे। माया हित चित लाइ॥
सोइ संत जन ऊबरे। स्वाद छाडि गुन खाइ॥ ४१॥
झूठी काया झूठ घर। झूठा यह परिवार॥
झूठी माया देखि करि। फूला कहाँ गवाँर॥ ४२॥
दादू झूठा संसार झूठ परिवार। झूठा घरवार झूठ नरनार॥
तहाँ मन मानैँ झूठा कुल जात। झूठ मात पितु झूठा बंधुभ्रात॥
झूठ तन गात सत करि जानइ। झूठ सब धंध झूठा सव फँध॥
झूठ सब अंध झूठा जाचंत। कहाँ मधु छानइ॥
दादू भागि झूठ सब त्यागि। जागि रे जागि देखि दिवाने॥४३॥
जनम गया सब देखते। झूठे के सँग लागि॥
साचे प्रीतम को मिलइ। भागि सकइ तो भागि॥ ४४॥
झूठे तन के कारने। कीये बहुत बिकार॥
ग्रिह दारा धन संपदा। पूत कुटुँब परिवार॥ ४५॥
ता कारन हति आतमा। झूठ कपट अहँकार॥
सो माटी मिलि जाइगा। बिसरा सिरजनहार॥ ४६॥
गतं गृहं गतं धनं। गतं दारासुतजोबनं॥
गतं माता गतं पिता। गतं बंधु सज्जनं॥ ४७॥
गतं आपा गतं परः। गतं संसाररंजनं॥
भजसि भजसि रे मन। परब्रह्म निरंजनं॥ ४८॥
जीवहि माँहैँ जिव रहइ। ऐसा माया मोह॥
साईं सूधा सब गया। दादू नहिँ अंदोह॥ ४९॥

माया पग हर खेत खर। सतगति के दिन होइ॥
जो बाँचे सो देवता। राम सरीखे सोइ॥ ५०॥

कारर बीज न उपजई। जौं बाहइ सौ बार॥
दादू दाना बीज का। का पचि मरइ गँवार॥ ५१॥

दादू इस संसार सों। निमिष न कीजइ नेह॥
जनम मरन से अवटना। छिन छिन दागइ देह॥ ५२॥

दादू मोह सँसार को। बिहरइ तन मन प्रान॥
दादू छूटइ ज्ञान करि। कोई संत सुजान॥ ५३॥

मन हथ माया हस्तिनी। सिंह बना संसार॥
तामें निरभय होइ रहा। दादू मुरुख गवाँर॥ ५४॥

काम कठिन घट चोर है। घर फोरइ दिन रात॥
सोवत साहु न जागई। तत्त बस्तु ले जात॥ ५५॥

काम कठिन घट चोर है। मूसइ भरइ भँडार॥
सोवत ही ले जायगा। चेतत पहरइ चार॥ ५६॥

ज्यों घुन लागइ काठ को। लोहइ लागइ काँट॥
काम किया घट जाजरा। दादू बारह बाट॥ ५७॥

राहु उगिल ज्यों चंद को। गहन उगिल ज्यों सूर॥
करम उगिल ज्यों जीव को। नख सिख लागे पूर॥ ५८॥

चंदा उगिलइ राहु को। गहन उगिलई सूर॥
जीव उगिलई करम को। राम रहा भरपूर॥ ५९॥

करम कुल्हाडा अंग बन। काटत बारंबार॥
अपने हाथे आप को। काटत है संसार॥ ६०॥

आपइ मारइ आप को। यह जीव बिचारा॥
साहिब राखनहार है। सो हितू हमारा॥ ६१॥

आपइ मारइ आप को। आप आप को खाइ॥
आपइ अपना काल है। दादू कह समुझाइ॥ ६२॥

मरिबे को सब उपजई । जीबे को कछु नाहिँ ॥
जीबे को जानइ नहीँ । मरिबे को मन माहिँ ॥ ६३ ॥

बाँधा बहुत बिकार सोँ । सरप पाप का मूल ॥
ढाहइ सब आकार को । दादू यह अस्थूल ॥ ६४ ॥

दादू दोनोँ देखिये । काम क्रोध अहँकार ॥
रात दिवस जरिबो करइ । आपा अगिनि बिकार ॥ ६५ ॥

बिषय हलाहल खाइ करि । सब जग मरि मरि जाइ ॥
दादू मेहरा नाम ले । हृदय राखि लव लाइ ॥ ६६ ॥

जेती बछिया बेलासिये । तेती हत्या होइ ॥
परतछ मान सँभारिये । सकल सिरोमनि सोइ ॥ ६७ ॥

बिषया का रस मद भया । नर नारी का मास ॥
माया माते मद पिया । किया जनम का नास ॥ ६८ ॥

दादू भावइ भगत होइ । बिषय हलाहल खाइ ॥
तहँ जन तेरा रामजी । सपने कधी न जाइ ॥ ६९ ॥

खाँडा बूजी भगत है । लोहर बाडा माहिँ ॥
परगट बेडा इत बसइ । तहँ काहे को जाहिँ ॥ ७० ॥

साँपिन एक सब जीव को । आगे पीछे खाइ ॥
दादू कह उपकार करि । कोइ जन ऊबरि जाइ ॥ ७१ ॥

दादू खाये साँपिनी । क्योँ करि जीवइ लोग ॥
राममंत्र गुन गारुडी । जीवइ येहि संजोग ॥ ७२ ॥

माया कारन जग मरइ । पिय के कारन कोइ ॥
देखो ज्योँ जग परजरइ । निमिख न न्यारा होइ ॥ ७३ ॥

काल कनक अरु कामिनी । परिहर इनका संग ॥
दादू सब जग जरि मुआ । दीपक जोति पतंग ॥ ७४ ॥

जहाँ कनक अरु कामिनी । जीव पतँग होइ जाहिँ ॥
आदि अंत सूझइ नहीँ । जरि जरि मूये माहिँ ॥ ७५ ॥

घट माहैं माया घनी । बाहर त्यागी होइ ॥
फाटी कंथा पहिरि करि । चिन्ह न कर सब कोइ ॥ ७६ ॥
काया राखइ बंद करि । मन दह दिसि खेलइ ॥
दादु कनक अरु कामिनी । माया नाहिं मेलइ ॥ ७७ ॥
मन सोँ मीठा सुख सोँ खारी । माया त्यागी कहइ बजारी ॥७८॥
माया मंदिर मीच का । तामें पइठा धाइ ॥
अंध भया सूझइ नहीं । साधू कह समुझाइ ॥ ७९ ॥
दादू केते जरि मुये । इस जोगी के आगि ॥
दादू दूरहि बाचिये । उस जोगी सँग लागि ॥ ८० ॥
ज्यों जल में है माछरी । तैसा यह संसार ॥
माया माते जीव सब । दादू मरत न बार ॥ ८१ ॥
माया फोडइ नैन दोउ । राम न सूझइ काल ॥
साधु पुकारइ मेर चढि । देखि अगिनि की झार ॥ ८२ ॥
बिना भुअंगम मनि बसइ । बिन जल बूडइ जाइ ॥
बिन पावक के ज्यों जरइ । दादू कछु न बसाइ ॥ ८३ ॥
अम्रित रूपी आप है । और सबइ बिष जाल ॥
राखनहारा राम है । दादू दूजा काल ॥ ८४ ॥
बाजी चिहर रचाइ करि । रहा अपरछन होइ ॥
माया पट परदा दिया । तातें लखइ न कोइ ॥ ८५ ॥
दादू बाहा देखता । ढिग ही दौरी लाइ ॥
पिय पिय करते सब गये । आपा देह दिखाइ ॥ ८६ ॥
मैं चाहूँ सो ना मिलइ । साहिब का दीदार ॥
दादू बाजी बहुत है । नाना रंग अपार ॥ ८७ ॥
हम चाहहिं सो ना मिलइ । औ बहुतरे आहिं ॥
दादू मन मानइ नहीं । केते आवहिं जाहिं ॥ ८८ ॥
बाजी मोंहे जीव सब । हमरी मुरकी बाहि ॥

दादू कैसा करि गया। आपन रहा छिपाहि ॥ ८६ ॥

दादू साईं सत्त है। दूजा भरम बिकार ॥
नावँ निरंजन निरमला। दूजा घोर अधार ॥ ९० ॥

दादू सो धन लीजिये। जो तुम्ह सेतीँ होइ ॥
माया बाँधे कइ मुये। पूरा पडा न कोइ ॥ ६१ ॥

जो हम छाडहिँ हाथ तेँ। सो तुम लिया पसार ॥
जो हम लेवहिँ प्रीति सोँ। सो तुम्ह दीया डारि ॥ ६२ ॥

हीरा पग सोँ ठेलि करि। कंकड को कर लीन्ह ॥
पारब्रह्म को छाडि करि। जीवन सोँ हित कीन्ह ॥ ६३ ॥

सब कोइ बानिक पारखी। हीरा कोइ न लेइ ॥
हीरा लेगा जौहरी। जो माँगइ सो देइ ॥ ६४ ॥

दँडी चोट ज्योँ मारिये। तिहूँ लोक मेँ फेरि ॥
धुरि पहुँचे संतोष है। दादू चढिबा मेरि ॥ ९५ ॥

अनल पंखि आकास को। माया मेरि उलंध ॥
दादू उलटे पंथ चढि। जाइ बिलंबे अंध ॥ ६६ ॥

माया आगे जीव सब। ठाढ रहे करजोरि ॥
जिन सिरजे जल बूँद सोँ। ता सोँ बइठे तोरि ॥ ६७ ॥

सुर नर मुनिबर बस किये। ब्रह्मा बिस्नु महेस ॥
सकल लोक के सिर खडी। साधू के पग हेस ॥ ६८ ॥

माया चेरी संत की। दासी उस दरबार ॥
ठकुरानी सब जगत की। तीनउँ लोक मँझार ॥ ६६ ॥

माया दासी संत की। साकत की सिरताज ॥
साकत सेँती भाँडनी। संतो सेतीँ लाज ॥ १०० ॥

चारि पदारथ मुक्ति बापुरी। आठ सिद्धि नव निद्ध चेरी ॥
माया दासी ताके आगे। जहाँ भगति निरंजन तेरी ॥ १०१ ॥

कहइ ज्योँ आवइ। त्योँ जाइ बिचारी ॥
बेलसी बितडी। मैँ माथे मारी ॥ १०२ ॥

माया सब गहिरे किये । चौरासी लख जीव ॥
तिन्ह के चेरी का करइ । जो रँग राते पीव ॥ १०३ ॥
माया बैरी जीव को । जिन कोइ लावइ प्रीति ॥
माया देखइ नरक करि । यह संतन की रीति ॥ १०४ ॥
माया मत चक चाल करि । चंचल कीये जीव ॥
माया माते मद पिया । दादू बिसरा पीव ॥ १०५ ॥
जने जने को राम की । घर घर की नारी ॥
पतिव्रता नाहिँ पीय की । सो माथेँ मारी ॥ १०६ ॥
जन जन के उठि पीछे लागइ । घर घर भरमत डोलइ ॥
ता तेँ दादू खाइ तमाचे । मातल उनमुख बोलइ ॥ १०७ ॥
जो नर कामिनि परिहरइ । छूटे गरभ के बास ॥
दादू सूधो मुख नहीँ । रहे निरंजन पास ॥ १०८ ॥
रोक न राखइ झूठ न भाषइ । दादू खरचइ खाइ ॥
नदी पूर पुरवाह ज्योँ । माया आवइ जाइ ॥ १०९ ॥
सदिके सिरजनहार का । केते आवइ जाइ ॥
दादू धन संचइ नहीँ । बइठि खिलावइ खाइ ॥ ११० ॥
जोगिनि होइ जोगी गहइ । धन करि होइ धनेस ॥
भगतिन होइ भगता गहइ । करि करि नाना भेस ॥ १११ ॥
बुधि बिबेक बल हरनि । सदा त्रयताप उपावनि ॥
अंग अंगन परजालि । जीव घरबार नचावनि ॥ ११२ ॥
नाना बिधि का रूप धरि । सब बाँधे भामिनि ॥
जग बिडंब परलइ किया । हरि नावँ भुलावनि ॥ ११३ ॥
बाजीगर की पूतली । ज्योँ मरकट मोहा ॥
दादू माया राम की । सब जगत बिगोहा ॥ ११४ ॥
मोर मोरनी देखि करि । नाचइ पंख पसारि ॥
योँ दादू घर आँगने । हम नाचहिँ कइ बार ॥११५॥

जिस घट दीपक राम का। तेहि घट तिमिर न होइ ॥
उस उँजियारे जोति को। सब जग देखइ सोइ ॥ ११६ ॥
जेहि घट ब्रह्म न परगटइ। माया मंगल गाइ ॥
दादू जागइ जोति जब। माया भरम बिलाइ ॥ ११७ ॥
जोती चमकइ तिरवरे। दीपक देखइ लोइ ॥
चंद सूरुज की चाँदिनी। परगट लावा होइ ॥ ११८ ॥
दादू दीपक देह का। माया परगट होइ ॥
चौरासी लख पंछियाँ। तहाँ परइ सब कोइ ॥ ११६ ॥
यह घट दीपक साधु का। ब्रह्म जोति परकास ॥
दादू पंछी संत जन। तहाँ परहिँ निज दास ॥ १२० ॥
दादू मन मिरतक भया। इंद्री अपने हाथ ॥
तो भी कधी न कीजिये। कनककामिनी साथ ॥ १२१ ॥
जानइ बूझइ जीव सब। त्रिया पुरुष का अंग ॥
आपा पर भूला नहीँ। दादू कैसा संग ॥ १२२ ॥
माया के घट साजी होइ। त्रिया पुरुष धरि नाउँ ॥
दोनोँ सुंदर खेलइ दादू। राखि लेहु बलि जाउँ ॥ १२३ ॥
बहुत बीर सब देखिये। नारी अरु भरतार ॥
परमेस्वर के पेट के। दादू सब परिवार ॥ १२४ ॥
पर घर परिहर आपनी। सब एकइ उनहार ॥
पसु प्रानी समुझइ नहीँ। दादू मुरुख गवाँर ॥ १२५ ॥
पुरुष पलट बेटा भया। नारी माता होइ ॥
दादू कोइ समझइ नहीँ। बडा अचंभा मोइ ॥ १२६ ॥
माता नारी पुरुष की। पुरुष नारि का पूत ॥
दादू ज्ञान बिचारि करि। छाडि गये अवधूत ॥ १२७ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस लोँ। सुर नर उर छाया ॥
बिष का अम्रित नावँ धरि। सब किन्हहूँ खाया ॥ १२८ ॥

माया का जल पीवता । ब्याधी होइ बिकार ॥
सेजे का जल पीवता । प्रान सुखी सुध सार ॥ १२९ ॥
जिव गहिरा जिव बावला । जीव दिवाना होइ ॥
दादू अम्रित छाडि करि । बिष पीवइ सब कोइ ॥ १३० ॥
माया मैली गुन भई । धरि धरि उज्जल नावँ ॥
दादू मोहइ सबहि कों । सुर नर सब ही ठांवँ ॥ १३१ ॥
बिष का अम्रित नावँ धरि । सब कोइ खावइ ॥
दादू खारा ना कहइ । यह अचरज आवइ ॥ १३२ ॥
दादू जो बिष खाइ करि । जिन मुख में मेलइ ॥
आदि अंत परलइ गया । जो बिष सों खेलइ ॥ १३३ ॥
जिन्ह बिष खाये ते मुये । का मेरा तेरा ॥
आग पराई आपनी । सब करइ निबेरा ॥ १३४ ॥
जिन बिष पीवइ बावरे । दिन दिन बाढइ रोग ॥
देखत ही मरि जाइगा । तज बिषया रस भोग ॥ १३५ ॥
अपन पराया खाइ बिष । देखत ही मरि जाइ ॥
दादू कोइ जीवइ नहीं । यहि भोरे जिनि खाइ ॥ १३६ ॥
ब्रह्म सरीखा होइ करि । माया सों खेलइ ॥
दादू दिन दिन देखता । अपने गुन मेलइ ॥ १३७ ॥
माया मारइ लात सों । हरि को घालइ हाथ ॥
संग तजइ सब झूठ का । गहइ साच का साथ ॥ १३८ ॥
घर के मारे बन के मारे । मारे सरग पताल ॥
सूछिम मोटा गूथ करि । मढा माया जाल ॥ १३९ ॥
दादू उभासार बैठा बिचार । संभार जागत सूता ॥
तीन भवन तत्तजाल बिडारनी । तहाँ जाइगा पूता ॥ १४० ॥
मुये सरीखे होइ रहे । जीवन का का आस ॥
दादू राम बिसार करि । बांछा भोग बिलास ॥ १४१ ॥

माया रूपी राम को । सब कोई धावइ ॥
अलख आदि अनादि है । सो दादू गावइ ॥ १४२ ॥
ब्रह्मा का बेद बिस्नु की मूरति । पूजइ सब संसारा ॥
महादेव की सेवा लागे । कहाँ है सिरजनहारा ॥ १४३ ॥
माया का ठाकुर किया । माया की महामाई ॥
ऐसे देव अनंत करि । सब जग पूजन जाई ॥ १४४ ॥
माया बइठी राम होइ । कहइ मैं ही मोहनराई ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस लों । जोनी आवइ जाई ॥ १४५ ॥
माया बइठी राम होइ । ता को लखइ न कोइ ॥
सब जग मानइ सत्त करि । बडा अचंभा मोइ ॥ १४६ ॥
अंजन किया निरंजना । गुन निर्गुन जानइ ॥
धरा दिखावइ अधर करि । कैसे मन मानइ ॥ १४७ ॥
नीरंजन की बात कहि । आवइ अंजन माहिं ॥
दादू मन मानइ नहीं । सरग रसातल जाहिं ॥ १४८ ॥
कामधेनु के पटतरइ । करइ काठ की गाइ ॥
दादू दूध दुहइ नहीं । मूरख देइ बहाइ ॥ १४६ ॥
चिंतामनि कंकर किया । मागे कछू न देइ ॥
दादू कंकर डारि दे । चिंतामनि कर लेइ ॥ १५० ॥
पारस किया पषान का । कंचन कधी न होइ ॥
दादू आतम राम बिन । भूलि पडा सब कोइ ॥ १५१ ॥
सूरुज फटिक पषान का । तासों तिमिर न जाइ ॥
साचा सूरुज परगटइ । दादू तिमिर नसाइ ॥ १५२ ॥
मूरति खडी पषान की । कीया सिरजनहार ॥
दादु साच सूझइ नहीं । यों बूडा संसार ॥ १५३ ॥
पुरुष बदे कामिनि किया । उस ही के उनहारि ॥
कारज को सिझइ नहीं । दादू माथै मारि ॥ १५४ ॥

कागद का मानस किया । छत्रपती सिरमौर ॥
राज पाट साधइ नहीं । दादू परिहर और ॥ १५५ ॥
सकल भुवन भाँडे घने । चतुर चलावनहार ॥
दादू सो सूझइ नहीं । तिसका वार न पार ॥ १५६ ॥
पहिली आप उपाय करि । न्यारा पद निर्बान ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस मिलि । बाँधा सकल बँधान ॥ १५७ ॥
नावँ नीति अनीति सब । पहिली बाँधे बंद ॥
पसू न जानहिँ पारधी । दादू रोये बंद ॥ १५८ ॥
दादू बाँधे बेद बिधि । भरम करम उरझाइ ॥
मरजादा माहैँ रहइ । सुमिरन किया न जाइ ॥ १५९ ॥
दादु माया मिठबोलिनी । नय नय लागइ पाइ ॥
दादू पइठइ पेट मेँ । काटि करेजा खाइ ॥ १६० ॥
नारी नागनि जे डँसे । ते नर मुये निदान ॥
दादू कोइ जीवइ नहीं । पूछउ सबइ सयान ॥ १६१ ॥
नारी नागिनि एक सी । बाघिनि बडी बलाइ ॥
दादू जे नर रत भये । तिन्हका सरबस खाइ ॥ १६२ ॥
नारी नैन न देखिये । मुख सोँ नावँ न लेहु ॥
कानो कामिनि जिन सुनउ । यह मन जान न देहु ॥ १६३ ॥
सुंदर खाये साँपिनी । केते येहि कलि माहिँ ॥
आदि अंत इन सब डँसे । दादू चेतइ नाहिँ ॥ १६४ ॥
दादू पइठइ पेट मेँ । नारी नागिनि होइ ॥
दादू प्रानी सब डँसे । काढि सकइ नहिँ कोइ ॥ १६५ ॥
माया साँपिनि सब डँसे । कनककामिनी होइ ॥
ब्रह्मा विस्नु महेस लौँ । दादू बचइ न कोइ ॥ १६६ ॥
माया मारे जीव सब । खंड खंड करि खाइ ॥
दादू घट का नास करि । रोवइ जग पतिआइ ॥ १६७ ॥

बाबा कहि कहि के गिरइ । भाई कहि कहि खाइ ॥
पूत पूत कहि पी गई । पुरुषा जिन पतिआइ ॥ १६८ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस की । नारी माता होइ ॥
दादू खाये जीव सब । जिन न पतीजे कोइ ॥ १६९॥
माया बहुरूपी नटिनि । सुर नर मुनि को मोहै ॥
ब्रह्मा बिस्नु महादेव बाहे । दादू बपुरा को है ॥ १७० ॥
माया फाँसी हाथ ले । बइठी गोपि छिपाइ ॥
जे क्रोधी जे प्रानियाँ । ताही के गल बाइ ॥ १७१ ॥
पुरुषा फाँसी हाथ करि । कामिनि के गल बाइ ॥
नारि कटारी कर गहइ । मारि पुरुष का खाइ ॥ १७२ ॥
नारी बैरनि पुरुष की । पुरुषा बैरी नारि ॥
अंतकाल दोनोँ मुये । दादू देखि बिचारि ॥ १७३ ॥
नारि पुरुष को ले मुई । पुरुषा नारी साथ ॥
दादू दोनोँ पचि गये । कछू न आया हाथ ॥ १७४ ॥
भवँरा लुबधी बास का । कमल बँधाना आइ ॥
दिन दस माहैँ देखता । दोनोँ गये बिलाइ ॥ १७५ ॥
नारी पीवइ पुरुष कोँ । पुरुष नारि को खाइ ॥
दादू गुरु के ज्ञान बिन । दोनोँ गये बिलाइ ॥ १७६ ॥

इति माया को अंग संपूर्णम् ॥ १२ ॥

---*---

अथ साच को अंग ।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
दादु दया जिन्ह के नहीं । बहुरि कहावइ साध ॥
जो मुख उनका देखिये । लागइ बहु अपराध ॥ २ ॥
मेहरि मुहब्बति मन नहीं । दिल के बज्र कठोर ॥
काले काफिर ते अहहिं । मोमिन मालिक और ॥ ३ ॥
कोई काहू जीव की । करइ आतमाघात ॥
साच कहूँ संसा नहीं । सोई दोजगि जात ॥ ४ ॥
नाहर सिंह सियार सब । केते मुसलमान ॥
मास खाइ मोमिन भये । बडे मियाँ का ज्ञान ॥ ५ ॥
मासअहारी जो नरा । ते नर सिंह सियार ॥
बाग मँझार सुनहा सही । एता परतछ काल ॥ ६ ॥
मुई मार मानस घने । ते परतछ जमकाल ॥
मेहरि दया नहिं सिंह दिल । कूकर काग सियाल ॥ ७ ॥
मासअहारी मद पिवइ । बिषय बिकारी सोइ ॥
दादू आतम राम बिन । दया कहाँ तें होइ ॥ ८ ॥
लंगर लोग लोभ सो लागइ । बोल सदा उनहूँ की भीर ॥
जोर जुलुम बीच बाट पर । आदि अंत उनहीं सौं सीर ॥ ९ ॥
तन मन मारि रहे साईं सौं । तिनको देखि करइ ताजीर ॥
ये बडि बूझि कहाँ तें पाई । ऐसी कजा अउलिया पीर ॥१०॥
बे मेहर गुमराह ग़ाफ़िल । गोस्त खुरदनी ॥
बे दिल बदकार आलम । हयात मुरदनी ॥ ११ ॥

छल करि बल करि धाइ करि। मारइ जेहि तेहि फेरि॥
दादू ताहि न दीजिये। परइ न सगी पितेरि॥ १२॥

दुनियाँ सौं दिल बाँधि करि। बैठे दीन गवाँइ॥
नेकी नावँ बिसारि करि। मरद कसाई खाइ॥ १३॥

गर काटइ कलमा भरइ। आय बिचारा दीन॥
पाँचो बखत निवाज गुजारइ। साबति नहीँ अकीन॥ १४॥

दुनियाँ के पीछे पडा। दौडा दौडा जाइ॥
दादू जिन पैदा किया। साहिब को छिटकाइ॥ १५॥

कूकर जाके मन रमे। मीयाँ मुसलमान॥
दादू सेया भंग मेँ। बीसारे रहिमान॥ १६॥

आपस को मारइ नहीँ। पर को मारन जाइ॥
दादु आप मारे बिना। कैसे मिलइ खुदाइ॥ १७॥

भीतरि दुंदर भरि रहे। तिन्ह को मारइ नाहिँ॥
साहिब के अरवाह को। ताको मारन जाहिँ॥ १८॥

दादु मुये को मारिये। माया मुइ मुइ मार॥
आपस को मारइ नहीँ। औरोँ को हुँसियार॥ १९॥

जिस का था तिस को हुआ। तब काहे को दोस॥
दादू बंदा बंदगी। मीयाँ ना कर रोस॥ २०॥

सेवक सिरजनहार का। साहिब का बंदा॥
दादू सेवा बंदगी। दूजा का धंधा॥ २१॥

सोइ काफिर जो बोलइ काफ। दिल अपनी नहिँ राखइ साफ॥
साईँ को पहिचानइ नाहीँ। कूढ कपट सब उन्हहीँ माहीँ॥२२॥

साईँ का फुरमान न मानइ। कहा पीय ऐसइ करि जानइ॥
मन अपने मेँ समझत नाहीँ। निरखत चलइ आपनी छाहीँ॥२३॥

जोर करइ मस्तकि न सतावइ। उसके दिल मेँ दरद न आवइ॥
साईँ सेती नाहीँ नेह। गरब करइ अति अपनी देह॥ २४॥

इन बातन को पाइये पीव । परधन ऊपर राखइ जीव ॥
जोर जुलुम करि कुटुँब जो खाई । सो काफिर दोजग में जाई॥२५

जाको मारन जाइये । सोई फिरि मारइ ॥
जाको मारन जाइये । सोई फिरि तारइ ॥ २६ ॥

दादू नफ्स नावँ सौं मारिये । गोस माल दे पंद ॥
दाँई है सो दूरि करि । तब घर में आनंद ॥ २७ ॥

मुसलमान जो राखइ मान । साँईं का मानइ फुरमान ॥
सारों को सुखदाई होई । मुसलमान करि जानउँ सोई ॥ २८ ॥

मुसलमान मेहर गहि रहइ । सबको सुख की सही न दहइ ॥
मुआ न खाइ जिअवत नहिं मारइ । करइ बंदगी राह सँवारइ॥२९॥

सो मोमिन मन में करि जानि । सत्य सबूरी बइसइ आनि ॥
चलइ साच सँवारइ बाट । तिनको खुले भिस्त के पाट ॥ ३० ॥

सो मोमिन जो मोम दिल होई । साँईं को पहिचानइ सोई ॥
जोर न करइ हराम न खाइ । सोई मोमिन भिस्त में जाइ ॥३१

जो हम नहीं गुजारते । तुमको का भाई ॥
सिर नाहीं कुछ बंदगी । कहु क्यों फरमाई ॥ ३२ ॥

अपने अमलउ छूटिये । काहू के नाहीं ॥
सोई पीर पुकारसी । जो दूखइ माहीं ॥ ३३ ॥

कोई खाइ अघाइ करि । भूखे क्यों भरिये ॥
खूँटी पूगी आन की । आपइ क्यों मरिये ॥ ३४ ॥

फूटी नाव समुद्र में । सब डूबन लागे ॥
अपना अपना जीव ले । सब कोई भागे ॥ ३५ ॥

सिर सिर लागी अपने । कहु कवन बुझावइ ॥
अपना अपना साथ दे । साँईं को भावइ ॥ ३६ ॥

साचा नावँ अलाह का । सोई सत करि जानि ॥
निहचल करि ले बंदगी । दादू सो परवानि ॥ ३७ ॥

आवट कूटा होत है। अवसर बीता जाइ॥
दादू करि ले बंदगी। राखनहार खुदाइ॥ ३८॥
इस कलि में केते होइ। गये हिंदू मुसलमान॥
दादू साची बंदगी। झूठा सब अभिमान॥ ३९॥
पोथी अपनी पाठ करि। हरि जस माहैं लेख॥
पंडित पारायन करइ। दादू कथहु अलेख॥ ४०॥
काया हमारी किताब कहिये। लिखि राखउ रहिमान॥
मन हमारा मुल्ला कहिये। सुरता है सुभहान॥ ४१॥
कया महल में निमाज गुजारइ। तहाँ और न आवन पावइ॥
मन मनि के तहँ तसबी फेरइ। तब साहिब के वह मन भेवइ॥४२॥
दिल दरिया में कुसल हमारा। ऊजू करि चित लाऊँ॥
साहिब आगे करउँ बंदगी। बेर बेर बलि जाऊँ॥ ४३॥
पाँचउ संगि सँभारूँ साईं। तन मन तो सुख पाऊँ॥
प्रेम पियारा पिय जो देवइ। कलमा ये लेइ लाऊँ॥ ४४॥
सोभा कारन सब करइ। रोजा बाँग निवाज॥
सुआ न एकइ आहि सो। साहिब सेतीं काज॥ ४५॥
रोज हजूरी होइ रहु। काहे करइ कलाप॥
मुल्ला तहाँ पुकारिये। अरस इलाही आप॥ ४६॥
हरदम हाजिर होना बाबा। जब लग जीवइ बंदा॥
दादू मंदिर साईं सेंती। पाँच बखत का धँधा॥४७॥
हिंदू मारग कहइ हमारा। तुरुक कहइ रह मेरी॥
कहाँ पंथ है कहो अलख का। तुम्ह तो ऐसी हेरी॥ ४८॥
दो दरोग लोग को भावइ। साईं साच पियारा॥
कौन पंथ हम चलइ कहो धौं। संतो करहु बिचारा॥ ४९॥
खंड खंड करि ब्रह्म को। पख पख लीया बाँट॥
दादू पूरनब्रह्म तजि। बाँधे भरम कि गाँठ॥ ५०॥

जीवत दीसइ रोगिया । मूआ पीछे जाइ ॥
दादू दुख के पाढ में । ऐसी दारू लाइ ॥ ५१ ॥
सो दारू किस काम की । जा तें दरद न जाइ ॥
दादू काटइ रोग को । सो दारू ले लाइ ॥ ५२ ॥
अनभव काटइ रोग को । अनहद उपजइ आइ ॥
सेझे काजर निर्मला । पीवइ रुचि लव लाइ ॥ ५३ ॥
अनभव सोई उपजई । सोइ सबद तत सार ॥
सुनतहि तेहि साहिब मिलइ । मन के जाहिं बिकार ॥ ५४ ॥
ओखद खाइ न पचि रहइ । विषम ब्याधि क्यों जाइ ॥
दादू रोगी बावरा । दोस बैद को लाइ ॥ ५५ ॥
एक सेर का काथढ़ा । क्यों ही भखा न जाइ ॥
भूख न भागी जीव की । दादू केता खाइ ॥ ५६ ॥
पसु की नाईं भरि भरि खाइ । ब्याधि घनेरी बढती जाइ ॥
पसु की नाईं करइ अहार । दादू बाढइ रोग अपार ॥५७॥
रामरसायन भरि भरि पीवइ । दादू जोगी जुग जुग जीवइ ॥५८॥
दादू चारइ चित दिया । चिंतामनि को भूलि ॥
जनम अमोलिक जात है । बइठे माँझी फूलि ॥ ५९ ॥
भरी अघोरी भाव की । बइठा पेट फुलाइ ॥
दादू सूकर स्वान ज्यों । ज्यों भावइ त्यों खाइ ॥ ६० ॥
खाटा मीठा खाइ करि । स्वाद चित दिया ॥
इन में जीव बिलंबिया । हरि नावँ न लिया ॥ ६१ ॥
भगति न जानइ राम की । इंद्री के आधीन ॥
दादू बंधा स्वाद सौं । ताने नाव न लीन ॥ ६२ ॥
अपना नीका राखिये । अपना दिया बहाइ ॥
अपने सेतीं काज है । भावइ तिधरि मैं जाइ ॥ ६३ ॥
जो हम जाना एक करि । काहे लोक रिसाइ ॥

मेरा था सो मैं लिया। लोगों का का जाइ ॥ ६४ ॥
दादू दो दो पद किये। साखी भी दो चार ॥
हमको अनभव ऊपजी। हम ज्ञानी संसार ॥ ६५ ॥
सुनि सुनि परचे ज्ञान के। साखी सबदा होइ ॥
तब हीं आपा उपजई। हम से और न कोइ ॥ ६६ ॥
सो उपजी किस काम की। जो जन करइ कलेस ॥
साखी समुझइ साधु की। ज्यों रसना रस सेस ॥ ६७ ॥
पद जोडइ साखी कहइ। विषय न छाडइ जीव ॥
पानी घालि बिलोइये। क्यों करि निकसइ घीव ॥ ६८ ॥
पद जोडे का पाइये। साखी कहे का होइ ॥
सत्त सिरोमनि साइँयाँ। तत्त न चीन्हा सोइ ॥ ६९ ॥
कहिबे सुनिबे मन खुसी। करिबा औरइ खेल ॥
बातें तिमिर न भाजई। दीया बाती तेल ॥७०॥
करिबेवाले हम नहीं। कहिबे को हम सूर ॥
कहिबा हम तें निकट है। करिबा हम तें दूर ॥ ७१ ॥
कहे कहे का होत है। कहे न सीझइ काम ॥
कहा कहे का पाइये। हृदय न आवइ राम ॥ ७२ ॥
कहइ राम कहाँ तें जोडिबा। राम कहाँ ते साखी ॥
राम कहाँ ते गाइबा। राम कहाँ ते राखी ॥ ७३ ॥
दादू सुरता घरि नहीं। बकत बकइ सो बादि ॥
कहता सुरता एक रस। कथा कहावइ आदि ॥ ७४ ॥
कहता सुरता घरि नहीं। कहइ सुनइ को राम ॥
दादू यह मन थिर नहीं। बादि बकइ बेकाम ॥ ७५ ॥
भेषा देखी सब चले। पार न पहुँचा जाइ ॥
दादू आसनि पहिरि के। फिरि फिरि बइठे आइ ॥ ७६ ॥
पार सुरझे समझ करि। फिरि नहिँ अरुझे जाइ ॥

बाहरि सुरझे देखता । बहुरि अरूझे आइ ॥ ७७ ॥
आतम लावइ आप सोँ । साहिब सेती नाहिँ ॥
दादू कोइ निबहइ नहीँ । दोनोँ निहफल जाहिँ ॥ ७८ ॥
तूँ मुझको मोटा कहइ । तुझे बडाई मान ॥
साईँ को समुझइ नहीँ । दादू झूठा ज्ञान ॥ ७९ ॥
सेवक नावँ बुलाइये । सेवा सपने नाहिँ ॥
नावँ धराये का भया । एक नहीँ मन माहिँ ॥ ८० ॥
नावँ धरावइ दास का । दासा तन तेँ दूर ॥
दादू कारज क्योँ सरइ । हरि सोँ नहीँ हजूर ॥ ८१ ॥
भगत न होवइ भगति बिन । दासा तन बिन दास ॥
बिन सेवा सेवक नहीँ । दादू झूठी आस ॥ ८२ ॥
रामभगति भावइ नहीँ । अपनी भगति का भाव ॥
रामभगति मुख सोँ कहइ । खेलइ अपना दाव ॥ ८३ ॥
भगति निराली रह गई । भूलि पडे बन माहिँ ॥
भगति निरंजन राम की । दादू पावइ नाहिँ ॥ ८४ ॥
सोइ दसा कतहूँ रही । जेहि दिसि पहुँचे साधु ॥
मैँ तैँ मूरख गहि रहे । लोभ बढाई बाध ॥ ८५ ॥
दादू राम बिसारि करि । किये बहुत अपराध ॥
लाजोँ मरिंगे संत सब । नावँ हमारा साध ॥ ८६ ॥
मनसा के पकवान सोँ । क्योँ पेट भरावइ ॥
ज्योँ कहिये त्योँ कीजिये । तब ही बनि आवइ ॥ ८७ ॥
मिस्री मिस्री कीजिये । मुख मीठा नाहीँ ॥
मीठा तब ही होइगा । छिटकावइ माहीँ ॥ ८८ ॥
बातही पहुँचइ नहीँ । घर दूर पयाना ॥
मारग पंथ उठि चले । दादू सोई सयाना ॥ ८९ ॥
बातेँ सब कुछ कीजिये । अंत कछू ना देखइ ॥

मनसा बाचा करमना। तब लागे लेखइ ॥ ९० ॥
कासों कहि समुझाइये। सब कोइ चतुर सुजान ॥
कीरी कुंजर आदि ले। नाहीं कोई अजान ॥ ॥ ९१ ॥
सूना घट सोधी नहीं। पंडित ब्रह्मा पूत
अगम निगम सब सब कथइ। घर में नाचइ भूत ॥ ९२ ॥
पढे न पावइ परम गति। पढे न लाँघइ पार ॥
पढे न पहुँचहिं प्रानियाँ। दादू पीर पुकार ॥ ९३ ॥
दादू निबरे नावँ बिन। झूठा कहते ज्ञान ॥
बइठे सिर खाली करहिं। पंडित बेद पुरान ॥ ९४ ॥
केते पुस्तक पढि मुये। पंडित बेद पुरान ॥
केते ब्रह्मा कथि गये। नाहीं राम समान ॥ ९५ ॥
सब हम देखा सोधि करि। बेद कुरानों माहिं ॥
जहाँ निरंजन पाइये। देस दूर इत नाहिं ॥ ९६ ॥
पढि पढि थाके पंडिता। किन्हहुँ न पाया पार ॥
कथि कथि थाके मुनिजना। दादू नाहिं अधार ॥ ९७ ॥
काजी कजा न जानहीं। कागद हाथ कतेब ॥
पढते पढते दिन गये। भीतरि नाहीं भेव ॥ ९८ ॥
मसि कागद के आसरे। क्यों छूटइ संसार ॥
राम बिना छूटइ नहीं। दादू भरम बिकार ॥ ९९ ॥
कागद काले करि मुये। केते बेद पुरान ॥
एकइ अच्छर पीय का। दादू पढइ सुजान ॥ १०० ॥
कहते कहते दिन गये। सुनते सुनते जाइ ॥
दादू ऐसा कोइ नहीं। कहि सुनि राम समाइ ॥ १०१ ॥
मौन गहइ ते बावरे। बोले खरे अयान ॥
सहजइ रहते राम सोँ। दादू सोई सयान ॥ १०२ ॥
कहते सुनते दिन गये। होइ कछू नहिं आवा ॥

दादू हरि की भगति बिन । प्रानी पछतावा ॥ १०३ ॥

दादु कहानी और कुछ । करनि करइ कुछ और ॥
तिन्ह ते मेरा जिव डरइ । जिन्हके ठीक न ठौर ॥ १०४ ॥

अंतर गति औरइ कछू । मुख रसना कछु और ॥
दादू करनी और कुछ । तिन्ह को नाहीँ ठौर ॥ १०५ ॥

राम मिलन को कहत हैँ । करतब है कछु और ॥
ऐसे पिय क्योँ पाइये । समुझि लेहु मन बौर ॥ १०६ ॥

बगनी भंगा खाइ करि । मतवाले माजी ॥
पइका नाहीँ गाठडी । पतिसाही खाजी ॥ १०७ ॥

दादू ढोटा दालदी । लाखोँ का व्योपार ॥
पइका नाहीँ गाठडी । सिरई साहूकार ॥ १०८ ॥

ये सब हैँ किस पंथ मेँ । धरती अरु असमान ॥
पानि पवन दिन रात का । चंद सूर रहिमान ॥ १०९ ॥

ब्रह्मा बिस्नु महेस का । कौन पंथ गुरुदेव ॥
साईँ सिरजनहार तूँ । कहिये अलख अभेव ॥ ११० ॥

महमद थे किस दीन मेँ । जबरईल किस राह ॥
इन्हके मुरसिद पीर को । कहिये एक अलाह ॥ १११ ॥

ये सब किसके होइ रहे । यह मेरे मन माहिँ ॥
अलख इलाही जगत गुरु । दूजा कोई नाहिँ ॥ ११२ ॥

औरैँ ही औलाद के । थी पास दइ बीयँनि ॥
सो तूँ माया ना घुरइ । जो मीया मीयँनि ॥ ११३ ॥

आई रोजी ज्योँ गई । साहिब का दीदार ॥
गहिरा लोगो कार मेँ । देखइ नहीँ गवाँर ॥ ११४ ॥

सोई सेवक राम का । जिसे न दूजी चीत ॥
दूजा को भावइ नहीँ । एक पियारा मीत ॥ ११५ ॥

अपनी अपनी जाति सोँ । सब कोइ बैसइ पाँति ॥

दादू सेवक राम का । ता को नहीँ भराँति ॥ ११६ ॥
चोर अन्याई मसखरा । सब मिलि बैसइ पाँति ॥
दादू सेवक राम का । तिन्ह सोँ करइ भराँति ॥ ११७ ॥
सूप बजाये क्योँ ढलइ । घर मेँ बड़ी बलाइ ॥
काल जाल इस जीव का । बातन ही क्योँ जाइ ॥ ११८ ॥
साँप गया सहिनान को । सब मिलि मारइ लोक ॥
दादू ऐसा देखिये । कुल का डगरा फोक ॥ ११६ ॥
दादू दोनोँ भरम है । हिंदू तुरुक गवाँर ॥
जो दुहुँ बातेँ रहित हैँ । सो गह तत्त बिचार ॥ १२० ॥
अपना अपना करि लिया । भंजन माहैँ बाहि ॥
दादू एकइ कूपजल । मन का भरम उठाइ ॥ १२१ ॥
पानी के बहु नाम धरि । नाना बिधि की जाति ॥
बोलनहारा कौन है । कहहु धौँ कहाँ समाति ॥ १२२ ॥
पूरन ब्रह्म बिचारिये । सकल आतमा एक ॥
काया के गुन देखिये । नाना बरन अनेक ॥ १२३ ॥
लीला राजा राम की । खेलहिँ सबही संत ॥
आपा पर एकइ भये । छूटी सबइ भरंत ॥ १२४ ॥
भाव भगति उपजइ नहीँ । साहिब का परसंग ॥
बिषय बिकार छुटइ नहीँ । सो कैसा सतसंग ॥ १२५ ॥
बासन बिषय बिकार के । तिन को आदर मान ॥
संगी सिरजनहार के । तिन सोँ गरब गुमान ॥ १२६ ॥
अंधे को दीपक दिया । तौ भी तिमिर न जाइ ॥
सोधी नहीँ सरीर को । ता सन का समझाइ ॥ १२७ ॥
कहिये कुछ उपकार को । मानइ अवगुन दोक ॥
अंधे कूप बताइयाँ । सत्त न मानइ लोक ॥ १२८ ॥
कालर खेत न उपजई । जो बोवइ सौ बार ॥
दादू हानी बीज का । का पचि मरहिँ गवाँर ॥ १२६ ॥

कंकर पत्थर सेइया । अपना मूल गवाँइ ॥
अलख देव अंतर बसइ । का दूजे जग जाइ ॥ १३० ॥
पत्थर पीवइ धोइ कर । पत्थर पूजइ प्रान ॥
अंत काल पत्थर भये । बहु बूडे येहि ज्ञान ॥ १३१ ॥
कंकर बाँधी गाँठरी । हीरे के बिस्वास ॥
अंत काल हरि जौहरी । दादू सूत कपास ॥ १३२ ॥
पहिले पूजइ ढाढसी । अब भी ढाढस बानि ॥
आगे ढाढस होइगा । दादु सत्त करि जानि ॥ १३३ ॥
दादू पैंडे पाप के । कधी न दीजइ पावँ ॥
पैंडे मेरा पी मिलइ । तेहि पैंडे का चाव ॥ १३४ ॥
सुकरित मारग चालना । बुरा न कबहूँ होइ ॥
अम्रित खाता प्रानियाँ । मुआ न सुनिबा कोइ ॥ १३५ ॥
कुछ नाहीं का नावँ का । जो धरिये सो झूट ॥
सुर नर मुनि सब बाँधिया । लोका आवट कूट ॥ १३६ ॥
कुछ नाहीं का नावँ धरि । भरमा सब संसार ॥
साच झूठ समझइ नहीं । ना कुछ किया बिचार ॥ १३७ ॥
कोई दौडे द्वारिका । कोई कासी जाहिं ॥
कोई मथुरा को चले । साहिब घट ही माहिं ॥ १३८ ॥
पूजनहारे पास हैं । देही माहैं देव ॥
दादू ताको छाडि कर । बाहर माडी सेव ॥ १३९ ॥
ऊपर आलम सब करहिं । साधू जन घट माहिं ॥
दादू एता अंतरा । ता तें बनती नाहिं ॥ १४० ॥
दादू सब थे एक के । सो एक न जाना ॥
जने जने का होइ गया । यह जगत दिवाना ॥ १४१ ॥
झूठा साचा करि लिया । बिष अम्रित जाना ॥
दुख को सुख सब कोइ कहइ । ऐसा जगत दिवाना ॥ १४२ ॥

सूधा मारग साच का। साचा होइ सो जाइ॥
झूठा कोई ना चलइ। दादू दिया दिखाइ॥ १४३॥
साहिब सोँ साचा नहीं। यह मन झूठा होइ॥
दादू झूठे बहुत हैं। साचा बिरला कोइ॥ १४४॥
साचा अंग न ठेलिये। साहिब मानइ नाहिं॥
साचा सिर पर राखिये। मिलि रहिये ता माहिं॥ १४५॥
जो कोइ ठेलइ साच कौं। साचा रहइ समाइ॥
कउडी भर क्योँ दीजिये। रतन अमोलिक जाइ॥ १४६॥
साचे साहिब को मिले। साचे मारग जाइ॥
साचे सोँ साचा भया। साचे लिये बुलाइ॥ १४७॥
साचा साहिब सेइये। साची सेवा होइ॥
साचा दरसन पाइये। साचा सेवक सोइ॥ १४८॥
साचे का साहिब धनी। समरथ सिरजनहार॥
पाखँड की यह पिरथिवी। परपँच का संसार॥ १४९॥
झूठा परगट साचा छानइ। तिनकी दादू राम न मानइ॥१५०॥
पाखँडि पिय ना पाइये। अंतर साच न होइ॥
ऊपर तेँ क्योँ ही रहहु। भीतर के मल धोइ॥ १५१॥
साच अमर जुग जुग रहइ। दादू बिरला कोइ॥
झूठ बहुत संसार में। उतपति परलय होइ॥ १५२॥
दादू झूठा बदलिये। साच न बदला जाइ॥
साचा सिर पर राखिये। साधु कहहिं समुझाइ॥ १५३॥
साच न सूझइ जब लगा। तब लग लोचन अंध॥
दादू मुकता छाडि करि। गल में घाला फंध॥ १५४॥
साच न सूझइ जब लगा। तब लग लोचन नाहिं॥
दादू निहबँध छाडि करि। बँधा होइ पख माहिं॥ १५५॥
एक साच सोँ गह गही। जीवन मरन निबाहि॥
दादू दुखिया राम बिन। भावइ तीधरि जाइ॥ १५६॥

छानहिँ छानहिँ कीजिये । चौडे परगट होइ ॥
दादू पैठि पताल मेँ । बुरा करइ जिन कोइ ॥ १५७ ॥
अनकीया लागइ नहीँ । कीया लागइ आइ ॥
साहिव के दर न्याव है । जो कुछ रामरजाइ ॥ १५८ ॥
सोइ जन साधू सिद्ध सो । सोइ सतबादी सूर ॥
सोइ मुनिवर दादू बडे । सनमुख रहनि हजूर ॥ १५९ ॥
सोइ जन साचे सोइ सती । सो साधक सो सुजान ॥
सोइ ज्ञानी सोइ पंडिता । जो रटहीँ भगवान ॥ १६० ॥
सोइ जोगी सोइ जंगमा । सोइ सोफी सोइ सेख ॥
संन्यासी सोइ सेवडा । दादू एक अलेख ॥ १६१ ॥
सोइ काजी सोई मुला । सोइ मोमिन मुसलमान ॥
सोई सयाने सब भले । जो रहते रहिमान ॥ १६२ ॥
राम नाम को बेचन बैठे । तातेँ मढा है हाट ॥
साईँ सो सौदा करइ । दादू खोलि कपाट ॥ १६३ ॥
बिच केसरि खाली करइ । पूरे सुख संतोष ॥
दादू सुध बुध आतमा । ताहि न दीजइ दोष ॥ १६४ ॥
सुध बुध सोँ दुख पाइये । साध बिबेकी होइ ॥
दादू ये बिच के बुरे । दाधेँ रीगे सोइ ॥ १६५ ॥
जो कोई हरि नावँ मेँ । हम को हानी नाइ ॥
ता तेँ तुम्ह से डरत हैँ । क्योँ ही टलइ बलाइ ॥ १६६ ॥
एक राम छाडइ नहीँ । छाडइ सकल बिकार ॥
दूजा सहजहिँ होइ सब । दादू का मत सार ॥ १६७ ॥
जो तूँ चाहइ राम को । एक मना आराधु ॥
दादू दूजा दूर करि । मन इंद्री करि साधु ॥ १६८ ॥
कबिर बिचारा कहि गया । बहुत भाँति समुझाइ ॥
दादू दुनिया बावरी । ता के संग न जाइ ॥ १६९ ॥

पावहिँगे उस ठौर को। लाँघहिँगे यह घाट॥
दादू क्या कहि बोलिये। आज बीचही बाट॥ १७०॥
साचा राता साच सोँ। झूठा राता झूठ॥
दादू न्याव न बेरिये। सब साधू को पूछ॥ १७१॥
जे पहुँचे ते कहि गये। तिनकी एकइ बात॥
सबइ सयाने एक मत। उनकी एकइ जात॥ १७२॥
जे पहुँचे ते पूछिये। तिनकी एकइ बात॥
सब साधू का एक मत। बीच के बारह बाट॥ १७३॥
सबइ सयाने कहि गये। पहुँचे का घर एक॥
दादू मारग मानि ले। तिनकी बात अनेक॥ १७४॥
सूरुज साखी भूत है। साच करइ परकास॥
चोर डरहिँ चोरी करहिँ। रैन तिमिर का नास॥ १७५॥
चोर न भावइ चाँदनी। जिनि उँजियारा होइ॥
सूते का सब धन हरउँ। मुझे न देखइ कोइ॥ १७६॥
घट घट दादू कहि समझावइ। जैसा करइ सो तैसा पावइ॥१७७

इति साच को अंग संपूर्णम्॥ १३॥

——:o:——

अथ भेष को अंग ।

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
दादू बूडे ज्ञान सब । चतुराई जर जाइ ॥
अंजन मंजन फूँकि दे । रहहु राम लव लाइ ॥ २ ॥
राम बिना फीके लगहिँ । करनी कथनी ज्ञान ॥
सकल अबिरथा कोट करि । दादू जोगवइ ध्यान ॥ ३ ॥
ज्ञानी पंडित बहुत हैँ । दाता सूर अनेक ॥
दादू भेष अनंत हैँ । लागि रहा सो एक ॥ ४ ॥
कोरा कलस अलाह का । ऊपरि चित्र अनेक ॥
का कीजइ सो बस्त्र बिन । ऐसे नाना भेष ॥ ५ ॥
बाहर दादू भेष बिन । भीतर बस्त्र अगाध ॥
सो ले हिरदय राखिये । दादू सनमुख साध ॥ ६ ॥
भाँडा भरि धरि बस्तु सोँ । महँगे मोल बिकाइ ॥
खाली भाँडा बस्तु बिन । कउडी बदलइ जाइ ॥ ७ ॥
कनक कलस बिष सोँ भरा । सो किस आवइ काम ॥
सो धन कूटा चाम का । जा मेँ अम्रित राम ॥ ८ ॥
दादू देखइ बस्तु को । बासन देखइ नाहिँ ॥
दादू भीतर भरि धरा । सो मेरे मन माहिँ ॥ ९ ॥
जो तूँ समझइ तो कहूँ । साचा एक अलेख ॥
डार पात तजि मूल गहि । का दिखलावइ भेख ॥ १० ॥
सब दिखलावहिँ आप को । नाना भेष बनाइ ॥
आपा मेटन हरि भजन । तेहि दिसि कोई न जाइ ॥ ११ ॥

सोइ दसा कतहूँ रही । जेहि दिसि पहुँचे साध ॥
मैं तो मूरुख गहि रहा । लोभ बडाई बाद ॥ १२ ॥
भेष बहुत संसार में । हरिजन बिरला कोइ ॥
हरिजन दाता राम सों । दादू एकइ होइ ॥ १३ ॥
हीरा रीझइ जौहरी । खल रीझइ संसार ॥
स्वामि साधु यह अंतरा । दादू सत्त बिचार ॥ १४ ॥
स्वामि साधु बहु अंतरा । जेता धरति अकास ॥
साधू दाता राम सों । स्वामि जगत की आस ॥ १५ ॥
स्वामी सब संसार है । साधू बिरला कोइ ॥
जैसे चंदन बासना । बन बन कहीं न होइ ॥ १६ ॥
स्वामी सब संसार है । साधू कोई एक ॥
हीरा दूर दिसंतरा । कंकर और अनेक ॥ १७ ॥
स्वामी सब संसार है । साधु समंदा पार ॥
अनल पंछि कहँ पाइये । पंछी कोटि हजार ॥ १८ ॥
स्वामी सब संसार है । साधू सोधि सुजान ॥
पारस परदे सों भया । दादू बहुत पखान ॥ १९ ॥
दादू चंदन बन नहीं । सूरन के दल नाहिं ॥
सकल समँद हीरा नहीं । त्यों साधू जग माहिं ॥ २० ॥
जो साईं का होइ रहइ । साईं तिसका होइ ॥
दादू दूजी बात सब । भेष न पावइ कोइ ॥ २१ ॥
स्वामि सगाई कुछ नहीं । राम सगाई साच ॥
दादू नाता नावँ का । दूजइ अंग न राच ॥ २२ ॥
दादू एकइ आतमा । साहिब है सब माहिं ॥
साहिब के नाते मिलइ । भेष पंथ के नाहिं ॥ २३ ॥
माला तिलक सो कुछ नहीं । काहू सेतीं काम ॥
अंतर मेरे एक है । अहनिसि उस का नाम ॥ २४ ॥

भेष धरे मिथ्या बोलइ । निंदा पर अपबाद ॥
साचे को झूठा कहइ । लागइ बहु अपराध ॥ २५ ॥
कबहूँ कोई जिन मिलइ । भगत भेष सोँ आइ ॥
जीव जनम का नास है । कहइ अम्रित विष खाइ ॥ २६ ॥
पहुँचे पूत पठाउ करि । नट ज्योँ काछा भेष ॥
खबरि न पाई खोज की । हम को मिला अलेख ॥ २७ ॥
माया कारन मूँड मुडाया । यह तो जोग न होइ ॥
पारब्रह्म सोँ परचा नाहीँ । कपट न सीझइ कोइ ॥ २८ ॥
पीय न पावइ बावरी । रचि रचि करइ सिँगार ॥
दादू फिरि फिरि जगत सोँ । सो करैगी बिभिचार ॥ २९ ॥
प्रेम प्रीति अउ नेह बिन । सब झूठे सिँगार ॥
दादू आतम रत नहीँ । क्योँ मानइ भरतार ॥ ३० ॥
जग दिखलावइ बावरी । षोडस करइ सिँगार ॥
तहँ न सँवारइ आप को । जहँ भीतर भरतार ॥ ३१ ॥
सुध बुध जीवधि जाइ करि । माला सकल निबाहि ॥
दादू माया ज्ञान सोँ । स्वामी बइठा खाइ ॥ ३२ ॥
जंगम जोगी से बडे । बोध सन्यासी सेष ॥
षट दरसन सब राम बिन । सबइ कपट के भेष ॥ ३३ ॥
सेष मँसा एक अवलिया । पैगंबर सब पीर ॥
दरसन सोँ परसन नहीँ । अजहूँ बैली तीर ॥ ३४ ॥
नाना भेष बनाइ करि । आपा देखि दिखाइ ॥
दादू दूजा दूर करि । साहिब सोँ लव लाइ ॥ ३५ ॥
देखा देखी लोक सब । केते आवा जाहिँ ॥
राम सनेही ना मिलइ । जो निज देखे माहिँ ॥ ३६ ॥
सब देखइ अस्थूल को । यह ऐसा आकार ॥
सूच्छम सहज न सूझई । निराकार निरधार ॥ ३७ ॥

बाहर का सब देखिये । भीतर लखा न जाइ ॥
बहर दिखाया लोक का । भीतर राम दिखाइ ॥ ३८ ॥
यह पारिख का ऊपजी । भीतर की यह नाहिँ ॥
अंतर की जानइ नहीँ । ता तेँ खोटा खाहिँ ॥ ३९ ॥
सच बिन साईँ ना मिलइ । भावइ भेष बनाइ ॥
भावइ कर ऊरुधमुखी । भावइ तीरथ जाइ ॥ ४० ॥
साचा हरि का नावँ है । सो ले हिरदय राखि ॥
पाखँड परपँच दूर करि । सब साधू की साखि ॥ ४१ ॥
झूठा राता झूठ सोँ । साचा राता साच ।
येता अंध न जानहीँ । कहँ कँचन कहँ काँच ॥ ४१ ॥
हिरदय की हरि लेइगा । अंतरजामी राइ ॥
साच पियारा राम को । कोटिक करि दिखलाइ ॥ ४२ ॥
दादू मुख की ना गहइ । हिरदय की हरि लेइ ॥
अंतर सूधा एक सोँ । बोला दोस न देइ ॥ ४३ ॥
सब चतुराई देखिये । जो कुछ कीजइ आन ॥
मन गहि राखइ एक सोँ । दादू साधु सुजान ॥ ४४ ॥
सबद सुई सुरता धगा । काया कंठा लाइ ॥
जोगी जुग जुग पहिरहीँ । कबहूँ फाटि न जाइ ॥ ४५ ॥
ज्ञान गुरू का गूदडी । सबद गुरू का भेष ॥
अतिथ हमारी आतमा । दादू पंथ अलेख ॥ ४६ ॥
इस्क अजब अवलाद है । दरदवंत दरबेस ॥
दादू सिका सबुर है । अकल पीर उपदेस ॥ ४७ ॥

इति भेष को अंग संपूर्णम् ॥ १४ ॥

———:o:———

अथ साधु को अंग ।

——:o:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
निराकार मन सुरति सोँ । प्रेम प्रीति सोँ सेव ॥
जो पूजइ आकार को । साधू परतछ देव ॥ २ ॥
भोजन दीजइ देह को । लिया न मन बिस्राम ॥
साधू के मुख मेलिये । पाया आतमराम ॥ ३ ॥
ज्योँ यह काया पीव की । त्योँ साईँ के साध ॥
दादू सब संतोषिये । माहिँ आप अगाध ॥ ४ ॥
साधू जन संसार मेँ । भव जल बोहित अंग ॥
दादू तेते ऊधरे । जेते बइठे संग ॥ ५ ॥
साधू जन संसार मेँ । सीतल चंदन बास ॥
दादू केते ऊधरे । जो आये उन पास ॥ ६ ॥
साधू जन संसार मेँ । हीरा जैसा होइ ॥
दादू केते ऊधरे । संगति आये सोइ ॥ ७ ॥
साधू जन संसार मेँ । पारस परगट गाइ ॥
दादू केते ऊधरे । जेते परसे आइ ॥ ८ ॥
रूख बिरिछ बन राइ सब । चंदन पासइ होइ ॥
दादू बास लगाइ करि । किये सुगंध सोइ ॥ ९ ॥
जहाँ रेंड अरु आक थे । चंदन ऊगा माहिँ ॥
दादू चंदन करि लिये । आक कहइ कोइ नाहिँ ॥ १० ॥
साधु नदी जल रामरस । तहाँ पखारे अंग ॥
दादू निरमल मल गया । साधू जन के संग ॥ ११ ॥

साधू बरसइ रामरस। अम्रित बानी आइ॥
दादू दरसन देखता। त्रिबिध ताप तन जाइ॥ १२॥
जगत बिचारा जात है। बहता लहर तरंग॥
भेरइ बइठा ऊबरे। सत साधू के संग॥ १३॥
दादू नेडा परम पद। साधू संगति होइ॥
दादू सहजइ पाइये। सेवत सनमुख सोइ॥ १४॥
दादू नेडा परम पद। साधू जन के साथ॥
दादू सहजइ पाइये। परम पदारथ हाथ॥ १५॥
साधु मिलइ तब उपजई। हिरदय हरि का भाव॥
दादू संगति साधु की। जब हरि करइ पसाव॥ १६॥
साधु मिलइ तब उपजई। हिरदय हरि का हेत॥
दादू संगति साधु की। क्रिपा करइ तब देत॥ १७॥
साधु मिलइ तब उपजई। प्रेम भगति रुचि होइ॥
दादू संगति साधु की। दया करि देवइ सोइ॥ १८॥
साधु मिलइ तब उपजई। हिरदय हरि की प्यास॥
दादू संगति साधु की। अबिगति पूरे आस॥ १९॥
साधु मिले तब हरि मिले। सब सुख आनँदमूर॥
दादू संगति साधु की। राम रहा भरपूर॥ २०॥

परम कथा उस एक की। दूजा नाहीं आन॥
दादू तन मन लाइ करि। सदा सुरति रस पान॥ २१॥

प्रेमकथा हरि की कहइ। करइ भगति लव लाइ॥
पिवइ पिलावइ रामरस। सो जन मिलवइ आइ॥ २२॥

पिवइ पिलावइ रामरस। प्रेम भगति गुन गाइ॥
नित्य कथा हरि की कहइ। हेत सहित लव लाइ॥ २३॥

आन कथा संसार की। हमहिं सुनावइ आइ॥
तिसका मुख दादू कहइ। दइ न दिखावइ भाइ॥ २४॥

मुख दिखलाई साधु की । तुम्हही मिलवइ आइ ॥
तुम्ह माहीँ अंतर करइ । दइ न दिखावइ भाइ ॥ २५ ॥
जब दरसो तब दीजियो । तुम्ह पै मागहुँ एह ॥
दिन प्रति दरसन साधु का । प्रेम भगति दृढ देह ॥ २६ ॥
साधु सपीडा मन करइ । सतगुरु सबद सुनाइ ॥
मीरा मेरा मिहर करि । अंतर बिरह उपाइ ॥ २७ ॥
ज्योँ ज्योँ होवइ त्योँ कहइ । घट बध कहइ न जाइ ॥
दादू सो सुध आतमा । साधू परसइ आइ ॥ २८ ॥
साहिब सौँ सनमुख रहइ । सत संगति मेँ आइ ॥
दादू साधू सब कहहिँ । सो निहफल क्योँ जाइ ॥ २९ ॥
ब्रह्म गाइ तिन लोक मेँ । साधू असतन पान ॥
मुख मारग अम्रित झरइ । कत ढूँढइ सो आन ॥ ३० ॥
दादू पाया प्रेमरस । साधू संगति माहिँ ॥
फिरि फिरि देखे लोक सब । यह रस कतहूँ नाहिँ ॥ ३१ ॥
जिस रस को मुनिबर मरहिँ । सुर नर करहिँ कलाप ॥
सो रस सहजइ पाइये । साधू संगति आप ॥ ३२ ॥
संगति बिन सीझइ नहीँ । कोटि करइ जो कोइ ॥
दादू सतगुरु साधु बिन । कबहूँ सुध नहिँ होइ ॥ ३३ ॥
दादू नेडा दूर तेँ । अबिगति का आराध ॥
मनसा बाचा करमना । दादू संगति साध ॥ ३४ ॥
सरग न सीतल होइ मन । चंद न चंदन पास ॥
सीतल संगति साधु की । कीजइ दादू दास ॥ ३५ ॥
दादू सीतल जल नहीँ । हिम नहिँ सीतल होइ ॥
दादू सीतल संत जन । राम सनेही सोइ ॥ ३६ ॥
दादू चंदन कब कहा । अपना प्रेम प्रकास ॥
येहि दिसि परगट होइ रहा । सीतल गंध सुबास ॥ ३७ ॥

दादू पारस कब कहा। मुझ तैं कंचन होइ ॥
पारस परगट होइ रहा। साच कहइ सब कोइ ॥ ३८ ॥
तन मे मन भूला नहीं। पंच न भूला प्रान ॥
साधु सबद क्यौं भूलिये। रे मन मूढ अजान ॥ ३९ ॥
रतन पदारथ मनि मोती। हीरहु का है दरिया ॥
चिंतामनि चित रामधन। घाट अम्रित रस भरिया ॥ ४० ॥
समरथ सूरा साधु सौं। मन मस्तक धरिया ॥
दादू दरसन देखना। सब कारज सरिया ॥ ४१ ॥
धरती अंबर रात दिन। रबि ससि बिनवहिं सीस ॥
दादू बलि बलि बरनहीं। जो सुमिरहिं जगदीस ॥ ४२ ॥
चंद सूर सिजदा करहिं। नावँ अलह का लेइ ॥
दादू जिमि असमान सब। उन पाऊँ सिर देइ ॥ ४३ ॥
जो जन राते राम सौं। तिनकी मैं बलिजावँ ॥
दादू उन पर वारने। लागि रहहिं हरिनावँ ॥ ४४ ॥
जो जन हरि के रँग रँगे। सो रँग कभी न जाइ ॥
सदा सुरँगे संत जन। रँग में रहे समाइ ॥ ४५ ॥
दादू दाता राम का। अबिनासी रँग माहिँ ॥
सब जग धोबी धोइ मरहिँ। तौ भी छूटइ नाहिँ ॥ ४६ ॥
साहिब किया सो क्यौं मिटइ। सुंदर सोभा रंग ॥
दादू धोवहिं बावरे। दिन दिन होइ सुरंग ॥ ४७ ॥
परमारथ को सब किया। आपा स्वारथ नाहिँ ॥
परमेस्वर परमारथी। की साधू कलि माहिँ ॥ ४८ ॥
पर उपकारी संत सब। आये येहि कलि माहिं ॥
पिवहिँ पिलावहिँ रामरस। आपा स्वारथ नाहिं ॥ ४९ ॥
पर उपकारी संत जन। साहेब जी तेरे ॥
जाती देखी आतमा। रामहि कहि टेरे ॥ ५० ॥

मुख दिखलाई साधु की । तुम्हहीं मिलवइ आइ ॥
तुम्ह माहीं अंतर करइ । दइ न दिखावइ भाइ ॥ २५ ॥
जब दरसो तब दीजियो । तुम्ह पै मागहुँ एह ॥
दिन प्रति दरसन साधु का । प्रेम भगति दृढ देह ॥ २६ ॥
साधु सपीडा मन करइ । सतगुरु सबद सुनाइ ॥
मीरा मेरा मिहर करि । अंतर बिरह उपाइ ॥ २७ ॥
ज्यौं ज्यौं होवइ त्यौं कहइ । घट बध कहइ न जाइ ॥
दादू सो सुध आतमा । साधू परसइ आइ ॥ २८ ॥
साहिब सौं सनमुख रहइ । सत संगति मैं आइ ॥
दादू साधू सब कहहिँ । सो निहफल क्यौं जाइ ॥ २९ ॥
ब्रह्म गाइ तिन लोक मैं । साधू असतन पान ॥
मुख मारग अम्रित झरइ । कत ढूँढइ सो आन ॥ ३० ॥
दादू पाया प्रेमरस । साधू संगति माहिँ ॥
फिरि फिरि देखे लोक सब । यह रस कतहूँ नाहिँ ॥ ३१ ॥
जिस रस को मुनिबर मरहिँ । सुर नर करहिँ कलाप ॥
सो रस सहजइ पाइये । साधू संगति आप ॥ ३२ ॥
संगति बिन सीझइ नहीं । कोटि करइ जो कोइ ॥
दादू सतगुरु साधु बिन । कबहूँ सुध नहिँ होइ ॥ ३३ ॥
दादू नेडा दूर तैं । अबिगति का आराध ॥
मनसा बाचा करमना । दादू संगति साध ॥ ३४ ॥
सरग न सीतल होइ मन । चंद न चंदन पास ॥
सीतल संगति साधु की । कीजइ दादू दास ॥ ३५ ॥
दादू सीतल जल नहीं । हिम नहिँ सीतल होइ ॥
दादू सीतल संत जन । राम सनेही सोइ ॥ ३६ ॥
दादू चंदन कब कहा । अपना प्रेम प्रकास ॥
येहि दिसि परगट होइ रहा । सीतल गंध सुबास ॥ ३७ ॥

दादू पारस कब कहा। मुझ तें कंचन होइ॥
पारस परगट होइ रहा। साच कहइ सब कोइ॥ ३८॥
तन में मन भूला नहीं। पंच न भूला प्रान॥
साधु सबद क्यों भूलिये। रे मन मूढ अजान॥ ३९॥
रतन पदारथ मनि मोती। हीरहु का है दरिया॥
चिंतामनि चित रामधन। घाट अम्रित रस भरिया॥ ४०॥
समरथ सूरा साधु सौं। मन मस्तक धरिया॥
दादू दरसन देखना। सब कारज सरिया॥ ४१॥
धरती अंबर रात दिन। रबि ससि बिनवहिं सीस॥
दादू बलि बलि बरनहीं। जो सुमिरहिं जगदीस॥ ४२॥
चंद सूर सिजदा करहिं। नावँ अलह का लेइ॥
दादू जिमि असमान सब। उन पाऊँ सिर देइ॥ ४३॥
जो जन राते राम सौं। तिनकी मैं बलिजावँ॥
दादू उन पर वारने। लागि रहहिं हरिनावँ॥ ४४॥
जो जन हरि के रँग रँगे। सो रँग कभी न जाइ॥
सदा सुरँगे संत जन। रँग में रहे समाइ॥ ४५॥
दादू दाता राम का। अबिनासी रँग माहिँ॥
सब जग धोबी धोइ मरहिँ। तौ भी छूटइ नाहिँ॥ ४६॥
साहिब किया सो क्यों मिटइ। सुंदर सोभा रंग॥
दादू धोवहिं बावरे। दिन दिन होइ सुरंग॥ ४७॥
परमारथ को सब किया। आपा स्वारथ नाहिँ॥
परमेस्वर परमारथी। की साधू कलि माहिँ॥ ४८॥
पर उपकारी संत सब। आये येहि कलि माहिं॥
पिवहिँ पिलावहिँ रामरस। आपा स्वारथ नाहिं॥ ४९॥
पर उपकारी संत जन। साहेब जी तेरे॥
जाती देखी आतमा। रामहि कहि टेरे॥ ५०॥

चंद सूर पावक पवन । पानी का मत सार ॥
धरती अंबर रात दिन । तरवर फरइ अपार ॥ ५१ ॥
छाजन भोज परमारथी । आतम देव अधार ॥
साधू सेवक राम के । दादू पर उपकार ॥ ५२ ॥
जिसका तिसको दीजिये । सुकरित पर उपकार ॥
दादू सेवक सो भला । सिर नाहिँ लेवइ भार ॥ ५३ ॥
परमारथ को राखिये । कीजे पर उपकार ॥
दादू सेवक सो भला । नीरंजन निरकार ॥ ५४ ॥
सेवा सुकरित सब गया । मैँ मेरा मन माहिँ ॥
दादू आया जब लगे । साहिब मानइ नाहिँ ॥ ५५ ॥
जिनके मस्तक मनि बसइ । सकल सिरोमनि अंग ॥
जिनके मस्तक मनि नहीँ । ते बिष भरे भुवंग ॥ ५६ ॥
दादू इस संसार मेँ । ये दो रतन अमोल ॥
एक साईँ अरु संत जन । इनका मोल न तोल ॥ ५७ ॥
दादू इस संसार मेँ । ये दो रहे लुकाइ ॥
राम सनेही साधु जन । अउ बहुतेरा आइ ॥ ५८ ॥
सगे हमारे साधु हैँ । सिर पर सिरजनहार ॥
दादू सतगुरु सो सगा । दूजा दंभ बिकार ॥ ५९ ॥
जिनके हिरदय हरि बसइ । सदा निरंतर नावँ ॥
दादू साचे साधु की । मैँ बलिहारी जावँ ॥ ६० ॥
साचा साधु दयाल घट । साहिब का प्यारा ॥
राता माता रामरस । सो प्रान हमारा ॥ ६१ ॥
फिरता चाक कुम्हार का । योँ देखइ संसार ॥
साधू जन निहचल भये । जिनके राम अधार ॥ ६२ ॥
जरती बरती आतमा । साधु सरोबर जाइ ॥
दादू पीवइ रामरस । सुख मेँ रहइ समाइ ॥ ६३ ॥

काँजी माहिँ मेरि करि। पीवइ सब संसार ॥
करता केवल निरमला। साधू पीवनहार ॥ ६४ ॥
असत मिलइ अंतर पडइ। भाव भगति रस जाइ ॥
साधु मिलइ सुख ऊपजइ। आनँद अंग नवाइ ॥ ६५ ॥
साधू संगति पाइये। राम अमी फल होइ ॥
असता संगति पाइये। बिष फल देवइ सोइ ॥ ६६ ॥
दादु सभा जो संत की। सुमति ऊपजइ आइ ॥
सकत सभा का बैठता। ज्ञान कथा तेँ जाइ ॥ ६७ ॥
सब जग दीखइ एकला। सेवक स्वामी दोइ ॥
जगत दुहागी राम बिन। साधु सुहागी सोइ ॥ ६८ ॥
साधू जन सुखिया भये। दुनियाँ को बहु द्वंद ॥
दुनी दुखी हम देखते। साधुन्ह सदा अनंद ॥ ६९ ॥
दादू देखत हम सुखी। साईँ के सँग लाग ॥
योँ सो सुखिया होइगा। जा के पूरे भाग ॥ ७० ॥
मीठा पीवइ रामरस। सो भी मीठा होइ ॥
सहजइ कडुआ मिटि गया। दादू निरबिष सोइ ॥ ७१ ॥
अंतर एक अनंत सोँ। सदा निरंतर प्रीति ॥
जेहि प्रानी प्रीतम बसइ। बैठा त्रिभुवन जीति ॥ ७२ ॥
मैँ दासी तेहि दास की। जेहि सँग खेलइ पीव ॥
बहुत भाँति करि बरनऊँ। तापर दीजे जीव ॥ ७३ ॥
लीला राजा राम की। खेलहिँ सब ही संत ॥
आपा पर एकइ भया। छूटी सबइ भरंत ॥ ७४ ॥
आनँद सदा अडोल सो। राम सनेही साध ॥
प्रेमी प्रीतम को मिलइ। यह सुख अगम अगाध ॥ ७५ ॥
यह घट दीपक साधु का। ब्रह्मजोति परकास ॥
दादू पंछी संत जन। तहाँ परइ निज दास ॥ ७६ ॥

घर बन माहैं राखिये । दीपक जोति जगाइ ॥
दादू प्रान पतंग सब । जहँ दीपक तहँ जाइ ॥ ७७ ॥
घर बन माहैं राखिये । दीपक जरता होइ ॥
दादू प्रान पतंग सब । आइ मिले सब कोइ ॥ ७८ ॥
घर बन माहैं राखिये । दीपक प्रगट प्रकास ॥
दादू प्रान पतंग सब । आइ मिले उस पास ॥ ७९ ॥
घर बन माहैं राखिये । दीपक जोति सहेत ॥
दादू प्रान पतंग सब । आइ मिले उस हेत ॥ ८० ॥
जेहि घट परगट राम है । सो घट तजा न जाइ ॥
नैनों माहैं राखिये । दादू आप नसाइ ॥ ८१ ॥
जेहि घट दीपक राम का । तेहि घट तिमिर न होइ ॥
उस उँजियारे जोत को । सब जग देखइ सोइ ॥ ८२ ॥
कबहुँ न बिहडइ सो भला । साधु ढीठ मत होइ ॥
दादू हीरा एक रस । बाँधि गाँठरी सोइ ॥ ८३ ॥
गरँथ न बाँधइ गाँठरी । नहिं नारी सों नेह ॥
मन इंद्री अस्थिर करइ । छाडि सकल गुन देह ॥ ८४ ॥
निराकार सों मिलि रहइ । अखँड भगति करि लेइ ॥
दादू क्योंकर पाइये । उन चरनों का खेह ॥ ८५ ॥
साधु सदा रंजन रहइ । मैला कभी न होइ ॥
सुन्न सरोवर हंसला । दादू बिरला कोइ ॥ ८६ ॥
साहिब का होनहार सब । सेवक माहैं होइ ॥
दादू सेवक साधु सोँ । दूजा नाहीं कोइ ॥ ८७ ॥
जब लग नैन न देखिये । साधु कहहिं ते अंग ॥
तब लग क्योंकर मानिये । साहिब का परसंग ॥ ८८ ॥
सोइ जन साधू सिद्ध सो । सोई सकल सिर मौर ॥
जेहि के हिरदय हरि बसहिँ । दूजा नाहीं और ॥ ८९ ॥

साधु सिरोमनि सोधि ले । नदी पूर परि आइ ॥
सतजीवन खंभा चढइ । दूजा बहता जाइ ॥ ९० ॥

अवगुन छाडइ गुन गहइ । सोई सिरोमनि साध ॥
गुन अवगुन तेँ रहित है । सो निज ब्रह्म अगाध ॥ ९१ ॥

सिंधव फटिक पषान का । ऊपर एकइ रंग ॥
पानी माहैँ देखिये । न्यारा न्यारा अंग ॥ ९२ ॥

सिंधव के आया नहीँ । नीर खीर परसंग ॥
आपा फटिक पषान के । मिलइ न जल के संग ॥ ९३ ॥

सब जग फटिक पषान हैँ । साधू सिंधव होइ ॥
सिंधव एकइ होइ रहा । पानी पत्थर दोइ ॥ ९४ ॥

साधू जन उस देस का । आया येहि संसार ॥
दादू उसको पूछिये । प्रीतम के समचार ॥ ९५ ॥

समाचार सत पीव के । साधु कहइगा आइ ॥
दादू सीतल आतमा । सुख मेँ रहइ समाइ ॥ ९६ ॥

साधु सबद सुबृष्टि है । सीतल होइ सरीर ॥
दादू अंतर आतमा । पीवइ हरि जल नीर ॥ ९७ ॥

दादू सत दरबार को । साधू बाँटइ आइ ॥
तहाँ रामरस पाइये । जहँ साधू तहँ जाइ ॥ ९८ ॥

सुरत सनेही राम का । सो मुझ मिलवहु आन ॥
तिस आगे हरिगुन कथउँ । सुनत न कारइ कान ॥ ९९ ॥

सब ही म्रितक समान हैँ । जीया तब ही जानि ॥
दादू छीँटा अमी का । साधू माहैँ आनि ॥ १०० ॥

सब ही मिरतक होइ रहे । जीवइ कौन उपाइ ॥
दादू अम्रित रामरस । साधू सीँचइ आइ ॥ १०१ ॥

सब ही मिरतक माहिँ हैँ । क्योँ कर जीवइ सोइ ॥
दादू साधू प्रेमरस । आनि पिलावइ कोइ ॥ १०२ ॥

सब ही मिरतक देखिये । केहि बिधि जीवइ जीव ॥
साधु सुधारस आनि कर । दादू बरसइ पीव ॥ १०३ ॥
हरि जल बरसे बाहिरा । सूखइ काया खेत ॥
दादु हरियरी होइगी । सींचनहार सुचेत ॥ १०४ ॥
गंगा जमुना सुरसती । मिल जब सागर माहिँ ॥
खारा पानी होइ गया । दादू मीठा नाहिँ ॥ १०५ ॥
दादू राम न छोडिये । गहिरा तजि संसार ॥
साधू संगति सोधि ले । कुसँगति संग निवारि ॥ १०६ ॥
दादू कुसँगति सब हरी । मात पिता कुल सोइ ॥
सजन सनेही बंधुआ । भावइ आपा होइ ॥ १०७ ॥
अज्ञो मूर्खो हित करः । सज्जनेन समो रिपुः ॥
ज्ञात्वा त्यजन्ति ते सर्वे । निरयाश्च मनोजिताः ॥ १०८ ॥
कुसँगति मेँ केते गये । तिनका नावँ न ठावँ ॥
दादू ते क्योँ ऊधरइ । साधु नहीँ जिस गावँ ॥ १०९ ॥
भाव भगति का भंग करि । बटपर माराहिँ बाट ॥
दादू द्वारा मुक्ति का । खोलइ जडे कपाट ॥ ११० ॥
साधू सँग अंतर पडे । भागइगा किस ठौर ॥
प्रेम भगति भावइ नहीँ । यह मन का मत और ॥ १११ ॥
राम मिलन के कारनहिँ । जो तूँ खरा उदास ॥
साधू संगति सोधि ले । राम उन्हहुँ के पास ॥ ११२ ॥
ब्रह्मा संकर सेस मुनि । नारद ध्रुव सुकदेव ॥
सकल साधु दादू सही । जो लागे हरिसेव ॥ ११३ ॥
साधु कमल हरि बासना । संत भवँर सँग आइ ॥
दादू परिमल ले चले । मिले राम को जाइ ॥ ११४ ॥
सहजइ मेला होइगा । हम तुम्ह हरि के दास ॥
अंतरगति तब मिलि रहे । पुनि परगट परकास ॥ ११५ ॥

आतम माहिँ राम है। पूजा ता की होइ ॥
सेवा बंदन आरती। साधु करहिँ सब कोइ ॥ ११६ ॥
संत उतारहिँ आरती। तन मन मंगलचार ॥
बेरि बेरि वारहिँ नहीँ। तुम्ह पर सिरजनहार ॥ ११७ ॥
मम सिर मोटे भाल। साधू का दरसन किया ॥
कहा करहिँ जम काल। रामरसायन भरि पिया ॥ ११८ ॥
एता अबिगत आप तेँ। साधू को अधिकार ॥
चौरासी लख जीव का। तन मन फेरि सँवार ॥ ११९ ॥
बिष का अम्रित करि लिया। पावक का पानी ॥
बाँका सूधा करि लिया। सो साधु बिरानी ॥ १२० ॥
ऊरा पूरा करि लिया। खारा मीठा होइ ॥
फूटा सारा करि लिया। साधु बिबेकी सोइ ॥ १२१ ॥
बंध्या मुक्ती करि लिया। उरझा सुरझ समान ॥
बैरी मीता करि लिया। दादू उत्तम ज्ञान ॥ १२२ ॥
झूठा साचा करि लिया। काचा कंचनसार ॥
मैला निर्मल करि लिया। दादू ज्ञान बिचार ॥ १२३ ॥
काया कर्म लगाइ करि। तीरथ धोवइ आइ ॥
तीरथ माहैँ कीजिये। सो कैसे करि जाइ ॥ १२४ ॥
जहँ तिरिये तहँ डूबिये। मन मेँ मैला होइ ॥
जहँ छूटइ तहँ बाँधिये। कपट न सीझइ कोइ ॥ १२५ ॥
दादू जब लग जीइये। सुमिरन संगति साध ॥
दादू साधू राम बिन। दूजा सब अपराध ॥ १२६ ॥

इति साधु को अंग संपूर्णम् ॥ १९ ॥

———:0:———

अथ मध्य को अंग ।

——:0:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
दो पख रहता सहज सों । सुख दुख एक समान ॥
मरइ न जीवइ सहज सौं । पूरा पद निरबान ॥ २ ॥
सहज रूप मन का भया । दोनौं मिटे तरंग ॥
ताता सीता सम भया । दादू एकइ अंग ॥ ३ ॥
सुख दुख मन मानइ नहीं । राम रँग राता ॥
दादू दूजा छाडि सब । प्रेमरस माता ॥ ४ ॥
मति मोटी उस साधु की । दोनौं रहत समान ॥
दादू आपा मेटि करि । सेवा करइ सुजान ॥ ५ ॥
कुछ न कहावइ आप को । काहू संग न जाइ ॥
दादू निहपख होइ रहइ । साहिब सों लव लाइ ॥ ६ ॥
सुख दुख मन मानइ नहीं । आपा पर सम भाइ ॥
सो मन मन करि सेइये । सब पूरन लव लाइ ॥ ७ ॥
ना हम छाडहिं ना गहहिं । ऐसा ज्ञान बिचार ॥
मधि भाइ सेवइ सदा । दादू मुक्ति दुआर ॥ ८ ॥
सहज सुन्य मन राखिये । इन्ह दोनौं के माहिं ॥
लेइ समाधि रस पीजिये । तहाँ काल भय नाहिं ॥ ९ ॥
आपा मेटें म्रित्तिका । आपा धरें अकास ॥
दादु जहाँ दोनौं नहीं । मध्य निरंतर बास ॥ १० ॥
नहीं म्रितक नहीं जीवता । नहिं आवहिं नहिं जाहिं ॥
नहिं सूता नहिं जागता । नहिं भूखा नहिं खाहिं ॥ ११ ॥

दादू इस आकार तें । दूजा सूच्छम लोक ॥
तातें आगे और है । तबहूँ हर छन सोक । १२ ॥
हद्द छाडि बेहद्द में । निरभय निरपछ होइ ॥
लागि रहइ उस एक सों । जहाँ न दूजा कोइ ॥ १३ ॥
दूजा अंतर होत है । जिनि आनइ मन माहिं ॥
तहँ ले मन को राखिये । जहँ कुछ दूजा नाहिं ॥ १४ ॥
निराधार पर कीजिये । जहाँ न धरनि अकास ॥
दादू निहचल मन रहइ । निर्गुन के बिस्वास ॥ १५ ॥
मन चित मनसा आतमा । सहज सुरति ता माहिं ॥
दादू पाँचो पूरि ले । धरती अंबर नाहिं ॥ १६ ॥
अघडी चाल कबीर की । आसा धी नहीं जाइ ॥
दादू डाँकइ मिरिग ज्यों । उलटि पडइ भू आइ ॥ १७ ॥
दादू रहन कबीर की । कठिन बिषम यह चाल ॥
अघड एक सों मिलि रहा । जहाँ न झाँकइ काल ॥ १८ ॥
निराधार निज भगति करि । निराधार निजसार ॥
निराधार निज नावँ ले । निराधार निरकार ॥ १९ ॥
निराधार निज रामरस । साधू पीवनहार ॥
निराधार निर्मल रहइ । दादू ज्ञान बिचार ॥ २० ॥
निराधार मन रहि गया । आतम के आनंद ॥
दादू पीवइ रामरस । भेंटे परमानंद ॥ २१ ॥
राम अकेला दूनहुँ बिच । आवइ जाइ न देइ ॥
जहँ के तहँ ले राखिये । पारिख पहुँचे सेइ ॥ २२ ॥
चल दादू तहँ जाइये । मरइ न जीवइ कोइ ॥
अवागमन भय को नहीं । सदा एक रस होइ ॥ २३ ॥
चल दादू तहँ जाइये । चंद सुरुज नहिँ जाइ ॥
रात दिवस की गम नहीं । सहजहिं रहा समाइ ॥ २४ ॥

चल दादू तहँ जाइये । मया मोह तेँ दूर ॥
सुख दुख को ब्यापइ नहीँ । अबिनासी घर पूर ॥ २५ ॥
चल दादू तहँ जाइये । जहँ चौरासी नाहिँ ॥
काल मीँच लागइ नहीँ । मिलि रहिये ता माहिँ ॥ २६ ॥
एक देस हम देखिया । ऋतु नहिँ पलटइ कोइ ॥
हम दादू उस देस के । सदा एक रस होइ ॥ २७ ॥
एक देस हम देखिया । ऊजड बस्ती नाहिँ ॥
हम दादू उस देस के । सहज रूप ता माहिँ ॥ २८ ॥
एक देस हम देखिया । नाहिँ नियरे नहिँ दूर ॥
हम दादू उस देस के । रहे निरंतर पूर । २६ ॥
एक देस हम देखिया । जहँ निस दिन नहिँ घाम ॥
हम दादू उस देस के । निकट निरंजनराम ॥ ३० ॥
बारह मासउ ऊपजइ । तहाँ किया परबेस ॥
दादू सूखा ना पडइ । हम आये उस देस ॥ ३१ ॥
बेद कोरान का गम नहीँ । तहाँ किया परबेस ॥
तहँ कुछु अचरज देखिया । यह कुछु औरहि देस ॥ ३२ ॥
ना घर रहा न बन गया । ना कुछु किया कलेस ॥
दादू मनहीँ मन मिला । सतगुरु के उपदेस ॥ ३३ ॥
काहे दादू घर रहइ । काहे बनखँड जाइ ॥
घर बन रहता राम है । ताही सोँ लव लाइ ॥ ३४ ॥
जिन प्रानी कर जानिया । घर बन एक समान ॥
घर माहैँ बन ज्योँ रहइ । सोई साधु सुजान ॥ ३५ ॥
सब जग माहैँ एकला । देह निरंतर बास ॥
दादू कारन राम के । घर बन माहिँ उदास ॥ ३६ ॥
घर बन माहैँ सुख नहीँ । सुख है साईँ पास ॥
दादू तासोँ मन मिला । इन तेँ भया उदास ॥ ३७ ॥

ना घर भला न बन भला। जहँ नाहीं निज नावँ ॥
दादू उन में मन रहइ। भला न सोई ठावँ ॥ ३८ ॥
बैरागी बन में रहै। घरबारी घर माहिं ॥
राम निराला रहि गया। दादू इन में नाहिं ॥ ३९ ॥
दीन दुनी साधक करहु। देखन दे दीदार ॥
तन मन को छिन छिन करहु। भिस्त दोजक भी द्वार ॥ ४० ॥
दादू जीवन मरन का। मुझ पछतावा नाहिं ॥
मुझ पछितावा पीय का। रहा न नैनहुँ माहिं ॥ ४१ ॥
सरग नरक संसय नहीं। जिवन मरन भय नाहिं ॥
राम बिमुख जो दिन गये। सो सालइ मन माहिं ॥ ४२ ॥
सरग नरक सुख दुख तजे। जीवन मरन नसाइ ॥
दादू लोभी राम का। को आवहिं को जाहिं ॥ ४३ ॥
हिंदू तुरुक न होइबा। साहिब सेंती काम ॥
दरसन संग न जाइबा। निरपक्ष कहिबा राम ॥ ४४ ॥
षट दरसन दोनों नहीं। निरालंब निज बाट ॥
दादू एकइ आसरे। लाँघइ अवघट घाट ॥ ४५ ॥
ना हम हिंदू होयँगे। ना हम मूसलमान ॥
षट दरसन में हम नहीं। हम रहिहहिं रहिमान ॥ ४६ ॥
जोगी जंगम सेवडे। बोध सन्यासी सेष ॥
षट दरसन सब राम बिन। सबइ कपट के भेष ॥ ४७ ॥
दादू अलह राम का। दोनों पछ तें न्यारा ॥
रहिता गुन आकार का। सो गुरू हमारा ॥ ४८ ॥
मेरा तेरा बावरे। मैं तैं की तज बानि ॥
जिन यह सब कुछु सिरजता। करताहि को जानि ॥ ४९ ॥
करनी हिंदू तुरुक की। अपनी अपनी ठौर ॥
दोनों बिच मग साधु का। संतों का रह और ॥ ५० ॥

दादू हिंदू तुरुक का । रोय पच्छ पथ वारि ॥
संगति साची साधु की । साईं को संभारि ॥ ५१ ॥
हिंदू लागे देवहरा । मुसलमान महजीति ॥
हम लागे एक अलख सों । सदा निरंतर प्रीति ॥ ५२ ॥
तहाँ न हिंदू देवहरा । नहीं तुरुक महजीति ॥
दादू आपइ आप है । तहाँ नहीं रह रीति ॥ ५३ ॥
यह मसीति यह देवहरा । सतगुरु दिया दिखाइ ॥
भीतर सेवा बंदगी । बाहर काहे जाइ ॥ ५४ ॥
दोनों हाथों होइ रहे । मिलि रस पिया न जाइ ॥
दादू आपा मेटि कर । दोनों रहे समाइ ॥ ५५ ॥
भीत भयानक होइ रहे । देखा निरपछ अंग ॥
दादू एकइ ले रहा । दूजा चढइ न रंग ॥ ५६ ॥
जानइ बूझइ साच दे । सब को देखइ धाइ ॥
चाल नहीं संसार की । दादू गहा न जाइ ॥ ५७ ॥
पछ काहू का ना मिलइ । निरपछ निरमल नावँ ॥
साईं सों सनमुख सदा । मुक्ता सब ही ठावँ ॥ ५८ ॥
जब तें हम निरपछ भये । सबइ रिसाने लोक ॥
सतगुरु के परसाद तें । मेरे हरष न सोक ॥ ५९ ॥
निरपछ होइ के पछ गहइ । नरक पडइगा सोइ ॥
निरपछ लागे नावँ सों । करता करइ सो होइ ॥ ६० ॥
पछ काहू का ना मिलइ । निहकामी है साध ॥
एक भरोसे राम के । खेलइ खेल अगाध ॥ ६१ ॥
पछापछी संसार सब । निरपछ बिरला कोइ ॥
सोई निरपछ होइगा । नावँ निरंजन होइ ॥ ६२ ॥
अपने अपने पंथ की । सब कोइ कहइ बढाइ ॥
ता तें दादू एक सों । अंतरगति लव लाइ ॥ ६३ ॥

दोनौं पच्छा दूर करि । निरपछ निरमल नावँ ॥
आपा मेटइ हरि भजइ । ताकी मैं बलि जावँ ॥ ६४ ॥
दादू तजि संसार सब । रहइ निराला होइ ॥
अबिनासी के आसरे । काल न लागइ कोइ ॥ ६५ ॥
कलिजुग को कर करिमुहाँ । उठि उठि लागइ धाइ ॥
दादू क्योँ कर छूटिये । कलिजुग बडी बलाइ ॥ ६६ ॥
काला मुँह संसार का । नीले कीये पाँव ॥
दादू तीनौं त्याग दे । भावइ तीधर जाव ॥ ६७ ॥
भावहीन जो पिरथिबी । दया बिहीना देस ॥
भगति नहीं भगवंत की । तहँ कैसा परवेस ॥ ६८ ॥
जो बोलउँ तो चुप कहहिँ । चुप तो कहहिँ पुकार ॥
दादू क्योँ कर छूटिये । ऐसा है संसार ॥ ६९ ॥
ना जानहिँ ना चुप गही । मेटी अगिनि की झाल ॥
सदा सजीवन सुमिरिये । दादू बाँचइ काल ॥ ७० ॥
पंथ चलइ ते प्रानियाँ । तेता कुल ब्यवहार ॥
निरपछ साधू सो सही । जिन्हके एक अधार ॥ ७१ ॥
दादू पंथहिँ पर गये । बपुरे बारह बाट ॥
इन्हके संग न जाइये । उलटा अबिगति घाट ॥ ७२ ॥
जागे को आया कहैँ । सूते को कहैँ जाइ ॥
अवना जाना झूठ है । जहँ का तहाँ समाइ ॥ ७३ ॥

इति भेष को अंग संपूर्णम् ॥ १६ ॥

अथ सारग्राही को अंग ।

——:o:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥

साधू तो गुन को गहइ । अवगुन तजइ बिकार ॥
मानसरोबर हंस ज्यौं । छाडि नीर गह सार ॥ २ ॥

हंसा ज्ञानी सो भला । अंतर राखइ एक ॥
बिष में अम्रित काढि ले । दादू बडा बिवेक ॥ ३ ॥

पहिले न्यारा मन करइ । पीछे सहज सरीर ॥
दादू हंस बिचार सों । न्यारा कीया नीर ॥ ४ ॥

आपइ आप प्रकासिया । निर्मल ज्ञान अनंत ॥
खीर नीर न्यारा किया । दादू भज भगवंत ॥ ५ ॥

खीर नीर का संत जन । नावँ न बेडहिँ आइ ॥
दादू साधू हंस बिन । मैल से मैलहिँ जाइ ॥ ६ ॥

मन हंसा मोती चुँगइ । कंकर दीया डार ॥
सतगुरु कहि समुझाइया । पाया भेद बिचार ॥ ७ ॥

दादु हंस मोती चुँगइ । मानसरोबर जाइ ॥
बकुला छीलल बापुरा । चुनि चुनि मछरी खाइ ॥ ८ ॥

दादु हंस मोती चुँगइ । मानसरोबर न्हाइ ॥
फिरि फिरि बइठइ बापुरा । काक करंका जाइ ॥ ९ ॥

दादू हंस परेखिये । उत्तम करनी चाल ॥
बकुला बैठइ ध्यान धरि । परतछ कहिये काल ॥ १० ॥

उज्जल करनी हंस है । मैली करनी काग ॥
मध्यम करनी छाडि सब । दादू उत्तम भाग ॥ ११ ॥

निरमल करनी साधु की । मैला सब संसार ॥
मैला मध्यम होइ गया । निरमल सिरजनहार ॥ १२ ॥
करनी ऊपर जात है । दूजा सोच निवार ॥
मैला मध्यम होइ गया । उज्जल ऊँच बिचार ॥ १३ ॥
उज्जल करनी राम है । दादू दूजा धंध ॥
का कहिये समझइ नहीँ । चारो लोचन अंध ॥ १४ ॥
गउ बछडा का ज्ञान गहि । दूध रहइ लव लाइ ॥
सीँग पूँछ पग परहरइ । अस्तन लागइ धाइ ॥ १५ ॥
काम गाय के दूध सोँ । हाड चाम सोँ नाहिँ ॥
येहि बिधि अम्रित पीजिये । साधू के मुख माहिँ ॥ १६ ॥
काम धनी के नाम सोँ । लोगन सेँ कुछ नाहिँ ॥
लोगन सोँ मन ऊपजी । मन की मनहीँ माहिँ ॥ १७ ॥
हिरदय जैसा होइगा । सो तैसा ले जाइ ॥
दादू तूँ निरदोष रह । नावँ निरंतर गाइ ॥ १८ ॥
साधु सबइ कर देखना । असत न दीखइ कोइ ॥
जिन के हिरदय हरि नहीँ । तेहि तन टोटा होइ ॥ १९ ॥
साधू संगति पाइये । इंद्र दूर बिनसाइ ॥
दादू वह हित बैठि कर । ढूँढइ निकट न जाइ ॥ २० ॥
परम पदारथ पाइये । कंकर दीया डारि ॥
दादू साचा सेँ मिलइ । कूडा काँच निवारि ॥ २१ ॥
जीवन मूरी पाइये । मरिबा कौन बिसाहिँ ॥
दादू अम्रित छाडि करि । कौन हलाहल खाहिँ ॥ २२ ॥
मानसरोवर पाइये । छीछल को छिटकाइ ॥
दादू हंसा हरि मिले । कागा गये बिलाइ ॥ २३ ॥
जहँ दिनकर तहँ निस नहीँ । निस तहँ दिनकर नाहिँ ॥
दादू एकहि दूइ नहीँ । साधुन के मत माहिँ ॥ २४ ॥

एकहि घोड़ा चढ़ि चलइ। दूजा कोतिक होइ॥
दोनों घोड़ा बइठता। पार न पहुँचा कोइ॥ २५॥

इति सारग्राही को अंग संपूर्णम्॥ १७॥

अथ विचार को अंग ।

——:०:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
जल में गगन मगन में जल है । पुनि वे गगन निरालम् ॥
ब्रह्म जीव येहि बिधि रहइ । ऐसा भेद विचारम् ॥ २ ॥
दरपन में मुख देखिये । पानी में प्रतिबिंब ॥
ऐसे आतम राम हैं । दादू सब ही संग ॥ ३ ॥
दरपन माहैं देखिये । अपना सूझइ आप ॥
दरपन बिन सूझइ नहीं । दादू पुनि रूप आप ॥ ४ ॥
जीये तेला तिलन में । जीये गंध फुलन्न ॥
जीये मक्खन खीर में । जीये रूब रुहन्न ॥ ५ ॥
जीये रूब रुहन्न में । जीये रूह रगन्न ॥
जीये जो रउ सूर माँ । ठंढउ चंद्र बसन्न ॥ ६ ॥
जिन्ह यह दिल मंदर किया । दिल मंदिर में सोइ ॥
दिल माहैं दिलदार है । और न दूजा कोइ ॥ ७ ॥
मीत तुम्हारा तुम्ह कने । तुम्ह हीं लेहु पिछानि ॥
दादू दूर न देखिये । प्रतीबिंब ज्यों जानि ॥ ८ ॥
लाल कमल जल ऊपजइ । क्यों सो जुदा जल माहिं ॥
चंद हि तें नहिं प्रीतडी । यों जल सेतीं नाहिं ॥ ९ ॥
दादू एक बिचार सों । सब तें न्यारा होइ ॥
माहैं है पर मन नहीं । सहज निरंजन सोइ ॥ १० ॥
गुन निर्गुन मन मिलि रहा । क्यों बेगार होइ जाइ ॥
जहँ मन नाहीं सो नहीं । जहँ मन चेतन आइ ॥ ११ ॥

दादू सब ही व्याधि का । औषधि एक बिचार ॥
समझे तेँ सुख पाइये । कोइ कुछ कहइ गवाँर ॥ १२ ॥
एक निर्गुन एक गुनमई । सब घट ये दो ज्ञान ॥
काया का माया मिलइ । आतम ब्रह्म समान ॥ १३ ॥
कोटि अचारिन एक चरी । तबहुँ न सर भर होइ ॥
आचारी सब जग भरा । बिचरी बिरला कोइ ॥ १४ ॥
घट मेँ सुख आनंद है । तब सब ठाहर होइ ॥
घट मेँ सुख आनंद बिन । सुखी न देखा कोइ ॥ १५ ॥
काया लोक अनंत सब । घट मेँ भारी भीर ॥
जहाँ जाइ तहँ संग सब । दरिया पयनी तीर ॥ १६ ॥
काया माया होइ रही । जोधा बहु बलिवंत ॥
दादू दूसर क्योँ तिरहिँ । काया लोक अनंत ॥ १७ ॥
मोटी माया तजि गये । सूच्छम लीन्हे जाइ ॥
दादू को छूटइ नहीँ । माया बडी बलाइ ॥ १८ ॥
दादू सूच्छम माहिँ ले । तिन का कीजइ त्याग ॥
सब तजि दाता राम सोँ । दादू यह बैराग ॥ १९ ॥
गुन अतीर सो दरसनी । आया धरइ उठाइ ॥
दादू निर्गुन राम गहि । डोरी लागा जाइ ॥ २० ॥
अंड मुक्ति सब को करइ । प्रान मुक्ति नहिँ होइ ॥
प्रान मुक्ति सतगुरु करइ । दादू बिरला कोइ ॥ २१ ॥
छुधा तिखा क्योँ भूलिये । सीत तपन क्योँ जाइ ॥
क्योँ सब छूटहिँ देह गुन । सतगुरु कह समझाइ ॥ २२ ॥
माहैँ तैँ मन काढि कर । ले राखइ निज ठौर ॥
दादू भूले देहगुन । बिसरि जाइ सब और ॥ २३ ॥
नावँ भुलावइ देह गुन । जीव दसा सब जाइ ॥
दादू छाडइ नावँ को । तो फिरि लागइ आइ ॥ २४ ॥

दादू दाता राम सों। दिन दिन अधिक सनेह॥
दिन दिन पीवइ रामरस। दिन दिन दरपन देह॥ २५॥
दिन दिन भूलइ देहगुन। दिन दिन इंद्री नास॥
दिन दिन मन मनसा मरइ। दिन दिन होइ प्रकास॥ २६॥
देह रहइ संसार में। जीव राम के पास॥
दादू कुछ व्यापइ नहीं। काल जाल दुख त्रास॥ २७॥
काया की संगति तजइ। बइठा हरिपद माहिं॥
दादू निरभय होइ रहइ। कोइ गुन व्यापइ नाहिं॥ २८॥
काया माहिं भय घना। सब गुन व्यापइ आइ॥
दादू निरभय घर किया। रहे नूर में जाइ॥ २९॥
खडग धार बिष ना मरइ। कोइ गुन व्यापइ नाहिं॥
राम रहइ त्यों जन रहइ। काल जाल जल माहिं॥ ३०॥
सह बिचार सुख में रहइ। दादू बडा बिबेक॥
मन इंद्री पसरइ नहीं। अंतर राखइ एक॥ ३१॥
मन इंद्री पसरइ नहीं। अहनिसि एकइ ध्यान॥
पर उपकारी प्रानियाँ। दादू उत्तम ज्ञान॥ ३२॥
आपा ऊरझ उरझियाँ। दीखइ सब संसार॥
आपा सुरझे सुरझियाँ। यह गुरुज्ञान बिचार॥ ३३॥
मैं नाहीं तब नावँ का। कहा कहावहिं आप॥
साधो कहहु बिचार करि। मेटहु तन की ताप॥ ३४॥
समझा तबही सुरझियाँ। उलट समाना सोइ॥
कछू कहावइ जब लगा। तब लग समुझ न होइ॥ ३५॥
जब समझा तब सुरझियाँ। गुरुमुख ज्ञान अलेख॥
उरुध कमल में आरसी। फिरि कर आपा देख॥ ३६॥
प्रेम भगति दिन दिन बढइ। सोई ज्ञान बिचार॥
दादू आतम सोधि करि। मथ करि काढा सार॥ ३७॥

जेहि बेरियाँ सब कुछ भया । सो कुछ करहु बिचार ॥
काजी पंडित बावरे । का लिखि बाँधे भार ॥ ३८ ॥
जब मनही में मन मिला । तब पाया कुछ भेद ॥
दादू लेकर लाइये । का पढ़ि मरिये बेद ॥ ३९ ॥
पानी पावक अगिनि जल । जानइ नहीं अजान ॥
आदि अंत बीचार करि । दादू जान सुजान ॥ ४० ॥
सुख माहैं दुख बहुत है । दुख माहैं सुख होइ ॥
दादू देखि बिचारि करि । आदि अंत फल दोइ ॥ ४१ ॥
मीठा खारा खार मिठ । जानहिं नहीं गवाँर ॥
आदि अंत गुन देखि कर । दादू किया बिचार ॥ ४२ ॥
कोमल कठिन कठिन है कोमल । मूरुख मरम न बूझइ ॥
आदि अंत बीचार करि । दादू सब कुछ सूझइ ॥ ४३ ॥
पहिले प्रान बिचार करि । पीछहिं पग दीजइ ॥
आदि अंत गुन देखि कर । दादू कुछ कीजइ ॥ ४४ ॥
पहिले प्रान बिचार करि । पीछहिं चलिये साथ ॥
आदि अंत गुन देखि कर । दादू घालहिं हाथ ॥ ४५ ॥
पहिले प्रान बिचार करि । पीछे कुछ कहिये ॥
आदि अंत गुन देखि कर । दादू निज गहिये ॥ ४६ ॥
पहिले प्रान बिचार करि । पीछे आवइ जाइ ॥
आदि अंत गुन देखि कर । दादू रहइ समाइ ॥ ४७ ॥
जो मति पीछहि ऊपजइ । सो मति पहिली होइ ॥
कबहुँ न होवइ जिव दुखी । दादू सुखिया सोइ ॥ ४८ ॥
आदि अंत गरहन किया । माया ब्रह्म बिचार ॥
जहँ का तहवाँ ले धरा । दादू देत न बार ॥ ४९ ॥

इति बिचार को अंग संपूर्णम् ॥ १८ ॥

——:o:——

अथ बिस्वास को अंग ।

—— :o: ——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
सहजइ सहजइ होइगा । जो कुछ रचिया राम ॥
काहे को कलपहिँ मरहिँ । दुखी होत बेकाम ॥ २ ॥
साईँ किया सो होइ गया । जो कुछ करइ सो होइ ॥
करता करइ सो होत है । काहे कलपइ कोइ ॥ ३ ॥
जेते किया सो होइ गया । जो तूँ करइ सो होइ ॥
करन करावन एक तूँ । दूजा नाहीँ कोइ ॥ ४ ॥
सोई हमारा साँईयाँ । सब का पूरनहार ॥
दादू जीवन मरन का । जाके हाथ बिचार ॥ ५ ॥
सरग भवन पाताल मधि । आदि अंत सब स्रिष्ट ॥
सिरज सबहिँ को देत है । सोई हमारा इष्ट ॥ ६ ॥
करनहार करता पुरुष । हम को कैसी चिंत ॥
सब काहू की करत है । सो दादू का मिंत ॥ ७ ॥
मनसा बाचा करमना । साहिब को बिस्वास ॥
सेवक सिरजनहार का । करइ कौन की आस ॥ ८ ॥
सुमिर न आवइ जीव को । आन किया सब होइ ॥
दादू मारग मिहर का । बिरला बूझइ कोइ ॥ ९ ॥
उद्यम अवगुन को नहीँ । जो करि जानइ कोइ ॥
उद्यम मेँ आनंद है । साईँ सेतीँ होइ ॥ १० ॥
पूरनहारा पूर सो । जो चित रहती ठाम ॥
अंतर जेत उमंग सो । सकल निरंतर राम ॥ ११ ॥

पूरा पूरक पास है । नाहीँ दूर गवाँर ॥
सब जानत हैँ बावरे । देवइ को हुँसियार ॥ १२ ॥
दादू चिंता राम को । समरथ सब जानहिँ ॥
दादू राम सँभारिये । चिंता जिन आनहिँ ॥ १३ ॥
चिंता कीये कुछ नहीँ । चिंता जीव को खाइ ॥
होना था सो होइ रहा । जाना है सो जाइ ॥ १४ ॥
जिन्ह पहुँचाया प्रान को । उदर उरुधमुख खीर ॥
जठर अगिनि मेँ राखिया । कोमल कया सरीर ॥ १५ ॥
समरथ संगी संग है । बिकट घाट घट भीर ॥
साईँ सोँ है गहगही । जिन भूलइ मन बीर ॥ १६ ॥
गोबिँद के गुन चेत करि । नैन बैन पग सीस ॥
जिन मुख दीया कान कर । प्राननाथ जगदीस ॥ १७ ॥
तन मन सवज सँभारि सब । राखइ बिस्वा बीस ॥
साहिब को सुमिरइ नहीँ । दादू भा निहदीस ॥ १८ ॥
सो साहिब जिनि बीसरइ । जिन्ह घट दीया जीव ॥
गरभबास मेँ राखिया । पालइ पोषइ पीव ॥ १९ ॥
राज काज कलि मेँ खडा । देवइ हाथहुँ हाथ ॥
पूरा पूरक पास है । सदा हमारे साथ ॥ २० ॥
हिरदय राम सँभारि ले । मन राखइ बिस्वास ॥
दादू समरथ साइँयाँ । सब की पुरवइ आस ॥ २१ ॥
दादू साईँ सबहि को । सेवक होइ सुख देइ ॥
आप मूढ मति जीव का । तबहुँ नावँ नहिँ लेइ ॥ २२ ॥
सिरजनहारा सबन का । ऐसा है समरत्थ ॥
साईँ सेवक होइ रहा । सकल पसारइ हत्थ ॥ २३ ॥
धन धन साहिब तूँ बडा । कौन अनूपम रीत ॥
सकल लोक सिर साइँयाँ । होइ कर रहा अतीत ॥ २४ ॥

हउँ बलिहारी सुरत की। सब की करइ सँभाल॥
कीरी कुंजर पलक में। करता है प्रतिपाल॥ २५॥
छाजन भोजन सहज में। साईं देइ सो लेइ॥
ता तें अधिक न और कुछ। सो तूँ काह करेइ॥ २६॥
दादू टूका सहज का। संतोषी जन खाइ॥
मिरतक भोजन गुरुमुखी। काहे कलपइ जाइ॥ २७॥
दादू भाँडा देह का। तेता सहज बिचार॥
जेता हरि बिच अंतरा। तेता सबइ निवार॥ २८॥
दादू जल दल राम का। हम लेवहिं परसाद॥
संसारी समुझइ नहीं। अबिगत भाव अगाध॥ २९॥
परमेस्वर के भाव का। एक कनहुँ को खाइ॥
दादू जेता पाप था। भरम करम सब जाइ॥ ३०॥
कौन पकावइ को पीसइ। जहँ तहँ सीधा ही दीसइ॥ ३१॥
जो कुछ खुसी खुदाइ की। होवइगा पइ सोइ॥
पचि पचि कोई जिन मरइ। सुनि लीजहु सब लोइ॥ ३२॥
छूटी खुदाई कहीं को नाहीं। फिरिहहिं पृथिवी सारी॥
दूजी दहनि दूर करि बोरइ। साधू सबद बिचारी॥ ३३॥
बिना राम कहीं को नाहीं। फिरिहहु देस बिदेसा॥
दूजी दहनि दूर करि बोरइ। सुनि यह साधुसँदेसा॥ ३४॥
सदक सबूरी साच गहि। सेवत राखि अकीन॥
साहिब सौं दिल लाइ रह। मुरदा होइ मसकीन॥ ३५॥
अनबंधा टुक खात है। भरमहिं लागा मन्न॥
नावँ निरंजन लेत है। निरमल साधू जन्न॥ ३६॥
अनबंधा आगे पडइ। पीछे लेइ उठाइ॥
दादू के सिर दोष यह। जो कुछ रामरजाइ॥ ३७॥
अनबंधा आगे पडइ। फिरा बिचार रखाइ॥

दादू फिरइ न तोरता । तरवर ताकि न जाइ ॥ ३८ ॥
मीठे का मीठा लगइ । भावइ बिष भरि देइ ॥
दादू कडुवा ना कहइ । अम्रित करि करि लेइ ॥ ३९ ॥
बिपति भली हरि नावँ सोँ । कया कसौटी दुःख ॥
राम बिना किस काम का । दादू संपति सुक्ख ॥ ४० ॥
दादू बर बिस्वास बिन । जियरा डावाँडोल ॥
निकट निधी दुख पाइये । चिंतामनी अमोल ॥ ४१ ॥
बिन बिस्वासी जीयरा । चंचल नाहीँ ठौर ॥
निहचय निहचल ना रहइ । कछू और की और ॥४२ ॥
होना था सो होइ गया । जिन बाँछे सुख दुःख ॥
सुख माँगे दुख पाइया । पिय न बिसारी मुक्ख ॥ ४३ ॥
होना रहा सो होइ गया । सरग न पहुँची धाइ ॥
नरकहु तेँ हम ना डरी । हुआ सो होइगा आइ ॥ ४४ ॥
होना था सो होइ गया । जो कुछ कीया पीव ॥
पल बरधइ नहिँ छन घटइ । ऐसा जाना जीव ॥ ४५ ॥
होना था सो होइ गया । और न होवइ आइ ॥
लेना था सो लेइ रहा । और न लीया जाइ ॥ ४६ ॥
जो बिरचा सो होइगा । काहे को सिर लेइ ॥
साहिब ऊपर राखिये । देखि तमासा येइ ॥ ४७ ॥
जो जानहुँ त्योँ राखिये । तुम्ह सिर डारी राइ ॥
दूजा को देखहु नहीँ । दादू अनत न जाइ ॥ ४८ ॥
जो तुम्ह भावइ सो खुसी । हम राजी उस बात ॥
दादू के दिल सहक सो । भावइ दिन को रात ॥ ॥ ४९
करनहार जो कुछ किया । सो तो बुरा न होइ ॥
सोई सेवक संत जन । रहिबा रामरजोइ ॥ ५० ॥
करनहार जो कुछ किया । सोइ [illegible]

जो तूँ चतुर सुजान है । तो याही परवानि ॥ ५१ ॥
दादू करता हम नहीं । करता औरइ कोइ ॥
करता है सो करइगा । तूँ जिनि करता होइ ॥ ५२ ॥
कासी तजि मग्गह गया । कबिर भरोसे राम ॥
सो देही साईं मिला । दादू पूरे काम ॥ ५३ ॥
दादू रोजी राम है । राजक रजक हमार ॥
दादू उस परसाद सौं । पोषा सब परिवार ॥ ५४ ॥
पंच सँतोषा एक सौं । मन मतवाला माहिँ ॥
दादू भागी भूख सब । दूजा भावइ नाहिँ ॥ ५५ ॥
साहिब मेरा कापडा । साहिब मेरा खान ॥
सो साहिब सिरताज है । साहिब पिंड परान ॥ ५६ ॥
साईं सत संतोष दे । भाव भगति बिस्वास ॥
सदक सबूरी साच दे । माँगइ दादूदास ॥ ५७ ॥

इति बिचार को अंग संपूर्णम् ॥ २० ॥

———:o:———

अथ पीय पिछानन को अंग ।

———ooo———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
सारहुँ के सिर देखिये । उस पर कोई नाहिँ ॥
दादू ज्ञान बिचार कर । सो राखा मन माहिँ ॥ २ ॥
सब लालहु सिर लाल है । सब खूबहुँ सिर खूब ॥
सब पाकहुँ सिर पाक है । दादू का महबूब ॥ ३ ॥
परब्रह्म परात्परं । सो मम देव निरंजनं ॥
निराकारं निर्मलं । तस्य दादू बंदनं ॥ ४ ॥
एक तत्त ता ऊपर इतनी । तीन लोक ब्रहंडा ॥
धरती गगन पवन अरु पानी । सप्त द्वीप नव खंडा ॥ ५ ॥
चंद सूरुज चौरासी लख दिन । रचि ले सप्त समंदा ॥
सवा लाख मेरुगिरि परबत अठारह भारत । तीरथ ब्रत ताहू पर मंड
चौदह लोक रहइ सब रचना । दादूदास ताहि घर बंदा ॥ ६ ॥
जिन्ह पती कर धरी । थंभ बिन राखी ॥
सो हम कोँ क्योँ बीसरइ । संत जन साखी ॥ ७ ॥
प्रान पिंड हम को दिया । अंतर सेवइ ताहि ॥
जो आवइ अउसान सिर । सोई नावँ सबाहि ॥ ८ ॥
जिन्ह मुझ को पैदा किया । मेरा साहिब सोइ ॥
मैँ बंदा उस राम का । जिन्ह सिरजा सब कोइ ॥ ९ ॥
जो था कंत कबीर का । सोई बर बरिहहुँ ॥
मनसा बाचा करमना । मैँ और न करिहहुँ ॥ १० ॥
सब का साहिब एक है । जा के परगट नावँ ॥
दादू साईँ सोधि ले । ताकी मैँ बलिजावँ ॥ ११ ॥

साचा साईं सोधि कर । साचा राखी भाव ॥
दादू साचा नावँ ले । साचे मारग आव ॥ १२ ॥
साचा सतगुरु सोधि ले । साचे लीजे साध ॥
साचा साहिब सोधि कर । दादू भगति अगाध ॥ १३ ॥
जा में मरइ सो जीव है । रमता राम न होइ ॥
जनम मरन तैं रहित है । मेरा साहिब सोइ ॥ १४ ॥
उठहिँ न बइठहिँ एक रस । जागहिँ सोवहिँ नाहिँ ॥
मरहिँ न जीवहिँ जगतगुरु । उपजि खपहिँ उस माहिँ ॥१५॥
ना वह जामहिँ ना मरहिँ । ना आवहिँ ग्रभबास ॥
दादू अउधे मुख नहीं । नरककुंड दस मास ॥ १६ ॥
क्रित्रिम नहीँ सो ब्रह्म है । घटइ बढइ नहिँ जाइ ॥
पूरन निहचल एक रस । जगत न नाचइ आइ ॥ १७ ॥
उपजइ बिनसइ गुन धरइ । यह माया का रूप ॥
दादू देखत थिर नहीँ । छन छाहीँ छन धूप ॥ १८ ॥
जो नाहीँ सो उपज है । सो तो उपजइ नाहिँ ॥
अलख आदि आनादि है । उपजइ माया माहिँ ॥ १९ ॥
जो यह करता जीव था । सँपुट क्योँ आया ॥
करमहुँ के बसि क्योँ भया । क्योँ आप बँधाया ॥
क्योँ सब जोनि जगत्त में । घरबार नँचाया ॥
क्योँ यह करता जीव होइ । पर हाथ बिकाया ॥ २० ॥
दादू क्रित्रिम काल बस । सो बंधा गुन माहिँ ॥
उपजइ बिनसइ देखता । सो यह करता नाहिँ ॥ २१ ॥
जाती नूर अलाहिदा । सिफ़ाती अरवाह ॥
सिफ़ाती सिजदा करइ । जाती बे परवाह ॥ २२ ॥
खंड खंड जिन्ह ना भया । एक रस एकइ नूर ॥
ज्योँ था त्योँ ही तेज है । जोति रही भरपूर ॥ २३ ॥

तिर सँध नूर अपार है । तेज पुंज सब माहिँ ॥
दादू जोति अनंत है । आगा पीछा नाहिँ ॥ २४ ॥
वार पार नहिँ नूर का । दादू तेज अनंत ॥
कीमत नहिँ करतार की । ऐसा है भगवंत ॥२५ ॥
परम तेज परकास है । परम सो नूर निवास ॥
परम जोति आनंद है । हंसा दादूदास ॥ २६ ॥
परम तेज परात्परं । परम जोति परमेश्वरम् ॥
स्वयं ब्रह्म सदैव सदा । दादू अबिचल अस्थिरम् ॥ २७ ॥
अबिनासी सो सत्य हैं । उपजइ बिनसइ नाहिँ ॥
जेता कहिये काल मुख । सो साहिब किस माहिँ ॥ २८ ॥
साईँ मेरा सत्य है । नीरंजन निरकार ॥
दादू बिनसइ देवता । झूठा सब आकार ॥ २९ ॥
रामरटन छाडइ नहीँ । हरि ले लागा जाइ ॥
सो बीचहि अटकइ नहीँ । कला कोटि दिखलाइ ॥ ३० ॥
सो घर ही अटकइ नहीँ । जहाँ राम तहँ जाइ ॥
दादू पावइ परम सुख । बेलसइ बस्तु अघाइ ॥ ३१ ॥
उर ही मेँ उरझे घने । मूये गल दे पास ॥
ऐन अंग जहँ आप था । तहाँ गये निज दास ॥ ३२ ॥
सेवा का सुख प्रेमरस । सेज सोहागिन देहु ॥
दादु बाह है दास को । कहँ दूजा सब लेहु ॥ ३३ ॥
परपुरुषा सब परहरइ । सुंदर देखइ जागि ॥
अपना पीय पिछान करि । दादू रहिये लागि ॥ ३४ ॥
आनहु पुरुषहुँ वह नहीँ । परमपुरुष भरतार ॥
हउँ अबला समुझहुँ नहीँ । तूँ जानइ करतार ॥ ३५ ॥
लोहा माटी मिलि गया । दिन दिन काई खाइ ॥
दादू पारस राम बिन । कतहूँ गया बिलाइ ॥ ३६ ॥

लोहा पारस परस करि। पलटइ अपना अंग॥
दादू कंचन होइ रहइ। अपने साईं संग॥ ३८॥
जेहि परसे पलटइ नरा। सोई निज कर लेइ॥
लोहा कंचन होइ गया। पारस का गुन येइ॥ ३९॥
आपा नाहीं बल मिटइ। त्रिबिध तिमिर नहिं होइ॥
दादू यह गुन ब्रह्म का। सुन्न समाना सोइ॥ ४०॥
माया का गुन बल करइ। आपा उपजइ आइ॥
राजस तामस सातकी। मन चंचल होइ जाइ॥ ४१॥
दह दिसि फिरइ सो मन्न है। आवहिं जाहिं सो मन्न॥
राखनहारा प्रान है। देखनहारा ब्रन्न॥ ४२॥

इति पीव पिछानन को अंग संपूर्णम्॥ २१॥

——:o:——

अथ समरथाई को अंग ।

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
करता करत निमेष में । कीरी कुंजर होइ ॥
कुंजर तें कीरी करइ । मेटि सकइ नहिं कोइ ॥ २ ॥
करता करइ निमेष में । राई मेरु समान ॥
मेरू को राई करइ । को मेटइ फुरमान ॥ ३ ॥
करता करत निमेष में । जल माहैं थल थाप ॥
थल माहैं जलहर करइ । ऐसा समरथ आप ॥ ४ ॥
करता करत निमेष में । खाली भरइ भँडार ॥
भरिया गहि खाली करइ । ऐसा सिरजनहार ॥ ५ ॥
धरती को अंबर करइ । अंबर धरती होइ ॥
निसि अँधिआरा दिन करइ । दिन को रजनी सोइ ॥ ६ ॥
मिरतक काढि मसान तें । कहु कौन चलावइ ॥
अबिगत गति नहिं जानिये । जग आनि देखावइ ॥ ७ ॥
गुपुता गुन परगट करइ । परगट गुपुत समाइ ॥
पलक माहिं भानइ घनहि । ता की लखी न जाइ ॥ ८ ॥
सोइ सही साबित हुआ । जा मस्तक कर देइ ॥
गरिब नेवाजइ देखते । हरि अपना करि लेइ ॥ ९ ॥
सबही मारग साइँयाँ । आगे एक मुकाम ॥
सोई सनमुख कर लिया । जाही सेती काम ॥ १० ॥
मीरा मुझ सों मेहर करि । सिर पर दीया हाथ ॥
दादू कलिजुग का करइ । साईं मेरे साथ ॥ ११ ॥

समरथ सब बिधि साईंयाँ। ता की मैं बलि जावँ॥
अंतर एक जो सो बसइ। और चित्त ना लावँ॥ १२॥
दादू मारग मेहर का। सुखी सहज सों जाइ॥
भवसागर तें काढि कर। अपने लिये बोलाइ॥ १३॥
दादू जो हम चिंतवहिं। कछू न होवइ आइ॥
सोई करता सत्त है। कुछ अउरइ कर जाइ॥ १४॥
एकहु लेइ बोलाइ करि। एकहु देइ पठाइ॥
दादू अद्भुत साहिबी। क्यों ही लखी न जाइ॥ १५॥
ज्यों राखहिं त्यों रहहिंगे। अपने बल नाहिं॥
सबइ तुम्हारे हाथ है। भागि कहँ जाहिं॥ १६॥
डोरी हरि के हाथ है। गल माहें मेरइ॥
बाजीगर की बाँदरी। भावइ तहँ फेरइ॥ १७॥
ज्यों राखइ त्यों रहहिंगे। मेरा का सारा॥
हुकुमी सेवक राम का। बंदा बेचारा॥ १८॥
साहिब राखइ तो रहइ। काया माहें जीव॥
हुकुमी बंदा उठि चलइ। जबहि बोलावइ पीव॥ १९॥
खंड खंड परकास है। जहाँ तहाँ भरपूर
दादू करता कर रहा। अनहद बाजइ तूर॥ २०॥
दादू दादू कहत है। आपइ सब घट माहिं॥
अपनी रुचि आपइ कहइ। दादू तें कुछ नाहिं॥ २१॥
हम तें हुआ न होइगा। ना हम करने जोग॥
ज्यों हरि भावइ त्यों करइ। दादु कहहिं सब लोग॥ २२॥
दादू दूजा क्यों कहइ। सिर पर साहिब एक॥
सो हमको क्यों बीसरइ। जो जुग जाहिं अनेक॥ २३॥
आप अकेला सब करइ। अउरों के सिर देइ॥
दादू सोभा दास की। अपना नावँ न लेइ॥ २४॥

आप अकेला सब करइ । घट में लहर उठाइ ॥
दादू सिर दे जीव के । यों न्यारा होइ जाइ ॥ २५ ॥
ज्यों यह समझइ त्यों कहहु । यह जीव अज्ञानी ॥
जेती बाबा तें कही । इन्ह एक न मानी ॥ २६ ॥
परचा माँगहिं लोग सब । हमको कुछ देखलाइ ॥
समरथ मेरा साईंआँ । समझइ त्यों समझाइ ॥ २७ ॥
दादू तन मन लाइ करि । सेवा दृढ कर लेइ ॥
ऐसा समरथ राम है । जो माँगइ सो देइ ॥ २८ ॥
समरथ सोँ समुझावहीं । कर अनकरता होइ ॥
घट घट व्यापक पूरि सब । रहइ निरंतर सोइ ॥ २६ ॥
रहइ निआरा सब करइ । काहू लिप्त न होइ ॥
आदि अंत भानइ घने । ऐसा समरथ सोइ ॥ ३० ॥
सुर मनहीं सब कुछ करइ । यों कलि धरा बनाइ ॥
कौतुकहारा होइ गया । सब कुछ होता जाइ ॥ ३१ ॥
लुकइ छिपइ नहिं सब करइ । गुन नाहिं व्यापइ कोइ ॥
दादू निहचल एक रस । सहजहिं सब कुछ होइ ॥ ३२ ॥
बिन गुन व्यापइ सब किया । समरथ आपहिं आप ॥
निराकार न्यारा रहइ । दादू पुन्य न पाप ॥ ३३ ॥
समता के घरि सहज में । दादू दुविधा नाहिं ॥
साईं समरथ सब किया । समुझि देखि मन माहिं ॥ ३४ ।
पैदा कीया घाट घडि । आपइ आप उपाइ ॥
हिकमत अउ कारीगरी । दादू लखी न जाइ ॥ ३५ ॥
जंत्र बजाया साज करि । कारीगर करतार ॥
पाँचहुँ का रस नाद है । दादू बोलनहार ॥ ३६ ॥
पाँच ऊपना सबद सों । सबद पाँच सों होइ ॥
साईं मेरा सब किया । बूझइ बिरला कोइ ॥ ३७ ॥

है तो रती नहिँ तो नहीँ। सबकुछ उतपति होइ ॥
हुकुमी हाजिर सब किया। बूझइ बिरला कोइ ॥ ३८ ॥
नहीँ तहाँ तेँ सब किया। आपइ आप उपाइ ॥
निज तन न्यारा ना किया। दूजा आवइ जाइ ॥ ३६ ॥
नहीँ तहाँ तेँ सब किया। फिरि नाहीँ होइ जाइ ॥
दादू नाहीँ होइ रह। साहिब सोँ लव लाइ ॥ ४० ॥
मालिक खेलइ खेलि कर। बूझइ बिरला कोइ ॥
ले कर सुखिया ना भया। दे कर सुखिया होइ ॥ ४१ ॥
देने को सब भूख है। लेने को कुछ नाहिँ ॥
साईँ मेरा सब किया। समुझि देखि मन माहिँ ॥ ४२ ॥
जो साहिब सिरजा नहीँ। आपइ क्योँ कर होइ ॥
जो आपइ ह्याँ ऊपजइ। मरि करि जीवइ कोइ ॥ ४३ ॥
करम फिरावहिँ जीव को। करमहुँ को करतार ॥
करता को कोई नहीँ। दादू फेरनहार ॥ ४४ ॥

इति समरथाई को अंग संपूर्णम् ॥ २३ ॥

———ooo———

अथ सबद को अंग ।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥

सबदहि बंधा सब रहहिँ । सबदे ही सब जाइ ॥
सबदे ही सब ऊपजइ । सबदइ सबइ समाइ ॥ २ ॥

सबदे ही सच पाइये । सबदे ही संतोष ॥
सबदे ही अस्थिर भया । सबदे हि भागा सोक ॥ ३ ॥

सबदे ही सूच्छिम भया । सबदइ सहज समान ॥
सबदे ही निरगुन मिलइ । सबदे हि निरमल ज्ञान ॥ ४ ॥

सबदे ही मुकता भया । सबदइ समझइ प्रान ॥
सबदे ही सूझइ सबइ । सबदइ सुरझइ जान ॥ ५ ॥

ओंकारा तेँ ऊपजइ । अरस परस संजोग ॥
अँकुर बीज दोउ पाप पुन । येहि बिधि जोगऽरु भोग ॥६॥

ओंकारहि तेँ ऊपजइ । बिनसइ बहुत बिकार ।
भाव भगति ले थिर रहइ । दादू आतम सार ॥ ७ ॥

पहिले कीया आप तेँ । उतपत्ती ओंकार ॥
ओंकारहि तेँ ऊपजइ । पंच तत्त आकार ॥ ८ ॥

पाँच तत्त तेँ घट भया । बहु बिधि सब बिस्तार ॥
दादू घट तेँ ऊपजइ । मैँ तैँ बरन बिचार ॥ ६ ॥

एक सबद सब कुछ किया । ऐसा समरथ सोइ ॥
आगे पीछे तो करइ । जो बल हीना होइ ॥ १० ॥

नीरंजन निरकार है । ओंकारइ आकार ॥
दादू सब रँग रूप सब । सब बिधि सब बिस्तार ॥ ११ ॥

आदि सबद ओंकार है। बोलइ सब घट माहिँ॥
दादू माया बिस्तरी। परम तत्त यह नाहिँ॥ १२॥
एक सबद सौँ ऊनवइ। बरसन लागइ आइ॥
एक सबद सौँ बीखरइ। आप आप को जाइ॥ १३॥
साधू सबद सौँ मिलि रहइ। मन राखइ बिलगाइ॥
साधु सबद बिन क्योँ रहइ। तब ही बीखरि जाइ॥ १४॥
सबद जरइ सो मिलि रहइ। एक रस पूरा॥
कायर भागइ जीव लेइ। पग माँडइ सूरा॥ १५॥
सबद बिचारइ करनी करइ। रामनाम निज हिरदय धरइ॥
काया माहिँ सोधइ सार। दादू कहहिँ लहहिँ सो पार॥१६॥
काहे कौडी खरचिये। जा पर सीझइ काम॥
सबदहु कारज सिध भया। सुर मन दीजइ राम॥ १७॥
सबदवान गुरु साधु के। दूर दिसंतर जाइ॥
जेहि लागे सो ऊबरे। सूते लिये जगाइ॥ १८॥
राम रिझइ रस मोलि कर। साधू सबद सुनाइ॥
जानहुँ कर दीपक दिया। भरमत मर सब जाइ॥ १९॥
दादू बानी प्रेम की। कमल बिकासे होइ॥
साधु सबद माता कहइ। सबदहु मोहा मोइ॥ २०॥
हरि मुख बानी साधु की। सोइ पडी मेरे सीस॥
छूटइ माया मोह तेँ। प्रेमभजन जगदीस॥ २१॥
दादू मुख की राम है। सबद कहहिँ गुरुज्ञान॥
तिन्ह सबदहुँ मन मोहिया। उनमन लागा ध्यान॥ २२॥
दादू बानी ब्रह्म की। अनभय घट परकास॥
राम अकेला रहि गया। सबद निरंजन पास॥ २३॥
सबदहु माहैँ रामधन। जो कोइ लेइ बिचारि॥
दादू इस संसार मेँ। कबहुँ न आवइ हारि॥ २४॥

राम रसायन भरि धरा । साधुन्ह सबद मँझार ॥
परिखो पीवइ प्रीति सोँ । समझइ सबद बिचार ॥ २५ ॥
सबद सरोबर जल भरा । हरिजल निर्मल नीर ॥
दादू पीवइ प्रीति सोँ । तिन्ह के अखिल सरीर ॥ २६ ॥
सबदहु माहैँ रामरस । साधु भरहिँ दिया ॥
आदि अंत सब संत मिलि । योँ दादू पिया ॥ २७ ॥
पानी माहैँ राखिये । कनक कलंक न जाइ ॥
दादू साचा सबद दे । ताहि अगिनि मेँ बाहि ॥ २८ ॥
कारज को सीझइ नहीँ । मीठा बोलहिँ बीर ॥
दादू साचे सबद बिन । कटइ न तन की पीर ॥ २९ ॥
गुन तजि निर्गुन बोलिये । तेता बोल अबोल ॥
गुन गहि आपा बोलिये । तेता कहिये बोल ॥ ३० ॥
साचा सबद कबीर का । मीठा लागे मोहिँ ॥
दादू सुनता परमसुख । केता आनँद होहिँ ॥ ३१ ॥

इति साधु को अंग संपूर्णम् ।

———0———

अथ जीवित म्रितक को अंग ।

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
धरती तत्त अकास का । चंद सुरुज का लेइ ॥
दादू पानी पवन का । रामनाम कहि देइ ॥ २ ॥
दादू धरती होइ रहइ । त्यागि कपट अहँकार ॥
साइँ कारन सिर सहइ । परतछ सिरजनहार ॥ ३ ॥
जीवन माटी मिलि रहइ । साईँ सनमुख होइ ॥
दादू पहिले मरि रहइ । पीछे तो सब कोइ ॥ ४ ॥
आपा गरब गुमान तजि । मद मच्छर अहँकार ॥
गहइ गरीबी बंदगी । सेवा सिरजनहार ॥ ५ ॥
मद मच्छर आपा नहीँ । कैसा गरब गुमान ॥
सपनेही समझइ नहीँ । दादू का अभिमान ॥ ६ ॥
झूठा गरब गुमान तजि । तजि आपा अभिमान ॥
दादू दीन गरीब होइ । पाया पद निर्बान ॥ ७ ॥
भाव भगति दीनता अंग । प्रेम प्रीति सदा तेहि संग ॥ ८ ॥
सिदक सबूरी साच गहि । सेवत राख यकीन ॥
साहिब सोँ दिल लाइ रह । मुरदा होइ मसकीन ॥ ९ ॥
साहिब को सिजदा किया । सिर को धरा उतारि ॥
योँ दादू जीवत मरहिँ । हिरस हवा को मारि ॥ १० ॥
राव रंक सब मरहिँगे । जीवहिँगे ना कोइ ॥
सोई कहिये जीवता । जो मर जीवा होइ ॥ ११ ॥
मेरा बैरी मैँ मुवा । मुझे न मारइ कोइ ॥
मैँ ही मुझ को मारता । मैँ मर जीवा होइ ॥ १२ ॥

दादू आपा जब लगा । तब लग दूजा होइ ॥
यह आपा जब मिटि गया । दूजा नाहीँ कोइ ॥ १३ ॥
बैरी मारे मरि गये । चित तेँ बिसरहिँ नाहिँ ॥
दादू अजहु साल है । समुझ देखि मन माहिँ ॥ १४ ॥
तौ तूँ पावइ पीव को । जीवत मिरतक होइ ॥
आप गवाँये पिव मिलइ । जानत है सब कोइ ॥ १५ ॥
तौ तूँ पावइ पीव को । आपा कछू न जान ॥
आपा जिन्ह तेँ उपजई । सोई सहज पिछान ॥ १६ ॥
दादू पावइ पीव को । मैँ अपना सब खोइ ॥
मैँ मेरा सहजहिँ गया । निरमल दरसन होइ ॥ १७ ॥
मैँ ही मेरे पीठ सिर । मरिये ता के भार ॥
दादू गुरुपरसाद सौँ । सिर तेँ धरा उतार ॥ १८ ॥
मेरे आगे मैँ खडा । ता तेँ रहा लुकाइ ॥
दादू परगट पीव है । जो यह आपा जाइ ॥ १९ ॥
जीवत मिरतक होइ कर । मारग माहिँ आव ॥
पहिले सीस उतारि कर । पीछे धरिये पाव ॥ २० ॥
दादू मारग साधु का । खरा दुहेला जान ॥
जीवत मिरतक होइ चलहिँ । रामनाम नीसान ॥ २१ ॥
दादू मारग कठिन है । जीवत चलइ न कोइ ॥
सोई चलिहैँ बापुरा । जीवत मिरतक होइ ॥ २२ ॥
मिरतक होवहिँ सो चलहिँ । नीरंजन की बाट ॥
दादू पावहिँ पीव को । लँघहिँ अउघट घाट ॥ २३ ॥
मिरतक तब ही जानिये । जब गुन इंद्री नाहिँ ॥
मन का आपा मिटि गया । ब्रह्म समाना माहिँ ॥ २४ ॥
जीवत ही मरि जाइये । म्रित्यु माहिँ मिलि जाइ ॥
साईँ का सँग छाडि कर । कौन सहइ दुख आइ ॥ २५ ॥

कभि यह आपा जायगा । कभि यह बिसरइ और ॥
कभि यह सुखिया होयगा । कभि यह पावइ ठौर ॥ २६ ॥
आपा कहाँ देखाइये । जो कुछ आपा होइ ॥
यह तो जाता देखिये । रहता चीन्हहु सोइ ॥ २७ ॥
दादू आप छिपाइये । जहाँ न देखइ कोइ ॥
पिय को भेख देखाइये । त्योँ त्योँ आनँद होइ ॥ २८ ॥
अंतरगति आपा नहीँ । मुख सोँ मैँ तैँ होइ ॥
दादू दोख न दीजिये । योँ मिलि खेलइ दोइ ॥ २६ ॥
एकइ दसा अनन्य की । दूजी दसा न जाइ ॥
आपा भूलइ आन सब । एकइ रहइ समाइ ॥ ३० ॥
जे जन आपा मेटि कर । रहे राम लव लाइ ॥
दादू सबही देखता । साहिब सोँ मिल जाइ ॥ ३१ ॥
गरिब गरीबी गहि रहा । मसकीना मसकीन ॥
दादू आपा मेटि कर । होइ गया लवलीन ॥ ३२ ॥
मैँ है मेरा जब लगे । तब लग बिलसइ खाइ ॥
मैँ नाहीँ मेरी मिटइ । दादू निकट न जाइ ॥ ३३ ॥
मना मनी सब ले रहे । मनी न मेटी जाइ ॥
मना मनी जब मिटि गई । तबही मिलइ खुदाइ ॥ ३४ ॥
दादू मैँ मैँ जालि दे । मेरे लागइ आग ॥
मैँ मैँ अपना दूर कर । साहिब के सँग लाग ॥ ३५ ॥
दादू खोई आपनी । लज्जा कुल की कार ॥
मान बडाई पति गई । सनमुख सिरजनहार ॥ ३६ ॥
मैँ नाहीँ तब एक है । मैँ आई तब दोइ ॥
मैँ तैँ परदा मिटि गया । ज्योँ था त्योँ ही होइ ॥ ३७ ॥
नूर सरीखा करि लिया । बंदन का बंदा ॥
दादू दूजा कोइ नहीँ । मुझ सरीखा गंदा ॥ ३८ ॥

दादू आपा जब लगा । तब लग दूजा होइ ॥
यह आपा जब मिटि गया । दूजा नाहीँ कोइ ॥ १३ ॥

बैरी मारे मरि गये । चित तैँ बिसरहिँ नाहिँ ॥
दादू अजहु साल है । समुझ देखि मन माहिँ ॥ १४ ॥

तौ तूँ पावइ पीव को । जीवित मिरतक होइ ॥
आप गवाँये पिव मिलइ । जानत है सब कोइ ॥ १५ ॥

तौ तूँ पावइ पीव को । आपा कछू न जान ॥
आपा जिन्ह तेँ उपजई । सोई सहज पिछान ॥ १६ ॥

दादू पावइ पीव को । मैँ अपना सब खोइ ॥
मैँ मेरा सहजहिँ गया । निरमल दरसन होइ ॥ १७ ॥

मैँ ही मेरे पीठ सिर । मारिये ता के भार ॥
दादू गुरुपरसाद सोँ । सिर तेँ धरा उतार ॥ १८ ॥

मेरे आगे मैँ खड़ा । ता तेँ रहा लुकाइ ॥
दादू परगट पीव है । जो यह आपा जाइ ॥ १९ ॥

जीवत मिरतक होइ कर । मारग माहिँ आव ॥
पहिले सीस उतारि कर । पीछे धरिये पाव ॥ २० ॥

दादू मारग साधु का । खरा दुहेला जान ॥
जीवत मिरतक होइ चलहिँ । रामनाम नीसान ॥ २१ ॥

दादू मारग कठिन है । जीवत चलइ न कोइ ॥
सोई चलिहैँ बापुरा । जीवत मिरतक होइ ॥ २२ ॥

मिरतक होवहिँ सो चलहिँ । नीरंजन की बाट ॥
दादू पावहिँ पीव को । लाँघहिँ अउघट घाट ॥ २३ ॥

मिरतक तब ही जानिये । जब गुन इंद्री नाहिँ ॥
मन का आपा मिटि गया । ब्रह्म समाना माहिँ ॥ २४ ॥

जीवत ही मरि जाइये । म्रित्यु माहिँ मिलि जाइ ॥
साईँ का सँग छाडि कर । कौन सहइ दुख आइ ॥ २५ ॥

कभि यह आपा जायगा । कभि यह बिलसइ और ॥
कभि यह सुखिया होयगा । कभि यह पावइ ठौर ॥ २६ ॥
आपा कहाँ देखाइये । जो कुछ आपा होइ ॥
यह तो जाता देखिये । रहता चीन्हहु सोइ ॥ २७ ॥
दादू आप छिपाइये । जहाँ न देखइ कोइ ॥
पिय को भेख देखाइये । त्योँ त्योँ आनँद होइ ॥ २८ ॥
अंतरगति आपा नहीँ । मुख सौँ मैँ तैँ होइ ॥
दादू दोख न दीजिये । योँ मिलि खेलइ दोइ ॥ २६ ॥
एकइ दसा अनन्य की । दूजी दसा न जाइ ॥
आपा भूलइ आन सब । एकइ रहइ समाइ ॥ ३० ॥
जे जन आपा मेटि कर । रहे राम लव लाइ ॥
दादू सबही देखता । साहिब सौँ मिल जाइ ॥ ३१ ॥
गरिब गरीबी गहि रहा । मसकीना मसकीन ॥
दादू आपा मेटि कर । होइ गया लवलीन ॥ ३२ ॥
मैँ है मेरा जब लगे । तब लग बिलसइ खाइ ॥
मैँ नाहीँ मेरी मिटइ । दादू निकट न जाइ ॥ ३३ ॥
मना मनी सब ले रहे । मनी न मेटी जाइ ॥
मना मनी जब मिटि गई । तबही मिलइ खुदाइ ॥ ३४ ॥
दादू मैँ मैँ जालि दे । मेरे लागइ आग ॥
मैँ मैँ अपना दूर कर । साहिब के सँग लाग ॥ ३५ ॥
दादू खोई आपनी । लज्जा कुल की कार ॥
मान बडाई पति गई । सनमुख सिरजनहार ॥ ३६ ॥
मैँ नाहीँ तब एक है । मैँ आई तब दोइ ॥
मैँ तैँ परदा मिटि गया । ज्योँ था त्योँ ही होइ ॥ ३७ ॥
नूर सरीखा करि लिया । बंदन का बंदा ॥
दादू दूजा कोइ नहीँ । मुझ सरीखा गंदा ॥ ३८ ॥

सीखेहु प्रेम न पाइये । सीखेहु प्रीति न होइ ॥
सीखेहु दरद न उपजई । जब लग आप न खोइ ॥ ३९ ॥
कहिबा सुनबा गत भया । आपा पर का नास ॥
दादू मैं तैं मिटि गया । पूरन ब्रह्म प्रकास ॥ ४० ॥
दादू सूछम माहिँ ले । तिन्ह का कीजइ त्याग ॥
सब तजि राता राम सोँ । दादू यह बैराग ॥ ४१ ॥
दादू गुनी सो दरसनी । आपा धरइ उठाइ ॥
दादू निर्गुन राम गहि । डोरी लागा जाइ ॥ ४२ ॥
साईं कारनि माँस का । लोहू पानी होइ ॥
सूखा आटा अस्त का । दादू पावइ सोइ ॥ ४३ ॥
तन मन मैदा पीसि कर । छानि छानि लव लाइ ॥
योँ बिन दादू जीव का । कबहूँ सालन जाइ ॥ ४४ ॥
पीसे ऊपर पीसिये । छाने ऊपर छान ॥
तउ आतम कन ऊबरइ । दादू ऐसी जान ॥ ४५ ॥
पहिले तन मन मारिये । इनका मरदइ मान ॥
दादू काढइ अंत मेँ । पीछे सहज समान ॥ ४६ ॥
काटे ऊपर काटिये । दाधे को दउ दाइ ॥
दादू नीर न सीँचिये । तरवर बहता जाइ ॥ ४७ ॥
सब को संकट एक दिन । काल गहइगा आइ ॥
जीवत मिरतक होइ रह । ता के निकट न जाइ ॥ ४८ ॥
जीवत मिरतक होइ रहहिँ । सब को बिकारित होइ ॥
काढहु काढहु सब कहहिँ । नावँ न लेवहिँ कोइ ॥ ४९ ॥
सारा गहिरा होइ गया । अंतरजामी जान ॥
तब छूटइ संसार तेँ । पीवइ सारँग पान ॥ ५० ॥
गूँगा बहिरा बावरा । साईं कारन होइ ॥
दादु दिवाना होइ गया । ता को लखइ न कोइ ॥ ५१ ॥

जीवत मिरतक साधु की । बानी का परकास ॥
दादू मोहे रामजी । लीन भये सब दास ॥ ५२ ॥
जो तूँ मोटा मीर है । सब जीवों में जीव ।
आपा देखि न भूलिये । खरा दुलाहा पीव ॥ ५३ ॥
आपा मेटि समाइ रह । दूजा धंधा बाँधि ॥
दादू काहे पचि मराहिं । सहजहिं सुमिरन साधि ॥ ५४ ॥
आपा मेटाहिं एक रस । मन आस्थिर कर लीन ॥
अरस परस आनँद करहिं । सदा सुखी मैं दीन ॥ ५५ ॥
दादू है को भय घना । नाहीं को कुछ नाहिं ॥
दादू नाहीं होइ रह । अपने साहिब माहिँ ॥ ५६ ॥
मैं नाहीं तहँ मैं गया । एकहि दूसर नाहिं ॥
नाहीँ को ठहरा घना । दादू निज घर माहिं ॥ ५७ ॥
जहाँ राम तहँ मैं नहीं । मैं तहँ नाहीं राम ॥
दादू महल बरीक है । दोऊ कों नहिँ ठावँ ॥ ५८ ॥
बिरह अगिनि को दाग दे । जीवत मिरतक गोर ॥
दादू पहिले घर किया । आदि हमारे ठौर ॥ ५९ ॥
हमें हमारा कर लिया । जीवत करनी सार ॥
पीछे को संसा नहीं । दादू अगम अपार ॥ ६० ॥
माटी माहैं ठौर कर । माटी माटी माहिं ॥
दादू सम करि राखिये । दोउ पछ दुबिधा नाहिँ ॥ ६१ ॥

इति सबद को अंग संपूर्णम् ॥ २३ ॥

——:※:——

अथ सूरातन को अंग ।

——:o:——

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
साचा सिर सों खेल है । साधू जन को काम ॥
दादू मरन असंख्य है । सोइ कहइगा राम ॥ २ ॥
राम कहहिँ ते मरि कहहिँ । जीवत कहा न जाइ ॥
दादू ऐसे राम कह । सती सूर सम होइ ॥ ३ ॥
दादू जब मरिबा गहइ । लोगों का का लाज ॥
सती राम साचा कहइ । सब तजि पति सों काज ॥ ४ ॥
हम कायर कडु होइ रहे । सूर निराला होइ ॥
निकसि खडा मैदान में । ता सम और न कोइ ॥ ५ ॥
मरइ न जीवइ सँग चलइ । जीवइ तो घर आन ॥
जीवन मरना राम सों । सोइ सत्य करि जान ॥ ६ ॥
जनमहिँ तें व्यभिचारिनी । नख सिख भरी कलंक ॥
पलक एक सब मुख जरी । दादू धोये अंक ॥ ७ ॥
सोहग सती का पहिर करि । करइ कुटुँब का सोच ॥
बाहर सूरा देखिये । दादू भीतर पोच ॥ ८ ॥
सती न सिरजनहार सों । जरइ बिरह की झार ॥
ना वह मरइ न जरि बुझइ । ऐसे संगि दयाल ॥ ६ ॥
जो मुझे होते लाख सिर । लाखहुँ देती वारि ॥
वह मुझे दीया एक सिर । सोई सउँपइ नारि ॥ १० ॥
सत्ती जरि कोइला भई । मूये मरे की लार ॥
जउँ वह जरती राम सों । साचे सँग भरतार ॥ ११ ॥

मुये मरे सो हेतु का। जीव कि जानइ नाहिँ ॥
हेतु हरी सोँ कीजिये। अंतरजामी माहिँ ॥ १२ ॥
सूरा चढ़ि संग्राम को। पीछे पग क्योँ देइ ॥
साहिब लाज तेँ भागता। ध्रिग जीवन है तेइ ॥ १३ ॥
सेवक सूरा राम का। सोइ कहइगा राम ॥
दादु सुरा सनमुख रहइ। नहिँ कायर का काम ॥ १४ ॥
कायर काम न आवई। यह सूरोँ का खेत ॥
तन मन सउँपउ राम को। दादू सीस समेत ॥ १५ ॥
जब लग लालच जीव का। निरभय हुआ न जाइ ॥
काया माया मन तजइ। चौडे रहइ बजाइ ॥ १६ ॥
चौडे मेँ आनंद है। नावँ धरा रनजीत ॥
साहिब अपना करि लिया। अंतरगति की प्रीत ॥ १७ ॥
जो तुझे काम करीम सोँ। चौहट चाढ़ि कर नाँच ॥
झूठा है सो जायगा। निहचय रहेगा साँच ॥ १८ ॥
राम कहइगा एक को। जीवत मिरतक होइ ॥
दादू ढूँढे पाइये। कोटि मथहिँ सब कोइ ॥ १९ ॥
सूरा पूरा संतजन। साईँ को सेवइ ॥
दादू साहिब कारनहिँ। सिर अपना देवइ ॥ २० ॥
सूरा जूझहिँ खेत मेँ। साईँ सनमुख आइ ॥
सूरे को साईँ मिलइ। दादू काल न खाइ ॥ २१ ॥
मरिबे ऊपर एक पग। करता करइ सो होइ ॥
दादू साहिब कारनहिँ। ताला बेली मोइ ॥ २२ ॥
दादू अंग न खीँचिये। कहि समुझावहुँ तोहि ॥
मोहिँ भरोसा राम का। बाँका बार न होहि ॥ २३ ॥
बहुत गया थोडा रहा। अब जिव सोच निवार ॥
दादू मरना मान ले। साहिब के दरबार ॥ २४ ॥

जीवहि का संसा पडा । को का को तारहिँ ॥
दादू सोई सूरुवाँ । जो आप उबारहिँ ॥ २५ ॥
जो निकसहिँ संसार तेँ । साईँ की दिसि धाइ ॥
जो कबहूँ दादू फिरइ । पीछे मारा जाइ ॥ २६ ॥
पीछे हेला जिन करहि । आगे हेला आव ॥
आगे एक अनूप है । नहिँ पीछे का भाव ॥ २७ ॥
पीछे को पग ना धरहिँ । आगे को पग देहिँ ॥
दादू यह मत सूर का । अगम ठौर को लेहिँ ॥ २८ ॥
आगे चल पीछे फिरहिँ । ताको मुँह नहिँ दीठ ॥
दादू देखइ दोउ दल । भागे दे कर पीठ ॥ २९ ॥
दादू मरना मानि कर । रहइ नहीँ लव लाइ ॥
कायर भागइ जीव ले । अउरु न छोडे जाइ ॥ ३० ॥
सूरा होइ सुमेरु लँघ । सब गुन बंधा छूटइ ॥
दादू निरभय होइ रहइ । कायर तिरिन न टूटइ ॥ ३१ ॥
सरपा सर काला कुँजर । जोधा मारग माहिँ ॥
कोटि मेँ कोई पेस है । मरत असंसय जाहिँ ॥ ३२ ॥
जब जागे तब मारिये । बैरी जिव के साल ॥
मनसा डाइन का मरइ । क्रोध महाबलि काल ॥ ३३ ॥
पाँच चोर चीतवत रहे । मबा मोह बिष झार ॥
चेतहु पहरहि आपनो । कर गहि खडग सँभार ॥ ३४ ॥
काया कबुज कमान करि । सार सबद करि तीर ॥
दादू यह सर साधि कर । मारइ मोटे मीर ॥ ३५ ॥
काया कठिन कमान है । खइँचइ बिरला कोइ ॥
मारइ पाँचहु मीरगा । दादू सूरा सोइ ॥ ३६ ॥
जो हरि को पकडइ इन ऊपर । काम कटक दल जाहिँ कहाँ ॥
लालच लोभ क्रोध कित भागहिँ । प्रगट रहे हरि जहाँ तहाँ॥३७

साहिब को सिजदा किया। सिर को धरा उतार ॥
यौँ दादू जीवत मरहिँ। हिरिस हवा को मारि ॥ ३८ ॥
तन मन काम करीम के। आवहिँ तो नीका ॥
जिसका तिसको सउँपिये। सोच का जी का ॥ ३९ ॥
जो सिर सउँपा राम को। सो सिर भया सुनाथ ॥
दादू दे ऊरिन भया। जिसका तिसके हाथ ॥ ४० ॥
जिसका है तिस को चढइ। दादू ऊरिन होइ ॥
पहिले देवइ सो भला। पीछे तो सब कोइ ॥ ४१ ॥
साइँ तेरे नावँ पर। सिर जिव करुँ कुरबान ॥
तन मन तुम पर वारनउँ। दादू पिंड परान ॥ ४२ ॥
अपने साईँ कारनहुँ। का का नहिँ कीजइ ॥
दादू सब आरंभ तजि। अपना सिर दीजइ ॥ ४३ ॥
सिर के साटइ लीजिये। साहिब जी का नावँ ॥
खेलइ सीस उतारि कर। दादू मैँ बलि जावँ ॥ ४४ ॥
खेलइ सीस उतारि कर। अधर एक सोँ आइ ॥
दादू पावइ प्रेमरस। सुख मेँ रहइ समाइ ॥ ४५ ॥
मरनहिँ तेँ तूँ ना डरइ। सब जग मरता जाइ ॥
मिलि कर मरना राम सोँ। कलि अजरामर होइ ॥ ४६ ॥
मरने तेँ तूँ ना डरइ। मरना अंत निदान ॥
रे मन मरना सिरजा। कहि ले केवल प्रान ॥ ४७ ॥
मरने तेँ तूँ ना डरइ। म्रितु पहुँची है आइ ॥
रे मन मेरा राम कहि। बेगि बार ना लाइ ॥ ४८ ॥
मरने तेँ तूँ ना डरइ। मरना आज व काल ॥
मरना मरना का करइ। बेगि राम संभाल ॥ ४९ ॥
दादू मरना खूब है। निपट बुरा ब्यभिचार ॥
दादू पति को छाडि कर। आन भजइ भरतार ॥ ५० ॥

दादू तन तैं डेराहिँ कहूँ। बिनसि जाइ परिवार॥
कायर वहाँ न छूटहीँ। रे मन हो हुसियार॥ ५१॥
दादू मरना खूब है। मरि माहैँ मिलि जाइ॥
साहिब का सँग छाडि कर। कौन सहइ दुख आइ॥ ५२॥
माहैँ मन सोँ जूझ करि। ऐसा सूरा वीर॥
इंद्री अरिदल मानि सब। योँ कलि हुआ कबीर॥ ५३॥
साईँ कारन सीस देइ। तन मन सकल सरीर॥
दादू प्रानी पंच देइ। योँ हरि मिला कबीर॥ ५४॥
सबइ कसौटी सिर सहइ। सेवक साईँ काज॥
दादू जीवन क्योँ तजइ। भागे हरि के लाज॥ ५५॥
साईँ कारन सब तजइ। जिनका ऐसा भाव॥
दादू राम न छाडिये। भावइ तन मन जाव॥ ५६॥
दादू सेवक सो भला। सेवइ तन मन लाइ॥
दादू साहिब छाडि कर। काहू संग न जाइ॥ ५७॥
पतिब्रता पति पीय को। सेवइ दिन अरु रात॥
दादू पति को छाडि कर। काहू संग न जात॥ ५८॥
मरिहहु एक जो बार। अमर जीव के मारिये॥
तउ तरिये संसार। आतम कारज सारिये॥ ५९॥
जो तूँ प्यासा प्रेम का। जीवन का का आस॥
सिर कइ साटइ पाइये। भरि भरि पीवइ दास॥ ६०॥
मन मनसा जीते नहीँ। पंच न जीते प्रान॥
दादू रिपु जीते नहीँ। कहइ हम सूर सुजान॥ ६१॥
मन मनसा मारइ नहीँ। काया मारन जाहिँ॥
दादू बाबी मारिये। सरप मरइ क्योँ माहिँ॥ ६२॥
दादू पाखर पहिरि कर। सब से जूझन जाइ॥
अंग उघारइ सूरवाँ। चोट मुँहहिँ मुँह खाइ॥ ६३॥

जब जूझइ तब जानिये । काछि खडे का होइ ॥
चोट मुँहहिँ मुँह खाइगा । दादू सूरा सोइ ॥ ६४ ॥
सूरा तन सहजहिँ सदा । साच मेल हथियार ॥
साहिब के बल जूझता । केते किये सुमार ॥ ६५ ॥
जब लग जिय लागइ नहीँ । प्रेम प्रीति के सेल ॥
तब लग पिय क्योँ पाइये । बाज़ीगर का खेल ॥ ६६ ॥
जो तूँ प्यासा प्रेम का । किसको मैँ तैँ जीव ॥
सिर के साटे लीजिये । ते तुझ प्यारा पीव ॥ ६७ ॥
महजोधा मोटा बली । सदा हमारा मीर ॥
सब जग रूसा का करइ । जहाँ तहाँ रनधीर ॥ ६८ ॥
रहते रहते रामजन । तिन्ह भी माडा जूझ ॥
साचा मुह मोडइ नहीँ । अर्थ इताही बूझ ॥ ६९ ॥
दादू काँधे सब लगइ । निरवाहइगा और ॥
आसन अपने ले चला । दादू निहचल ठौर ॥ ७० ॥
का बल कहा पतंग का । जरत न लागइ बार ॥
बल तो हरि बलवंत का । जीवहिँ जेहि आधार ॥ ७१ ॥
राखनहारा राम है । सिर ऊपर मेरे ॥
दादू केते पचि गये । बैरी बहुतेरे ॥ ७२ ॥
बाल तुम्हारा बापजी । गिनत न राना राव ॥
मीर मलिक परधान पति । तुम्ह बिन सब ही बाव ॥ ७३ ॥
दादू राखा राम पर । अपना आप सबाह ॥
दूजा कोइ देखइ नहीँ । जानइ तउ निरबाह ॥ ७४ ॥
तुझ बिन मेरे कोइ नहीँ । हमको राखनहार ॥
जो तूँ राखइ साइँयाँ । कोई न सकइ मार ॥ ७५ ॥
सब जग छाडइ हाथ तेँ । तुम्ह जिन छाडहु राम ॥
कारज नहिँ कुछ जगत सोँ । तुम्ह ही सेतीँ काम ॥ ७६ ॥

दादू तन तेँ डेराहिँ कहँ । बिनसि जाइ परिवार ॥
कायर वहाँ न छूटहीँ । रे मन हो हुसियार ॥ ५१ ॥
दादू मरना खूब है । मरि माहैँ मिलि जाइ ॥
साहिब का सँग छाडि कर । कौन सहइ दुख आइ ॥ ५२ ॥
माहैँ मन सोँ जूझ करि । ऐसा सूरा बीर ॥
इंद्री अरिदल मानि सब । योँ कलि हुआ कबीर ॥ ५३ ॥
साईँ कारन सीस देइ । तन मन सकल सरीर ॥
दादू प्रानी पंच देइ । योँ हरि मिला कबीर ॥ ५४ ॥
सबइ कसौटी सिर सहइ । सेवक साईँ काज ॥
दादू जीवन क्योँ तजइ । भागे हरि के लाज ॥ ५५ ॥
साईँ कारन सब तजइ । जिनका ऐसा भाव ॥
दादू राम न छाडिये । भावइ तन मन जाव ॥ ५६ ॥
दादू सेवक सो भला । सेवइ तन मन लाइ ॥
दादू साहिब छाडि कर । काहू संग न जाइ ॥ ५७ ॥
पतिब्रता पति पीय को । सेवइ दिन अरु रात ॥
दादू पति को छाडि कर । काहू संग न जात ॥ ५८ ॥
मरिहहु एक जो बार । अमर जीव के मारिये ॥
तउ तरिये संसार । आतम कारज सारिये ॥ ५९ ॥
जो तूँ प्यासा प्रेम का । जीवन का का आस ॥
सिर कइ साटइ पाइये । भरि भरि पीवइ दास ॥ ६० ॥
मन मनसा जीते नहीँ । पंच न जीते प्रान ॥
दादू रिपु जीते नहीँ । कहइ हम सूर सुजान ॥ ६१ ॥
मन मनसा मारइ नहीँ । काया मारन जाहिँ ॥
दादू बाबी मारिये । सरप मरइ क्योँ माहिँ ॥ ६२ ॥
दादू पाखर पहिरि कर । सब से जूझन जाइ ॥
अंग उघारइ सूरवाँ । चोट मुँहहिँ मुँह खाइ ॥ ६३ ॥

जब जूझइ तब जानिये। काछि खडे का होइ ॥
चोट मुँहहिँ मुँह खाइगा। दादू सूरा सोइ ॥ ६४ ॥
सूरा तन सहजहिँ सदा। साच मेल हथियार ॥
साहिब के बल जूझता। केते किये सुमार ॥ ६५ ॥
जब लग जिय लागइ नहीँ। प्रेम प्रीति के सेल ॥
तब लग पिय क्योँ पाइये। बाजीगर का खेल ॥ ६६ ॥
जो तूँ प्यासा प्रेम का। किसको मैँ तैँ जीव ॥
सिर के साटे लीजिये। ते तुझ प्यारा पीव ॥ ६७ ॥
महजोधा मोटा बली। सदा हमारा मीर ॥
सब जग रूसा का करइ। जहाँ तहाँ रनधीर ॥ ६८ ॥
रहते रहते रामजन। तिन्ह भी माडा जूझ ॥
साचा मुह मोडइ नहीँ। अर्थ इताही बूझ ॥ ६९ ॥
दादू काँधे सब लगइ। निरवाहइगा और ॥
आसन अपने ले चला। दादू निहचल ठौर ॥ ७० ॥
का बल कहा पतंग का। जरत न लागइ बार ॥
बल तो हरि बलवंत का। जीवहिँ जेहि आधार ॥ ७१ ॥
राखनहारा राम है। सिर ऊपर मेरे ॥
दादू केते पचि गये। बैरी बहुतेरे ॥ ७२ ॥
बाल तुम्हारा बापजी। गिनत न राना राव ॥
मीर मलिक परधान पति। तुम्ह बिन सब ही बाव ॥ ७३ ॥
दादू राखा राम पर। अपना आप सबाह ॥
दूजा कोइ देखइ नहीँ। जानइ तउ निरबाह ॥ ७४ ॥
तुझ बिन मेरे कोइ नहीँ। हमको राखनहार ॥
जो तूँ राखइ साइँयाँ। कोई न सकइ मार ॥ ७५ ॥
सब जग छाडइ हाथ तेँ। तुम्ह जिन छाडहु राम ॥
कारज नहिँ कुछ जगत सोँ। तुम्ह ही सेतीँ काम ॥ ७६ ॥

जा तैं जीवहु तहुँ डरा। जो जिव मेरा होइ॥
जिन्ह यह जिव उपराजता। सार करइगा सोइ॥ ७७॥
जिन्हको साईं उपधरा। तिन्ह बाँका नहिं कोइ॥
सब जग रूसा का करइ। राखनहारा सोइ॥ ७८॥
साचा साहिब सीर पर। ता लागइ ना बाव॥
चरन कमल छाया रहइ। कीया बहुत पसाव॥ ७९॥
जो तूँ राखइ साइयाँ। मारि सकइ नहिँ कोइ॥
बार न बंका करि सकइ। जो जग बैरी होइ॥ ८०॥
राखनहारा राखई। तिस को कौन मारइ॥
उस को कौन डुबावई। जिस को साईं तारइ॥ ८१॥
कह दादू वे कबहुँ न हारइ। जो जन साईं को संभारइ॥८२
निरभय बैठा राम जपि। कबहुँ काल ना खाइ॥
जब दादू कुंजर चढइ। तब सूना झखि जाइ॥ ८३॥
कायर कूकुर कोटि मिलि। भूँकइ अरु भागइ॥
दादू गरगा गुरुमुखी। हस्ती ना लागइ॥ ८४॥

इति सूरातन को अंग संपूर्णम्॥ २४॥

———:o:———

अथ काल को अंग ।

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
काल न सूझइ कंध पर । मन चितवइ बहु आस ॥
दादू जिव जानइ नहीँ । कठिन काल की पास ॥ २ ॥
काल हमारे कंध चढि । सदा बजावइ तूर ॥
कालहरन करतापुरुष । क्योँ न सँभारइ सूर ॥ ३ ॥
जहवाँ दादू पग धरइ । तहाँ काल का फंध ॥
सिर ऊपर साधे खडा । अबहुँ न चेतइ अंध ॥ ४ ॥
कालगरासन का कहिय । कालरहित कह सोइ ॥
कालरहित सुमिरन सदा । बिना गरासन होइ ॥ ५ ॥
दादू मरिये राम बिन । जीवइ राम सँभाल ॥
अम्रित पीवइ आतमा । साधो बाचहिँ काल ॥ ६ ॥
यह घट काचा जल मगन । बिनसत नाहीँ बार ॥
यह घट फूटा जल गया । समुझत नहीँ गवाँर ॥ ७ ॥
फूटी काया गागरी । नव ठाहर कानी ॥
तामेँ दादू क्योँ रहइ । जीव सरीखा पानी ॥ ८ ॥
बाव भरी इस खाल का । झूठा गरब गुमान ॥
दादू बिनसइ देखता । तिसका का अभिमान ॥ ९ ॥
हम तो मूये माहिँ हैँ । जीवन केर भरम्म ॥
झूठे का का गारिबा । पाया मैँ न मरम्म ॥ १० ॥
यह बन हेरिय देखि कर । फूले फिरहिँ गवाँर ॥
दादू यह मन मीरगा । काल अहेरी रार ॥ ११ ॥

सब ही दीखइ काल मुख । आपइ गहि कर दीन्ह ॥
बिनसइ घट आकार का । दादू जो कुछ कीन्ह ॥ १२ ॥

काल कीट तन काठ का । जुरा जनम को खाइ ॥
दादू दिन दिन जीव की । आयु घटतही जाइ ॥ १३ ॥

काल गरासइ जीव को । पल पल साँसइ साँस ॥
पल पल माहैँ दिन घडी । दादू लखइ न तास ॥ १४ ॥

परग पलक की सुधि नहीँ । साँस सबद का होइ ॥
कर मुख माहैँ डालता । दादू लखइ न कोइ ॥ १५ ॥

दादू काया कारुई । देखत ही चलि जाइ ॥
जब लग साँस सरीर मेँ । रामनाम लव लाइ ॥ १६ ॥

दादू काया कारुई । मोहिँ भरोसा नाहिँ ॥
आसन कुंजर छत्रसिर । बिनसि जाहिँ छिन माहिँ ॥ १७ ॥

दादू काया कारुई । परत न लागइ बार ॥
बोलनहारा महल मेँ । सो भी चालनहार ॥ १८ ॥

दादू काया कारुई । कभी चलइ ना संग ॥
कोटि बरस का जीवना । तउ होवइगा भंग ॥ १९ ॥

कहता सुनता देखता । लेता देता प्रान ॥
दादू सो कतहूँ गया । माटी धरी मसान ॥ २० ॥

सिंगीनाद न बाजहीँ । कित गये सो जोगी ॥
दादू रहते मढी मेँ । करते रस भोगी ॥ २१ ॥

दादू जियरा जाइगा । यह तन माटी होइ ॥
उपजा सो बिनसाइगा । अमर नहीँकाल कोइ ॥ २२ ॥

दादू देही देखता । सब किस ही की जाइ ॥
जब लग साँस सरीर मेँ । गोबिँद के गुन गाइ ॥ २३ ॥

दादू देही पाहुनी । हंस बटाऊ माहिँ ॥
का जानहूँ कब चलइगा । मोहिँ भरोसा नाहिँ ॥ २४ ॥

दादू सब कोउ पाहुना। दिवस चारि संसार॥
औसर औसर सब चले। हम भी येही बिचार॥ २५॥
सब कोइ बैठे पंथ सिर। रहे बटाऊ होइ॥
जो आये सो जाहिँगे। इस मारग सब कोइ॥ २६॥
बेगि बटाऊ पंथ सिर। अब बिलंब न कीजइ॥
दादू बइठा का करइ। राम जप लीजइ॥ २७॥
संझा चलइ उतावला। पंथी बनखँड माहिँ॥
बेरिया नाहीँ ढील की। दादु बेगि घर जाहिँ॥ २८॥
दादू करह पलान करि। को चेतन चढ़ि जाइ॥
मिलि साहिब दिन देखना। साँझ पडइ जिनि आइ॥ २९॥
पंथ दुहेला दूर घर। संग न साथी कोइ॥
उस मारग हम जाहिँगे। दादू क्योँ सुख सोइ॥ ३०॥
लाँघन के रज्जू घना। कापर चट्टू दीन॥
आला पाँखी पंथ मेँ। बीहंदा आहीन॥ ३१॥
हँसता रोता पाहुना। काहू छाडि नहिँ जाइ॥
काल खडा सिर ऊपराहिँ। आवनहारा आइ॥ ३२॥
बाली बैरी काल है। सो जीव न जानहिँ॥
सब जग सूता नीँद भरि। इस तान तेँ बालहिँ॥ ३३॥
दादू करनी काल की। सब जग परलय होइ॥
राम बिमुख सब मरि गये। चेत न देखइ कोइ॥ ३४॥
साहिब को सुमिराहिँ नहीँ। बहुत उठावहिँ भार॥
दादू करनी काल की। सब परलय संसार॥ ३५॥
सूता काल जगाइ कर। सब पइसइ मुख माहिँ॥
दादू अचरज देखिया। कोई चेतइ नाहिँ॥ ३६॥
जीव बेसाहहिँ काल को। करि करि कोटि उपाय॥
साहिब को समुझइ नहीँ। योँ परलय होइ जाय॥ ३७॥

दादू कारन काल के । सकल सँवारइ आप ॥
मीच बेसाहहिँ मरन को । दादू सोक सँताप ॥ ३८ ॥
दादू अम्रित छाडि कर । बिषहिँ हलाहल खाहिँ ॥
जीव बेसाहइ काल को । मूरुख मरि मरि जाहिँ ॥ ३९ ॥
निरमल नावँ बिसारि कर । दादू जीव जँजाल ॥
नहीँ तहाँ तेँ करि लिया । मनसा माहिँ काल ॥ ४० ॥
सब जग छेली काल कसाई । खडग लिये कँठ काटइ ॥
पाँच तत्त की पाँच पाँखरी । खंड खंड करि बाँटइ ॥ ४१ ॥
सब जग सूता नीँद भरि । जागइ नाहीँ कोइ ॥
आगे पीछे देखिये । परतछ परलय होइ ॥ ४२ ॥
काल झार मेँ जग जरइ । भाग न निकसइ कोइ ॥
दादू सरनहुँ साच के । अभय अमर पद होइ ॥ ४३ ॥
ये सज्जन दुरजन भये । अंत काल की बार ॥
दादू इन्ह मेँ कोइ नहीँ । बिपत बटावनहार ॥ ४४ ॥
संगी साजन आपने । साथी सिरजनहार ॥
दादू दूजा कोइ नहीँ । येहि कलि येहि संसार ॥ ४५ ॥
एक दिन बीते चलि गये । वे दिन आये आइ ॥
रामनाम बिन जीव को । काल गरासइ जाइ ॥ ४६ ॥
जो उपजा सो बिनसिहहिँ । जो दीखइ सो जाइ ॥
दादू निरगुन नाम जप । निहचल चित्त लगाइ ॥ ४७ ॥
जो उपजा सो बिनसिहहिँ । कोई थिर न रहाहिँ ॥
दादू बारी आपनी । जो दीखहिँ सो जाहिँ ॥ ४८ ॥
सब जग मरि मरि जात है । अमर उडावनहार ॥
रहता रमता राम है । बहता सब संसार ॥ ४९ ॥
दादू कोई थिर नहीँ । यह सब आवइ जाइ ॥
अमर पुरुष आपइ रहइ । कोइ साधू लव लाइ ॥ ५० ॥

यह जग जाता देखि कर। दादू करी पुकार॥
घडी मुहूरत चालता। राखइ सिरजनहार॥ ५१॥
बिष सुख माहैं खेलता। काल पहूँचा आइ॥
उपजइ बिनसइ देखता। यह जग योँ हीं जाइं॥ ५२॥
रामनाम बिन जीव जो। केते मुये अकाल॥
मीँच बिना जो मरत हैं। ता तैं दादू साल॥ ५३॥
सरप सिंह हस्ती घना। राकस भूत परेत॥
तिस बन मैं दादू पडा। चेतइ नहीं अचेत॥ ५४॥
पूत पिता तैं बीछुडा। भूल पडा किस ठोर॥
मरइ नहीं उर फारि कर। दादू बडा कठोर॥ ५५॥
जो दिन जाइ सो बहुरि न आवइ। आयु घटइ तन छीजइ॥
अंत काल दिन आइ गया अब। दादू ढील न कीजइ॥ ५६॥
दादू औसर चलि गया। बेरिया गई बिहाइ॥
कर छिटके कहँ पाइये। जनम अमोलिक जाइ॥ ५७॥
दादू गाफिल होइ रहा। बाहिरा हुआ गवाँर॥
सो दिन चेत न आवई। सोवइ पावँ पसार॥ ५८॥
काल हमारा कर गहइ। दिन दिन खींचत जाइ॥
तबहूँ जिव जागइ नहीं। सोवत गई बिहाइ॥ ५९॥
सूता आवइ सूता जाइ। सूता खेलइ सूता खाइ॥
सूता लेवइ सूता देवइ। दादू सूता सूता जाइ॥ ६०॥
दादू देखत ही भया। स्याम बरन तैं सेत॥
तन मन जोबन सब गया। अबहुँ न हरि सों हेत॥ ६१॥
झूठे के घर देखि कर। झूठे पूछहिं जाइ॥
झूठे झूठा बोलते। रहे मसानहुँ आइ॥॥ ६२॥
प्रान पयाना करि गया। माटी धरी मसान॥
जारनहारे देखि कर। चेतइ नहीं अजान॥ ६३॥

कोई जारइ कोइ जरावइ । कोई जारन जाहिँ ॥
कोई जारन को करहिँ । दादू जीवन नाहिँ ॥ ६४ ॥
कोई गाडइ कोइ गडावइ । कोई गाडन जाहिँ ॥
कोई गाडन को करइ । दादू जीवन नाहिँ ॥ ६५ ॥
उठि रे प्रानी जाग जिव । अपना सजन सँभाल ॥
गाफिल नीँद न कीजिये । आय पहूँचा काल ॥ ६६ ॥
समरथ का सरना तजइ । गहइ आन की ओट ॥
दादू बलवँत काल की । क्योँ कर बाँचइ चोट ॥ ६७ ॥
अबिनासी के आसरे । अजरामर की ओट ॥
दादू सरनहिँ साच के । कधी न लागइ चोट ॥ ६८ ॥
मूसा भागा मरन तेँ । जहाँ जाय तहँ गोर ॥
दादू सरग पताल मेँ । कठिन काल का सोर ॥ ६९ ॥
सब मुख माहैँ काल के । मढ है मायाजाल ॥
दादू गोर मसान मेँ । झंखइ सरग पताल ॥ ७० ॥
दादू मढा मसान का । केता करहिँ डँकान ॥
मिरतक मुरदा गोर का । बहुत कराहिँ अभिमान ॥ ७१ ॥
राजा रानी राव मेँ । मैखानहुँ सी खान ॥
माया मोह पसारई । सब धरती असमान ॥ ७२ ॥
पाँच तत्त का पूतरा । यह पिंड सवाँरा ॥
मंदिर माटी माँस की । बिनसत नहीँ बारा ॥ ७३ ॥
हाड चाम का पीँजरा । बिच बोलनहारा ॥
दादू ता मेँ पैठि कर । बहु किया पसारा ॥ ७४ ॥
बहुत पसारा करि गया । कुछ हाथ न आया ॥
दादू हरि की भगति बिन । प्रानी पछताया ॥ ७५ ॥
मानसजल का बुदबुदा । पानी का पोटा ॥
दादू काया कोट मेँ । मेवा सोँ मोटा ॥ ७६ ॥

बाहर गढ निरभय करइ । जीव के ताहीं ॥
दादू माहँ काल है । सो जानइ नाहीं ॥ ७७ ॥
साच मते साहिब मिलइ । कपट मिलइगा काल ॥
साच परमपद पाइये । कपट कया में साल ॥ ७८ ॥
मनहीँ माहँ मीँच है । सारहुँ के सिर साल ॥
जो कुछ ब्यापइ राम बिन । दादू सोई काल ॥ ७९ ॥
जेती लहर बिकार की । काल कमल में सोइ ॥
प्रेमलहर सो पीय की । भिन्न भिन्न यों होइ ॥ ८० ॥
काल रूप माहँ बसइ । कोइ न जानइ ताइ ॥
खूनी करनी काल है । सब काहू को खाइ ॥ ८१ ॥
बिष अम्रित घट में बसइ । दूनहुँ एकइ ठावँ ॥
माया बिषय बिकार सब । अम्रित बस हरि नावँ ॥ ८२ ॥
कहँ सो महम्मद मीर था । सब नबियहुँ सिरताज ॥
सो भि मीर माटी हुये । अमर अलह का राज ॥ ८३ ॥
केते मरि माटी भये । बहुत बडे बलवंत ॥
दादू केते होइ गये । दानो देव अनंत ॥ ८४ ॥
धरती करते एक डग । दरिया करते फाल ॥
डाकू परबत काटते । सो भी खाये काल ॥ ८५ ॥
सब जग काँपइ काल तें । ब्रह्मा बिस्नु महेस ॥
सुर नर मुनिजन लोक सब । सरग रसातल सेस ॥ ८६ ॥
चाँद सुरुज अरु पवन जल । ब्रह्माँड खँड प्रबेस ॥
काल डरइ करतार तें । जय जय तुम्ह आदेस ॥ ८७ ॥
पवना पानी धरती अंबर । बिनसइ रबि ससि तारा ॥
पाँच तत्त सब माया बिनसइ । मानिक कहाँ बिचारा ॥ ८८ ॥
दादू बिनसहिँ तेज के । माटी के किस माहिँ ॥
अमर उपजवनहार हैं । दूजा कोई नाहिँ ॥ ८९ ॥

प्रान पवन ज्यों पातरा । काया करइ कमाइ ॥
दादू सब संसार में । क्यों ही गहा न जाइ ॥ ९० ॥
नूर तेज ज्यों जोति है । प्रान पिंड यों होइ ॥
दृष्टि मुष्टि आवइ नहीं । साहिब के बस सोइ ॥ ९१ ॥
मनहीं माहें होइ मरइ । जीवइ मनहीं माहिं ॥
साहिब साखीभूत है । दादू दूषन नाहिं ॥ ९२ ॥
आपइ मारइ आप को । आप आप को खाइ ॥
आपइ अपना काल है । दादू कह समुझाइ ॥ ९३ ॥
आपइ मारइ आप को । यह जीव बेचारा ॥
साहिब राखनहार है । सो हितू हमारा ॥ ९४ ॥

इति काल को अंग संपूर्णम् ॥२९॥

—*—

अथ सजीवन को अंग।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥
जो तूँ जोगी गुरुमुखी। लेना तत्त बिचार॥
गहि आवध गुरुज्ञान का। कालपुरुष को मार॥ २॥
नाद बिंदु सों घट भरइ। जोगी जीवइ॥
दादू काहे को मरइ। रामरस पीवइ॥ ३॥
साधू जन की बासना। सबद रहइ संसार॥
दादू आतम ले मिलइ। अमर उपजवनहार॥ ४॥
राम सरीखे होइ रहइ। यह नाहीं होनहार॥
दादू साधू अमर हैं। बिनसइ सब संसार॥ ५॥
जो कोइ सेवइ राम को। राम सरीखा होइ॥
दादू नाम कबीर ज्यों। साखी बोलइ सोइ॥ ६॥
अरथ न आया सो गया। आया सो क्यों जाइ॥
दादू तन मन जीवता। आपा ठौर लगाइ॥ ७॥
पहिले था सो अब भया। अब सो आगे होइ॥
दादू तीनों ठौर की। बिरला बूझइ कोइ॥ ८॥
जे जन बेधे प्रीति सों। ते जन सदा सजीव॥
उलटि समाना आप में। अँतर नाहीं पीव॥ ९॥
सब रँग तेरे तें रँगे। तूँ ही सब रँग माहिँ॥
सब रँग तेरे तें किये। दूजा कोई नाहिँ॥ १०॥
छूटइ दंद तो लागइ बंद। लागइ बंद तो अमरा कंद॥
अमरकंद दादू आनंद। आनँद तें मिल परमानंद॥ ११॥

जमचौरासी भाजिये । कहाँ काल को डंड ॥
कहाँ मीँच को मारिये । कहँ जोडा सत खंड ॥ १२ ॥
अमरठौर अबिनासी आसन । तहाँ निरंजन लागि रहे ॥
दादू जोगी जुग जुग जीवइ । काल ब्याल सब सहज गहे ॥१३
रोम रोम लेइ लाइ धुनि । अइसहि सदा अखंड ॥
दादू अबिनासी मिलइ । जम को दीजइ दंड ॥ १४ ॥
जोडा काल जनम मरन । जहाँ जहाँ जिव जाइ ॥
भगतपरायन लीन मन । ता को काल न खाइ ॥ १५ ॥
मरना भागा मरन तेँ । दुःखहि भागा दुक्ख ॥
दादू भय सोँ भय गया । सुखहिँ छूटा सुक्ख ॥ १६ ॥
जीवत मिलइ सो जीवता । मुये मिलइ मरि जाइ ॥
दादू दोनोँ देखि कर । जहँ जानइ तहँ लाइ ॥ १७ ॥
दादू साधन सब किया । उनमेँ लागा मन्न ॥
दादू अस्थिर आतमा । जुग जुग जीवइ जन्न ॥ १८ ॥
रहते सेतीँ लागि रह । तो अजरामर होइ ॥
दादू देख बिचार कर । जुदा न जीवइ कोइ ॥ १९ ॥
जेती करनी काल की । तेती परहरि प्रान ॥
दादू आतमराम सोँ । जो तूँ खरा सुजान ॥ २० ॥
बिष अम्रित घट मेँ बसइ । बिरला जानइ कोइ ॥
जिन्ह बिष खाये ते मुये । अमर अमी सोँ होइ ॥ २१ ॥
दादू सबही मरि गये । जीवइ नाहीँ कोइ ॥
सोई कहिये जीवता । कलि अजरामर होइ ॥ २२ ॥
देह रहइ संसार मेँ । जीव राम के पास ॥
दादू कुछ ब्यापइ नहीँ । काल झार दुख त्रास ॥ २३ ॥
काया की संगत तजइ । बइठा हरिपद माहिँ ॥
दादू निरभय होइ रहइ । कोइ गुन ब्यापइ नाहिँ ॥ २४ ॥

दादू तजि संसा सबहि। रहइ निराला होइ॥
अबिनासी के आसरे। काल न लागइ कोइ॥ २५॥
जागउ लागउ राम सों। रैन बिहाई जाइ॥
सुमिर सनेही आपना। दादू काल न खाइ॥ २६॥
जागउ लागउ राम सों। छाडहु बिषय बिकार॥
पीवहु जीवहु रामरस। आतमसाधन सार॥ २७॥
मरइ तपावइ पीय को। जीवत बाचइ काल॥
दादू निरभय नावँ ले। दोनों हाथ दयाल॥ २८॥
दादू मरने को चला। सब जीवन के साथ॥
दादू लाहा मूल सों। दोनों आये हाथ॥ २९॥
दादू जाते देखिये। लाहा मूल गवाँइ॥
साहिब की गति अगम है। सो कुछ लखी न जाइ॥ ३०॥
साहिब मिलइ तो जीवई। नहिं तो जीवइ नाहिं॥
भावइ अनत उपाय करि। दादू दूहूँ माहिं॥ ३१॥
सब जीवन साधइ नहीं। ता तें मरि मरि जाइ॥
दादू पीवहिं रामरस। सुख में रहे समाइ॥ ३२॥
दिन दिन लहुरे होहिं सब। मोटा होता जाइ॥
दादू दिन दिन ते बडे। रहे राम लव लाइ॥ ३३॥
जानहु हाजी चुप गही। मेटि अगिन की झाल॥
सदा सजीवन सुमिरिये। दादू बाचइ काल॥ ३४॥
जीवत छूटइ देहगुन। जीवत मुकुता होइ॥
जीवत काटइ करम सब। मुकुत कहावइ सोइ॥ ३५॥
जीवत ही पुतरा तरे। जीवत लाँघे पार॥
जीवत पाया जगतगुरु। दादू ज्ञान बिचार॥ ३६॥
जीवत जगपति को मिले। जीवत आतमराम॥
जीवत दरसन देखिये। दादू मन बिस्राम॥ ३७॥

जीवत पाया प्रेमरस । जीवत पिया अघाइ ॥
जीवत पाया स्वादसुख । दादू रहे समाइ ॥ ३८ ॥

जीवत भागे भरम सब । छूटे करम अनेक ॥
जीवत मुकुती सदगती । दादू दरसन एक ॥ ३६ ॥

जीवत मेला ना भया । जीवत परसन होइ ॥
जीवत जगपति ना मिलइ । दादू बूडे सोइ ॥ ४० ॥

जीवत पुतरा ना तरइ । जीवत लँघइ न पार ॥
जीवत निरभय ना भये । दादू ते संसार ॥ ४१ ॥

जीवत परगट ना भया । जीवत परचा नाहिँ ॥
जिवत न पाया पीय को । बूडे भवजल माहिँ ॥ ४२ ॥

जीवत पद पाया नहीँ । जीवत मिले न जाइ ॥
जीवत जो छूटे नहीँ । दादू गये बिलाइ ॥ ४३ ॥

दादू छूटइ जीवता । मूवा छूटइ नाहिँ ॥
मूये पीछे छूटिये । सब आये उस माहिँ ॥ ४४ ॥

मूये पीछे मुकुति बतावहिँ । मूये पीछे मेला ॥
मूये पीछे अमर भये पद । दादू भूल गहेला ॥ ४५ ॥

मूये पीछे बैकुँठबास । मूये सरग पठावहिँ ॥
मूये पीछे मुकुति बतावहिँ । दादू जग बौरावहिँ ॥ ४६ ॥

मूये पीछे पद पहुँचावहिँ । मूये पीछे तारहिँ ॥
मूये पीछे सतगत हावहिँ । दादू जीवत मारहिँ ॥ ४७ ॥

मूये पीछे भगति बतावहिँ । मूये पीछे सेवा ॥
मूये पीछे संजम राखइ । दादू दोजग देवा ॥ ४८ ॥

धरती का साधन किया । अंबर कौन सध्यास ॥
रवि ससि किस आरंभ तेँ । अमर भये निज दास ॥ ४६ ॥

साहिब मारे तेँ मुये । कोई जीवइ नाहिँ ॥
साहिब राखे तेँ रहे । दादू निजघर माहिँ ॥ ५० ॥

जो जन राखे रामजी। अपने अंग लगाइ॥
दादू कुछ व्यापइ नहिं। कोटि काल झख जाइ॥ ५१॥

इति सजीवन को अंग संपूर्णम्॥ २६॥

अथ पारिख को अंग।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥

मन चित आतम देखिये। लागा है किस ठौर॥
जहँ लागा तस जानिये। देखइ दादू और॥ २॥

दादू साधू परखिये। अंतर आतम देख॥
मन माहिँ माया रहइ। आपइ आप अलेख॥ ३॥

दादू मन की देखि कर। पीछे धरिये नावँ॥
अंतरगति की जो लखहिँ। तिनकी मैँ बलि जावँ॥ ४॥

बाहर का सब देखिये। भीतर लखा न जाइ॥
बाहर दिखला लोग का। भीतर राम दिखाइ॥ ५॥

यह पारिख है ऊपरी। भीतर की यह नाहिँ॥
अंतर की जानइ नहीँ। ता तेँ धोखा खाहिँ॥ ६॥

जो नाहीँ सो सब कहहिँ। हैँ सो कहइ न कोइ॥
खोटा खरा परखिये। ज्योँ था त्योँही होइ॥ ७॥

दहदिस फिरइ सो मन्न है। आवइ जाइ पवन्न॥
राखनहारा प्रान है। देखनहारा ब्रह्म॥ ८॥

घट की भाँति अनीति सब। मन की मेटि उपाध॥
दादू परिहर पंच की। राम कहहिँ ते साध॥ ९॥

अरथ आया तब जानिये। जब अनरथ छूटइ॥
दादू भार भरम्म का। गिर चौडहिँ फूटइ॥ १०॥

दूजा कहिबे को रहा। अंतर डारा धोइ॥
ऊपर कीये सब कहहिँ। मोहिँ न देखइ कोइ॥ ११॥

मेरे माहैं जिव रहइ। तइसी आवइ बास ॥
मुख बोलइ तब जानिये। अंतर का परकास ॥ १२ ॥

दादू ऊपर देखि कर। सब को राखइ नावँ ॥
अंतरगत की जो लखइ। तिन की मैं बलि जावँ ॥ १३ ॥

तन मन आतम एक है। दूजा सब होनहार ॥
दादु मूल पाया नहीं। दुबिधा भरम बिकार ॥ १४ ॥

काया के सब गुन बँधे। चौरासी लख जीव ॥
दादू सेवक सो नहीं। जो रँग राते पीव ॥ १५ ॥

काया के बस जीव है। होइ गये अनँत अपार ॥
दादू काया बस करइ। नीरंजन निरकार ॥ १६ ॥

पूरन ब्रह्म बिचारिये। सकल आतमा एक ॥
काया के गुन देखिये। नाना बरन अनेक ॥ १७ ॥

बुद्धि बिबेक बिचार बिन। मानुष पसू समान ॥
समुझाये समुझइ नहीं। दादू परम अज्ञान ॥ १८ ॥

सब जिव प्रानी भून हैं। साधु मिलहिं तब देव ॥
ब्रह्म मिलहि तब ब्रह्म है। दादू अलख अभेव ॥ १६ ॥

दादू बाँधा जीव है। छूटा ब्रह्म समान ॥
दादू दोनों देखिये। दूजा नाहीं आन ॥ २० ॥

करमहि के बस जीव है। करमरहित सो ब्रह्म ॥
जहँ आतम परमातमा। दादू भाग भरम्म ॥ २१ ॥

काचा उछरइ उफडई। काया हाँडी माहिं ॥
दादू पाका मिलि रहहिं। जीव ब्रह्म होइ नाहिं ॥ २२ ॥

बाँधे सुरवा बाये बाजइ। इहवाँ सो धर लीजहु ॥
रामसनेही साधू हाथे। बेग मोहिं कलि दीजहु ॥ २३ ॥

प्रान जौहरी पारखी। मन खोटा ले आवइ ॥
खोटा मन के माथे मारइ। दादू धूर उडावइ ॥ २४ ॥

अन्तरना है पर नैना नाहीं। ता तैं खोटा खाहिं॥
ज्ञान बिचार न ऊपजइ। साच झूठ समझाहिं॥ २५॥
दादू साचा लीजिये। झूठा दीजइ डार॥
साचा सनमुख राखिये। झूठा नेह निवार॥ २६॥
साचे को साचा कहइ। झूठे को झूठा॥
दादू दुबिधा कोइ नहीं। ज्यों था त्यों दीठा॥ २७॥
हीरे को कंकड़ कहइ। मूरुख लोग अजान॥
दादू हीरा हाथ ले। परखइ साधु सुजान॥ २८॥
हीरा कौडी ना लहइ। मूरुख हाथ गवाँर॥
पाया पारिख जौहरी। दादू मोल अपार॥ २९॥
अंधे हीरा परखिया। कीया कौडी मोल॥
दादू साधू जौहरी। हीरा मोल न तोल॥
सरगुन निरगुन परखिये। साधु कहइ सब कोइ॥
सरगुन निरगुन झूठ सब। साहिब के दर होइ॥ ३०॥
सरगुन सत संजम रहइ। सनमुख सिरजनहार॥
निरगुन लोभी लालची। भूजइ बिषय बिकार॥ ३१॥
खोटा खरा परेखिये। दादू कस कर लेइ॥
साचा है सो राखिये। झूठा रहइ न देइ॥ ३२॥
खोटा खरा कर देवइ पारिख। कैसेहीं बन आवइ॥
खरे खोटे का न्याव निवारइ। साहिब के मन भावइ॥ ३३॥
जिन्ह जो कहा तिन्ह त्यों माना। ज्ञान बिचार न कीन्हा॥
खोटा खरा जिय पारिख न जानहिँ। झूठ साच करि लीन्हा॥ ३४
जो निधि कहीं न पाइये। सो निधि घर घर आहि॥
दादू महँगे मोल बिन। कोई न लेवइ ताहि॥ ३५॥
खरी कसौटी कीजिये। बानी बँधती जाइ॥
दादू साचा परखिये। महँगे मोल बिकाइ॥ ३६॥

राम कसइ सेवक खरा । कधी न मोडइ अंग ॥
दादू जब लग राम है । तब लग सेवक संग ॥३७॥
कबहुँ न बिगरइ सो भला । साधू दृढ मत होइ ॥
दादू हीरा एक रस । बाँधी गठरी सोइ ॥ ३८ ॥
दादू कस कर लीजिये । बहु ता तें परमान ॥
खोटा गाँठि न बाँधिये । साहिब के दीवान ॥ ३९ ॥
खरी कसौटी पीय की । बिरला पहुँचनहार ॥
जो पहुँचे ते ऊबरे । ताहि किये ततसार ॥ ४० ॥
साह कसइ सेवक खरा । सेवक को सुख होइ ॥
साहिब करइ सो सब भला । बुरा न कहिये कोइ ॥ ४१ ॥

अथ उपज को अंग।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा। परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
माया का गुन बल करइ। आपा उपजइ आइ ॥
राजस तामस सातकी। मन चंचल होइ जाइ ॥ २ ॥
आपा नाहीं बल मिटइ। त्रिविध तिमिर नाहिं होइ ॥
दादू यह गुन ब्रह्म का। सुन्न समाना सोइ ॥ ३ ॥
अनभय उपजी गुन भया। गुन हीं पर ले जाय ॥
गुन हीं सों गहि बाँधिया। छूटइ कौन उपाय ॥ ४ ॥
दोनों पख उपजइ परइ। निरपख अनभय सार ॥
एक राम दूजा नहीं। दादू लेहु बिचार ॥ ५ ॥
काया बाउर गुनमयी। मन मुख उपजइ ज्ञान ॥
चौरासी लख जीव को। इस माया का ध्यान ॥ ६ ॥
आतमबोध बाँझ का बेटा। गुरुमुख उपजे आइ ॥
दादू पंगुल पंच बिन। जहाँ राम तहँ जाइ ॥ ७ ॥
आतम माहैं ऊपजइ। दादू पंगुल ज्ञान ॥
क्रित्रिम जाइ उलंघि कर। जहाँ निरंजन थान ॥ ८ ॥
आतमउपज अकास का। सुन धरती की बाट ॥
दादू मारग गैब का। कोई लखइ न घाट ॥ ९ ॥
आतमबोधी अनभया। साधू निरपख होइ ॥
दादू दाता राम सों। रस पीवइगा सोइ ॥१०॥
प्रेमभगति जब ऊपजइ। निहचल सहज समाध ॥
दादू पीवइ रामरस। सतगुरु के परसाद ॥ ११ ॥

प्रेमभगति जब ऊपजइ । पंगुल ज्ञान बिचार ॥
दादू हरिरस पाइये । छूटहिं सकल बिकार ॥ १२ ॥
भगति निरंजन राम की । अबिचल अबिनासी ॥
सदा सजीवन आतमा । सहजहिं परकासी ॥ १३ ॥
बंझा बिजयी आतमा । उपजा आनँदभाव ॥
सहज सील संतोष सत । प्रेममगन मन राव ॥ १४ ॥
मानुष जब उड चालते । कहते मारग माहिं ॥
दादू पहुँचे पंथ चल । कहहिं सो मारग नाहिं ॥ १५ ॥
पहिले हम सब कुछ किया । भरम करम संसार ॥
दादू अनभय ऊपजी । रहते सिरजनहार ॥ १६ ॥
पारब्रह्म कह प्रान सों । प्रान कहा घट सोइ ॥
दादू घट सब सों कहा । बिष अम्रित गुन दोइ ॥ १७ ॥
मालिक कह अरवाह सों । अरवह कह औजूद ॥
औजूद आलम सों कहा । हुकुम खबर मौजूद ॥ १८ ॥
दादू जैसा ब्रह्म है । अनभय उपजी होइ ॥
जैसा है तैसा कहइ । दादू बिरला कोइ ॥ १६

इति उपज को अंग संपूर्णम्॥२८॥

——:o:——

अथ दया निरबलता को अंग ॥

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
आपा मेटइ हरि भजइ । तन मन तजइ बिकार ॥
निरबैरी सब जीव सों । दादू यह मतसार ॥ २ ॥
निरबैरी निज आतमा । साधन का मतसार ॥
दादू दूजा राम बिन । बैरी मंझ बिकार ॥ ३ ॥
निरबैरी सब जीव सों । संत जन सोई ॥
दादू एकइ आतमा । बैरी नहिं कोई ॥ ४ ॥
सब देखा मैं सोधि कर । दूजा नाहीं आन ॥
सब घट एकइ आतमा । का हिंदू मुसलमान ॥ ५ ॥
दोनों भाई हाथ पग । दोनों भाई कान ॥
दोनों भाई नैन हैं । हिंदू मूसलमान ॥ ६ ॥
दादू को दूजा नहीं । एकइ आतमराम ॥
सतगुरु सिर पर साधु सब । प्रेमभगति बिस्राम ॥ ७ ॥
दादू ऐसा आरसी । देखत दूजा होइ ॥
भरम गया दुबिधा मिटी । दूजा नाहीं कोइ ॥ ८ ॥
किन्ह सों बैरी होइ रहा । दूजा कोई नाहिं ॥
जिन्ह के अँग तें ऊपजइ । सोई है सब माहिं ॥ ९ ॥
सब घट एकइ आतमा । जानहिं सो नीका ॥
आपा पर में चीन्हि ले । दरसन है पी का ॥ १० ॥
काहे को दुख दीजिये । घट घट आतमराम ॥
दादू सब संतोखिये । यह साधू का काम ॥ ११ ॥

एकइ अल्ला राम है । समरथ साईं सोइ ॥
मैदे के पकवान सब । खाना होइ सो होइ ॥ १२ ॥

काहे को दुख दीजिये । साईं है सब माहिँ ॥
दादू एकइ आतमा । दूजा कोई नाहिँ ॥ १३ ॥

साहिबजी का आतमा । दीजइ सुख संतोष ॥
दादू दूजा कोइ नहीँ । चौदह तीनहुँ लोक ॥ १४ ॥

दादू एकइ आतमा । साहिब है सब माहिँ ॥
साहिब के नाते मिलइ । भेख पंथ के नाहिँ ॥ १५ ॥

प्रान पिछानहिँ आप को । आतम सब भाई ॥
सिरजनहारा सब का । ता सोँ लव लाई ॥ १६ ॥

आतमराम बिचार करि । घट घट देवदयाल ॥
दादू सब संतोखिये । सब जीवहु प्रतिपाल ॥ १७ ॥

पूरन ब्रह्म बिचारिये । दुतिय भाव करि दूर ॥
सब घट साहिब देखिये । राम रहा भरपूर ॥ १८ ॥

दादू मंदिर काँच का । मरकट सोँ नहिँ जाइ ॥
दादू एक अनेक होइ । आप आप को खाइ ॥ १९ ॥

आतमभाई जीव सब । एक पेट परिवार ॥
दादू मूल बिचारिये । दूजा कौन गवाँर ॥ २० ॥

तन मन आतम एक है । दूजा सब होनहार ॥
दादू मूल पाया नहीँ । दुबिधा भरम बिकार ॥ २१ ॥

काया के बस जीव सब । होइ गये अनँत अपार ॥
दादू काया बस करइ । नीरंजन निरकार ॥ २२ ॥

घट घट के होनहार सब । प्रान परस होइ जाय ॥
दादू एक अनेक होइ । बरनहु नाना भाइ ॥ २३ ॥

आये एकइ कार सब । साईं दिये पठाइ ॥
दादू न्यारा नावँ धरि । भिन्न भिन्न होइ जाइ ॥ २४ ॥

आदि अंत सब एक है। दादू सहज समाइ ॥ २५॥

सुखा सहजहिं कीजिये। नीला भानइ नाहिं॥
काहे को दुख दीजिये। साहिब मानइ नाहिं ॥ २६ ॥

आतमदेव अराधिये। बिरोधिये नहिं कोइ॥
आराधे सुख पाइये। बीरोधे दुख होइ ॥ २७ ॥

आपइ देखइ आप को। जो दूसर नहिं होइ॥
दादू दूसर जो नहीं। दुक्ख न पावइ कोइ २८ ॥

दादू सम करि देखिये। कुंजर कीट समान॥
दादू दुबिधा दूर करि। तज आपा अभिमान ॥ २९ ॥

पूरन ब्रह्म बिचारिये। सकल आतमा एक॥
काया के गुन देखिये। नाना बरन अनेक ॥ ३० ॥

दादू आरस खुदा का। अजरामर का थान॥
दादू सो क्यों ढाहिये। साहिब का नीसान ॥ ३१ ॥

आप चिन्हावइ देहरा। तिसका करहिं जतन्न॥
परतक्ष परमेस्वर किया। मानहिं जीव रतन्न ॥ ३२ ॥

मासिति सवारी मानसा। तिस को करहिं सलाम॥
येन आप पैदा किया। सो ढाहइ मुस्लमान ॥ ३३ ॥

जंगल माहें जीव जो। जग तें रहइ उदास॥
भीत भयानक रात दिन। निहचल नाहीं बास ॥ ३४ ॥

बाचाबंधी जीव सब। भोजन पानी घास॥
आतमज्ञान न ऊपजइ। दादू करहिं बिनास ॥ ३५ ॥

काला मुँह करि करद का। दिल तें दूर निवार॥
सब सूरति सुबिहान की। मुल्ला मुरुख न मार ॥ ३६ ॥

गला गुसे का काटिये। मियाँ मनी को मार॥
पाँचो सुमिरन कीजिये। येही सबहि उबार ॥ ३७ ॥

बैर बिरोधइ आतमा। दया नहीं दिल माहिं ॥
दादू मूरति राम की। ता को मारन जाहिं ॥ ३८ ॥
कुल आलम इकें दीदम। अरवाहे इखलास ॥
बद अमल बदकार तुई। पाक यारा पास ॥ ३९ ॥
भावहीन जो पिरथिवी। दया बिहीना देस ॥
भगति नहीं भगवंत की। तहँ कइसा परवेस ॥ ४० ॥
कालजाल तें काढि कर। आतम अंग लगाइ ॥
जीव दया यह पालिये। दादू अम्रित खाइ ॥ ४१ ॥
बुरा न चाहइ जीव का। सदा सजीवन सोइ ॥
परलय विषय बिकार सब। भाव भगति रत होइ ॥ ४२ ॥
न कोई बैरी न कोई मीत। दादू राम मिलन की चीत ॥ ४३ ॥

इति दयानिरबलता को अंग संपूर्णम् ॥२९॥

——:o:——

आये एकइ कार सब । साईं दिये पठाइ ॥
आदि अंत सब एक है । दादू सहज समाइ ॥ २५ ॥
सूखा सहजहिं कीजिये । नीला भानइ नाहिं ॥
काहे को दुख दीजिये । साहिब मानइ नाहिं ॥ २६ ॥
आतमदेव अराधिये । बिरोधिये नहिं कोइ ॥
आराधे सुख पाइये । बीरोधे दुख होइ ॥ २७ ॥
आपइ देखइ आप को । जो दूसर नहिं होइ ॥
दादू दूसर जो नहीं । दुक्ख न पावइ कोइ २८ ॥
दादू सम करि देखिये । कुंजर कीट समान ॥
दादू दुबिधा दूर करि । तज आपा अभिमान ॥ २९ ॥
पूरन ब्रह्म बिचारिये । सकल आतमा एक ॥
काया के गुन देखिये । नाना बरन अनेक ॥ ३० ॥
दादू आरस खुदा का । अजरामर का थान ॥
दादू सो क्यों ढाहिये । साहिब का नीसान ॥ ३१ ॥
आप चिन्हावइ देहरा । तिसका करहिं जतन्न ॥
परतक्ष परमेस्वर किया । मानहिं जीव रतन्न ॥ ३२ ॥
मासिति सवारी मानसा । तिस को करहिं सलाम ॥
ऐन आप पैदा किया । सो ढाहइ मुस्लमान ॥ ३३ ॥
जंगल माहैं जीव जो । जग तें रहइ उदास ॥
भीत भयानक रात दिन । निहचल नाहीं बास ॥ ३४ ॥
बाचाबंधी जीव सब । भोजन पानी घास ॥
आतमज्ञान न ऊपजइ । दादू करहिं बिनास ॥ ३५ ॥
काला मुँह करि करद का । दिल तें दूर निवार ॥
सब सूरति सुबिहान की । मुल्ला मुरुख न मार ॥ ३६ ॥
गला गुसे का काटिये । मियाँ मनी को मार ॥
पाँचो सुमिरन कीजिये । येही सबहि उबार ॥ ३७ ॥

बैर बिरोधइ आतमा। दया नहीं दिल माहिँ ॥
दादू सूरति राम की। ता को मारन जाहिँ ॥ ३८ ॥
कुल आलम इकं दीदम। अरवाहे इखलास ॥
बद अमल बदकार दुई। पाक यारा पास ॥ ३९ ॥
भावहीन जो पिरथिवी। दया बिहीना देस ॥
भगति नहीँ भगवंत की। तहँ कइसा परवेस ॥ ४० ॥
कालजाल तेँ काढि कर। आतम अंग लगाइ ॥
जीव दया यह पालिये। दादू अम्रित खाइ ॥ ४१ ॥
बुरा न चाहइ जीव का। सदा सजीवन सोइ ॥
परलय विषय विकार सब। भाव भगति रत होइ ॥ ४२ ॥
न कोई बैरी न कोई मीत। दादू राम मिलन की चीत ॥ ४३ ॥

इति दयानिरवलता को अंग संपूर्णम् ॥२९॥

——:●:——

अथ सुंदरी को अंग।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवत: ॥
बंदनं सर्व साधवा। परनामं पारंगत: ॥ १ ॥
आरतवंती सुंदरी। पल पल चाहइ पीव ॥
दादू कारन कंत के। ताला बेली जीव ॥ २ ॥
रतिवंती आरती करइ। रामसनेही आव ॥
दादू अवसर अब मिलइ। यह बिरहिन का भाव ॥ ३ ॥
काहे न आओ कंत घर। क्यों तुम्ह रहे रिसाइ ॥
दादू सुंदर सेज पर। जनम अमोलिक जाइ ॥ ४ ॥
आतम अंतर आव तूँ। याही तेरी ठौर ॥
दादू सुंदर पीय तूँ। दूजा नाहीं और ॥ ५ ॥
पीय न देखा नैन भरि। कंठ न लागी धाइ ॥
सूती नाहिं गल बाँह दे। बिच हीं गई बिलाइ ॥ ६ ॥
सुरति पुकारइ सुंदरी। अगम अगोचर जाइ ॥
दादू बिरही आतमा। उठि उठि आतुर धाइ ॥ ७ ॥
साईं कारन सेज सँवारी। सब तें सुंदर ठौर ॥
दादू नारी ताहि बिन। आनि बैठाये और ॥ ८ ॥
कोई औगुन मन बसा। चित तें धरा उतार ॥
दादू पति बिन सुंदरी। राँढइ घर घर बार ॥ ९ ॥
प्रेमलहर की पालकी। आतम बैठइ आइ ॥
दादू खेलइ पीय सों। यह सुख कहा न जाइ ॥ १० ॥
सुख तें सूती नींद भर। जागइ मेरा पीव ॥
क्यों कर मेला होइगा। जागइ नाहीं जीव ॥ ११ ॥

सखी न खेलइ सुंदरी । अपने पिय सों जाग ॥
स्वाद न पाया प्रेम का । रही नहीं उर लाग ॥ १२ ॥
पंच दिढावइ पीय सों । मिलि काहे न खेलइ ॥
दादू गहिरीं सुंदरी । क्यों रहइ अकेलइ ॥ १२ ॥
सखी सोहागिन सब कहहिं । और दुरागम आइ ॥
पिय का महल न पाइये । कहाँ पुकारहु जाइ ॥ १३ ॥
सखी सोहागिन सब कहहिं । कंत न बूझइ बात ॥
मनसा बाचा करमना । मुरुछ मुरुछ जिय जात ॥ १४ ॥
सखी सोहागिनि सब कहहिं । पिय सों परस न होइ ॥
निस बासर दुख पाइये । व्यथा न जानइ कोइ ॥ १५ ॥
सखी सोहागिन सब कहहिं । प्रगट न खेलइ पीव ॥
सेज सोहागिन पाइये । दुखिया मेरा जीव ॥ १६ ॥
पर पुरुषा सब परम हैं । सुंदरि देखइ जाग ॥
अपना पीय पिछान करि । दादू रहिये लाग ॥ १७ ॥
पुरुष पुरातन छाडि कर । चली आन के साथ ॥
लोभी सँग तें बीछुडी । खडी मरोरइ हाथ ॥ १८ ॥
सुंदरि कबहूँ कंत का । मुख सों नावँ न लेइ ॥
अपने पिय के बारनहुँ । दादू तन मन देइ ॥ १९ ॥
नयन बयन करि बारनहुँ । तन मन पिंड परान ॥
दादू सुंदरि बरि गई । तुम्ह पर कंत सुजान ॥ २० ॥
तन भी तेरा मन भी तेरा । तेरा पिंड परान ॥
सब कुछ तेरा तूँ है मेरा । यह दादू का ज्ञान ॥ २१ ॥
पँच अभूषन पीय कर । सोलह सब ही ठावँ ॥
सुंदरि यह सिंगार करि । लेइ लेइ पिय का नावँ ॥ २२ ॥
यह व्रत सुंदरि ले रहइ । सदा सोहागिन होइ ॥
दादू भावइ पीय को । ता सम और न कोइ ॥ २३ ॥

सुंदरि मोहइ पीय को । बहुत भाँति भरतार ॥
रिझवइ दादू राम को । अनँत कला करतार ॥ २४ ॥
नीचँ ऊँच कुलसुंदरी । सेवा सारी होइ ॥
सोइ सोहागिन कीजिये । रूप न पीवइ धोइ ॥ २५ ॥
नदी नीर उलंघि कर । दरिया पइरी पार ॥
दादू सुंदरि सो भली । जाइ मिलइ भरतार ॥ २६ ॥
प्रेमलहर गहि ले गई । अपने प्रीतम पास ॥
आतम सुंदरि पीय को । बिलसइ दादू दास ॥ २७ ॥
सुंदरि को साईं मिला । पाया सेज सोहाग ॥
पीय सो खेलइ प्रेमरस । दादू मोटे भाग ॥ २८ ॥
दादू सुंदरि देहमें । साईं को सेवइ ॥
राती अपने पीय सो । प्रेमरस लेवइ ॥ २९ ॥
दादू निरमल सुंदरी । निरमल मेरा नाह ॥
दोनों निरमल मिलि रहे । निरमल प्रेमप्रवाह ॥ ३० ॥
तेज पुंज की सुदरी । तेज पुंज का कंत ॥
तेज पुंज की सेज पडि । दादू बना बसंत ॥ ३१ ॥
साईं सुंदरि सेज पर । सदा एक रस होइ ॥
दादू खेलइ पीय सों । ता सम और न कोइ ॥ ३२ ॥

इति सुंदरी को अंग संपूर्णम् ॥ ३० ॥

———:o:———

अथ कस्तूरिया मृग को अंग ॥

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
घट कस्तूरी मिरिग के । भरमत फिरइ उदास ॥
अंतरगति जानइ नहीं । ता तें सूँघइ घास ॥ २ ॥
सब घट में गोविंद है । संग रहहि हरि पास ॥
कस्तूरी मृग में बसइ । सूँघत डोलइ घास ॥ ३ ॥
जीव न जानइ राम को । राम जीव के पास ॥
गुरु के सबद तें बाहिरा । ता तें फिरइ उदास ॥ ४ ॥
जा कारन जग ढूँढिया । सो है घट ही माहिं ॥
मैं तैं परदा भरम का । ता तें जानत नाहिं ॥ ५ ॥
दूर कहहिं ते दूर हैं । राम रहा भरपूर ॥
नैनहुं बिन सूझइ नहीं । ता तें रविकर दूर ॥ ६ ॥
होढो हुवा प्रान से । अउ बलदाऊ मंझ ॥
नहिं जाताऊँ प्रान में । साँई का उपधंध ॥ ७ ॥
कोई दौड़े द्वारिका । कोई कासी जाहिं ॥
कोई मथुरा को चले । साहिब घट ही मांहिं ॥ ८ ॥
मंझे चेला मंझ गुरु । मंझे ही उपदेस ॥
बाहर ढूँढहि बावरे । जटा बँधाये केस ॥ ९ ॥
सब घट माहैं रमि रहा । बिरला बूझइ कोइ ॥
सोई बूझइ राम को । रामसनेही होइ ॥ १० ॥
सदा रहइ सँग सन्मुखे । दादू लखइ न गूझ ॥
सपने ही समुझइ नहीं । क्यों करि लहइ अबूझ ॥ ११ ॥

जडमत जिव जानइ नहीँ । परम स्वाद सुख जाइ ॥
चेतन समुझइ स्वाद सुख । पीवइ प्रेम अघाइ ॥ १२ ॥
जागत जो आनँद करइ । सो पावइ सुखस्वाद ॥
सूते सुक्ख न पाइये । प्रेम गवाँया बाद ॥ १३ ॥
जिन्ह का साहिब जागता । सेवक सदा सचेत ॥
सावधान सनमुख रहइ । गिर गिर पडइ अचेत ॥ १४ ॥
दादू साईँ चेत है । हम ही भये अचेत ॥
प्रानी राख न जानहीँ । ता तेँ निरफल खेत ॥ १५ ॥
गोविंद के गुन बहुत हैँ । कोई न जानइ जीव ॥
अपनी बूझइ आप गति । जो कुछ कीया पीव ॥ १६ ॥

इति कस्तूरिया मृग को अंग संपूर्णम् ॥३१॥

———:o:———

अथ निंदा को अंग।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्ब साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥
साधू निर्मल मन नहीं। राम रमहिं सम भाइ॥
दादू अवगुन काढि कर। जीव रसातल जाइ॥ २॥
जब ही साधु सताइये। तब ही उरुध्र पलक्कै॥
कास धसइ धरती खसइ। तीनों लोक गरक्क॥ ३॥
जेहि घर निंदा साधु की। सो घर गये समूल॥
तिन्ह की नींवँ न पाइये। नावँ ठावँ नहिं धूल॥ ४॥
निंदा नावँ न लीजिये। सपनेहू जिन होइ॥
ना हम कहहिं न तुम्ह सुनइ। हम जिन भाषइ कोइ॥ ५॥
निंदा कीये नरक है। कीट पडइ मुख माहिं॥
राम बिमुख जामइ मरइ। भगमुख आवहिं जाहिं॥ ६॥
निंदक बपुरा जिन मरइ। पर उपकारी सोइ॥
हम को करता ऊजरा। आपइ मइला होइ॥ ७॥
जेहि बिधि आतम ऊधरइ। परसइ प्रीतम प्रान॥
साधु सबद को निंदना। समझइ चतुर सुजान॥ ८॥
अनदेखा अनरथ कहइ। कलि पृथिवी का पाप॥
धरती अंबर जब लगा। तब लग करहिं कलाप॥ ९॥
अनदेखा अनरथ कहइ। अपराधी संसार॥
जब लेखा तब लेइगा। समरथ सिरजनहार॥ १०॥
दादू डरिये लोक तें। कइसी धरहिं उठाइ॥

अनदेखी अजगैब की । कइसी कहहिँ बनाइ ॥ ११ ॥
अम्रित बिष बिष को अम्रित । फेरि धरहिँ सब नावँ ॥
निरमल मल मैला बिमल । जाहिँगे सो किस ठावँ ॥ १२ ॥
साचे को झूठा कहहिँ । झूठे को साचा ॥
राम दोहाई काढ़िये । कंठ तेँ बाचा ॥ १३ ॥
झूठ न कहिये साच को । साच न कहिये झूठ ॥
साहिब तो मानइ नहीँ । लागइ पाप अखूठ ॥ १४ ॥
झूठ दिखावहिँ साच को । भायानक भयभीत ॥
साचा राता साच सोँ । झूठ न आनहिँ चीत ॥ १५ ॥
साचे को झूठा कहहिँ । झूठा साच समान ॥
दादू अचरज देखिया । यह लोगोँ का ज्ञान ॥ १६ ॥
ज्योँ ज्योँ निंदहिँ लोग बिचारा ।
त्योँ त्योँ छीजइ रोग हमारा ॥ १७ ॥

इति निंदा को अंग संपूर्णम् ॥ ३२ ॥

———:o:———

अथ निरगुन को अंग ।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
दादू चंदन बावना । बसे बनहिँ महँ आइ ॥
सुखदाई सीतल किये । तीनोँ ताप नसाइ ॥ २ ॥
काल कुलहाडा हाथ ले । काटन लागा धाइ ॥
अइसा यह संसार है । डार मूल ले जाइ ॥ ३ ॥
सतगुरु चंदन बावना । लागा रहइ भुअंग ॥
दादू बिष छाडइ नहीँ । कहा करइ सतसंग ॥ ४ ॥
दादू कीडा नरक का । राखा चंदन माहिँ ॥
उलटि सो कूदा नरक मेँ । चंदन भावइ नाहिँ ॥ ५ ॥
सतगुरु साधु सुजान है । सिष का गुन नहिँ जाइ ॥
दादू अम्रित छाडि कर । बिषइ हलाहल खाइ ॥ ६ ॥
कोटि बरस लोँ राखिये । बासा चंदन पास ॥
दादू गुन लीये रहइ । कधी न लागइ बास ॥ ७ ॥
कोटि बरस लोँ राखिये । पत्थर पानी माहिँ ॥
दादू आडा अंग है । भीतर भेदइ नाहिँ ॥ ८ ॥
कोटि बरस लोँ राखिये । लोहा पारस संग ॥
दादू रोम का आँतरा । पलटइ नाहीँ अंग ॥ ९ ॥
कोटि बरस लोँ राखिये । जीव ब्रह्म सँग दोइ ॥
दादू माहिँ बासना । कधी न मेला होइ ॥ १० ॥
मूसा जरता देखि कर । दादू हंस दयाल ॥
मानसरोवर ले चला । पंखहु काटइ काल ॥ ११ ॥

देखइ मानुस परतछ काल ।
ज्यों करि त्यों करि दादू हाल ॥१२॥
जीव भुअंगम कूप में । साधू काढइ आइ ॥
दादू बिषहर बिष भरे । फिरि ताही को खाइ ॥ १३ ॥
दादू दूध पिआइये । बिषहर बिष कर लेइ ॥
गुन का औगुन कर लिया । ताही को दुख देइ ॥ १४ ॥
बिनहीं पावक जर मुआ । जावासा जल माहिं ॥
दादू सूखा सींचता । जल को दूषन नाहिं ॥ १५ ॥
सुफल बिरिछ परमारथी । सुख देवइ फल फूल ॥
दादू ऊपर बैठि कर । निरगुन काटइ मूल ॥ १६ ॥
दादू सरगुन गुन करइ । निरगुन मानइ नाहिं ॥
निरगुन मरि निरफल गया । सरगुन साहिब माहिं ॥ १७
निरगुन गुन मानइ नहीं । कोटि करइ जो कोइ ॥
दादू सब कुछ सउँपिये । सो फिर बैरी होइ ॥ १८ ॥
दादू सरगुन लीजिये । निरगुन दीजइ डार ॥
सरगुन सनमुख राखिये । निरगुन नेह निवार ॥ १९ ॥
सरगुन गुन केते करहिं । निरगुन मान न एक ॥
दादू साधू सब कहहिं । निरगुन नरक अनेक ॥ २० ॥
सरगुन गुन केते करहिं । निरगुन नासइ ढाहि ॥
दादू साधू सब कहहिं । निरगुन निरफल जाहि ॥ २१ ॥
सरगुन गुन केते करहिं । निरगुन मान न कोइ ॥
दादू साधू सब कहहिं ॥ भला कहाँ तें होइ ॥ २२ ॥
सरगुन गुन केते करहिं । निरगुन मान न नीच ॥
दादू साधू सब कहहिं । निरगुन के सिर मींच ॥ २३ ॥
साहिबजी सब गुन करहिं । सतगुरु के घट होइ ॥
दादू काढइ कालमुख । निरगुन मान न कोइ ॥ २४ ॥

साहिबजी सब गुन करहिं। सतगुरु माहै आइ॥
दादू राखा जीव दे। निरगुन मेटा जाइ॥ २५॥
साहिबजी सब गुन करहिं। सतगुरु का दे संग॥
दादू परलय राखि ले। निरगुन पलटइ अंग॥ २६॥
साहिबजी सब गुन करहिं। सतगुरु आडा देइ॥
दादू तारइ देखता। निरगुन गुन नाहिं लेइ॥ २७॥
सतगुरु दीया राम धन। रहइ सो बुद्धि बताइ॥
मनसा बाचा करमना। बिलस बिनंडइ खाइ॥ २८॥
कीया क्रित मेटइ नहीं। गुन हीं माहिं समाइ॥
दादू बढइ अनंत धन। कबहूँ कमी न जाइ॥ २९॥

इति निरगुन को अंग संपूर्णम् ॥३३॥

———:०:———

अथ बिनती को अंग ।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥
दादू बहुत बुरा किया । तुम्हैं न करना रोस ॥
साहिब सबही का धनी । बंदे का सब दोस ॥ २ ॥
दादू बहुत बुरा किया । मुख सों कहा न जाइ ॥
निरमल मेरा साइँयाँ । ता को दोस न लाइ ॥ ३ ॥
साईं सेवा थोर मैं । अपराधी बंदा ॥
दादू दूजा कोइ नहीं । मुझ सरीखा गंदा ॥ ४ ॥
तिल तिल का अपराधी तेरा । रती रती का चोर ॥
पल पल का अवगुनहीं तेरा । बकसहु अवगुन मोर ॥ ५ ॥
महापराधी एक मैं । सारे येहि संसार ॥
औगुन मेरे अति घने अंत न आवइ पार ॥ ६ ॥
मरजादा का मित नहीं । ऐसे किये अपार ॥
मैं अपराधी बापजी । तुम्ह हीं एक अधार ॥ ७ ॥
दोष अनेक कलंक सब । बहुत बुरा मुझ माहिं ॥
मैं कीये अपराध सब । तुम्ह तें छाना नाहिं ॥
गुनहगार अपराधी तेरा । भाग कहाँ हम जाहिं ॥
दादू देखा सोधि सब । तुम्ह बिन कहिं न समाहिं ॥ ८
आदि अंत लों आइ करि । सुकित कछू नहिं कीन्ह ॥
मया मोह मद मंछरा । स्वाद सबइ चित दीन्ह ॥ ६ ॥
काम क्रोध संसय सदा । कबहुँ नावँ नहि लीन ॥
पखँड प्रपंचा पापमय । दादू अइसहि छीन ॥ १० ॥

बहु बंधन सों बाँधिया । एक बेचारा जीव ॥
अपने बल छूटइ नहीं । छोडनहारा पीव ॥ ११ ॥
दादू बंदीवान है । बंदीछोड दिवान ॥
अब जिन राखहु बंदि में । मीरा मेहरबान ॥ १२ ॥
दादू अंतर कालिमा । हिरदय बहुत बिकार ॥
परगट पूरा दूर करि । दादू करइ पुकार ॥ १३ ॥
सब कुछ ब्यापइ रामजी । कुछ छूटा नाहिं ॥
तुम्ह तें कहाँ छिपाइये । सब देखहु माहिं ॥ १४ ॥
सबल सार मन में रहइ । राम बिसरि क्यों जाय ॥
यह दुख दादू क्यों सहइ । साईं करहु सहाय ॥ १५ ॥
राखनहारा राख तूं । यह मन मेरा राखि ॥
तुम्ह बिन दूजा कोइ नहीं । साधू बोलहिं साखि ॥१६ ॥
माया बिषय बिकार तें । मेरा मन भागइ ॥
सोई कीजइ साइँयाँ । तूँ मीठा लागइ ॥ १७ ॥
साईं दीजइ सूरती । तो मीठा लागइ ॥
दूजा खारा होइ सब । सूता जिव जागइ ॥ १८ ॥
साहिब को भावइ नहीं । सो हम तें जिन होइ ॥
सतगुरु लीजइ आपना । साधु न मानइ कोइ ॥ १९ ॥
आपइ देखइ आप को । सो नैना दे मुज्झ ॥
मीरा मेरा मेहर कर । दादू देखइ तुज्झ ॥ २० ॥
दादू पछतावा रहा । सके न ठाहर लाइ ॥
अरथ न आया राम के । यह तन योंहीं जाइ ॥ २१ ॥
कहते सुनते दिन गये । होइ कछू न आवा ॥
दादू हरि की भगति बिन । प्रानी पछतावा ॥ २२ ॥
वह कुछ हम तें ना भया । जा पर रीझइ राम ॥
दादू इस संसार में । हम आये बेकाम ॥ २३ ॥

दिन दिन नवतम भगति दे । दिन दिन नवतम नावँ ॥
दिन दिन नवतम नेह दे । मैं बलिहारी जावँ ॥ २४ ॥
साईं सत संतोष दे । भाव भगति बिस्वास ॥
सिदक सबूरी साच दे । माँगइ दादूदास ॥ २५ ॥
साईं संसय दूर करि । करि संका का नास ॥
मानि भरम दुखदारुना । समता सहज प्रकास ॥ २६ ॥
नाहीं परगट होइ रहा । है सो रहा लुकाइ ॥
सइँयाँ परदा दूर करि । तूँ होइ परगट आइ ॥ २७ ॥
माया परगट होइ रही । जो नहिं होता राम ॥
अरस परस मिलि खेलते । सब जिव सब ही ठाम ॥ २८ ॥
दया करइ तब अंग लगावइ । भगति अखंडित देवइ ॥
दादू दरसन आप अकेला । दूजा हरि सब लेवइ ॥ २९ ॥
साधु सिखावइ आतमा । सेवा दृढ करि लेहु ॥
पारब्रह्म सों बीनती । दया करि दरसन देहु ॥ ३० ॥
साहिब साधु दयाल है । हम ही अपराधी ॥
दादू जीव अभागिया । अबिद्यासाधी ॥ ३१ ॥
सब जिव तोरहिं राम सों । पै राम न तोरइ ॥
दादू काँचे ताग ज्यों । तोरइ त्यों जोरइ ॥ ३२ ॥
फूटा फेर सँवार करि । ले पहुँचावइ ओर ॥
अइसा कोई ना मिला । दादू गया बहोर ॥ ३३ ॥
ऐसा कोई ना मिला । तन फेर सँवारइ ॥
बूढे तें बाला किया । छय काल निवारइ ॥ ३४ ॥
गलइ बिलइ कर बीनती । एकमेक अरदास ॥
अरस परस करुना करहिं । दरवहिं दादू दास ॥ ३५ ॥
साईं तेरे डर डरउँ । सदा रहउँ भयभीत ॥
अजा सिंह ज्यों भय घना । दादू लीया जीत ॥ ३६ ॥

पलक माहिँ प्रगटइ सही। जो जन करहि पुकार॥
दीन दुखी को देखि कर। अति आतुर तेहि बार॥
आगे पीछे सँग रहइ। आप उठाये भार॥
साधु दुखी तब हरि दुखी। अइसा सिरजनहार॥ ३५॥
सेवक की रच्छा करइ। सेवक का प्रतिपाल॥
सेवक के बाहर चढइ। दादू दीनदयाल॥ ३६॥
काया नाव समुद्र मेँ। अवघट बूडइ आय॥
येहि अवसर एक साधु बिन। दादू कौन सहाय॥ ३७॥
यह तन मेरा भवजला। क्योँ कर लाँघइ तीर॥
केवट बिन कइसे तरइ। दादू गहिर गँभीर॥ ३८॥
पिंड परोहन सिंधुजल। भवसागर संसार॥
राम बिना सूझइ नहीँ। दादू खेवनहार॥ ३९॥
यह घट बोहित धार मेँ। दरिया वार न पार॥
भीत भयानक देखि कर। दादू करी पुकार॥ ४०॥
कलिजुग घोर अँधार है। तिसका वार न पार॥
दादू तुम्ह बिन क्योँ तरइ। समरथ सिरजनहार॥ ४१॥
काया के बस जीव है। कस कस बाँधा माहिँ॥
दादू आतमराम बिन। क्योँ ही छूटइ नाहिँ॥ ४२॥
प्रानी बंधा पंच सोँ। क्योँ ही छूटइ नाहिँ॥
निरधन आपा मारिये। यह जिव काया माहिँ॥ ४३॥
तुम्ह बिन धनी जो जीव का। योँ ही आवइ जाइ॥
जो तूँ साईँ सत्त है। बेगहिँ प्रगटहि आइ॥ ४४॥
निरधन आपा मारिये। धनी न धोरी कोइ॥
दादू सो क्योँ मारिये। साहिब सिर पर होइ॥ ४५॥
राम बिमुख जुग जुग दुखी। लख चौरासी जीव॥
जाम मरइ जग अवटई। राखनहारा पीव॥ ४६॥

समरथ सिरजनहार है । जो कुछ करइ सो होइ ॥
दादू सेवक राखि ले । काल न लागइ कोइ ॥ ४७ ॥
साईं साचा नावँ दे । जाल झार मिटि जाइ ॥
दादू निरभय होइ रहइ । कबहूँ काल न खाइ ॥ ४८ ॥
कोइ नहीं करतार बिन । प्रान उधारनहार ॥
जियरा दुखिया राम बिन । दादू येहि संसार ॥ ४६ ॥
जिन्ह की रच्छा तूँ करइ । ते उबरे करतार ॥
जे तुझ छाडे हाथ तें । ते डूबे संसार ॥ ५० ॥
राखनहारा एक तूँ । मारनहार अनेक ॥
दादू को दूजा नहीं । तूँही आपहि देख ॥ ५१ ॥
जुग ज्वाला जमरूप है । साहिब राखनहार ॥
तुम्ह बीच अंतर जिन पडइ । ता तें करउँ पुकार ॥ ५२ ॥
जहँ तहँ बिषय बिकार तें । तुम्ह ही राखनहार ॥
तन मन तुम्ह को सौंपिया । साचा सिरजनहार ॥ ५३ ॥
नरक रसातल जात हैं । तुम्ह बिन सब संसार ॥
कर गहि करता काढि ले । दे अवलंब अधार ॥ ५४ ॥
दैव लागि जग परजरइ । घटि घटि सब संसार ॥
हम तें कछू न होत है । तूँहि बुझावनहार ॥ ५५ ॥
आतम जीव अनाथ सब । करतार उबारइ ॥
राम निहोरा कीजिये । जिन काहू मारइ ॥ ५६ ॥
अरस जिमी अवजूद में । तहाँ तपइ अफताब ॥
सब जग जरता देखि कर । दादु पुकारै साब ॥ ५७ ॥
सकल भुअन सब आतमा । निरबिष करि हरि लेइ ॥
परदा है सो दूर करि । कुसम लहर नहिं देइ ॥ ५८ ॥
तन मन निरमल आतमा । सब काहू की होइ ॥
दादू बिषय बिकार की । बात न बूझइ कोइ ॥ ५६ ॥

समरथ धोरी कंध धरि। रथ ले और निबाहिं॥
मारग माहिं न मेलिये। पीछहिं बिरद लजाहिं॥ ६० ॥
गगन गिरइ तब को धरइ। धरती धर छाडइ॥
जो तुम्ह छाडहु राम रथ। कंधा को माँडइ॥ ६१ ॥
ज्यों वे बरत गगन तें टूटइ। कहाँ धरनि कहाँ ठाम॥
लागी सुरति अंग तें छूटइ। सो कित जीवइ राम॥ ६२ ॥

अंतरजामी एक तूँ। आतम के आधार॥
जो तुम्ह छाडहु हाथ तें। कौन सँवारनहार॥ ६३ ॥
तेरा सेवक तुम्ह लगे। तुम्हही माथे भार॥
दादू बूडत राम जी। बेग उतारहु पार॥ ६४ ॥

सत छूटा सुरतन गया। पउरुख भागा जाइ॥
कोई धीरज ना धरइ। काल पहूँचा आइ॥ ६५ ॥
संगी थाके संग के। मेरा कुछ न बसाइ॥
भाव भगति धन लूटिये। दादू दुखी खुदाइ॥ ६६ ॥
दादू जियरा जक नहीं। बिसराम न पावइ॥
आतम पानी नूँन ज्यों। अस होइ न आवइ॥ ६७ ॥

तेरी खूबी खूब है। सब नीका लागइ॥
सुंदर सोभा काढि ले। सब कोई भागइ॥ ६८ ॥
तुम्ह हहु तइसी कीजहू। तो छूटहिंगे जीव॥
हम हैं अइसी जिन करहु। मैं सदके जिव पीव॥ ६९ ॥
अननाथहुँ का आसरा। निराधार आधार॥
निरधन का धन राम है। दादू सिरजनहार॥ ७० ॥
साहिब दर दादू खडा। निस दिन करइ पुकार॥
मीरा मेरा मेहर करि। साहिब दे दीदार॥ ७१ ॥
दादू प्याला प्रेम का। साहिब राम पिआइ॥
परगट प्याला देहु भरि। मिरतक लेहु जिआइ॥ ७२ ॥

अल्ला आले नूर का । भरि भरि प्याला देहु ॥
हम को प्रेम पिलाइ करि । मतवाला करि लेहु ॥ ७३ ॥

तुम्ह को हम से बहुत हैं । हम को तुम्ह से नाहिँ ॥
दादू को जिन परिहरइ । तूँ रह नैनहुँ माहिँ ॥ ७४ ॥

तुम्ह तें तबही होइ सब । दरस परस दरहाल ॥
हम तें कबहुँ न होइगा । जो बीतहिँ जुग काल ॥ ७५ ॥

तुम्ह ही तें तुम्ह को मिलइ । एक पलक में आइ ॥
हम तें कबहुँ न होइगा । कोटि कलप जो जाइ ॥ ७६ ॥

साहिब सौँ मिलि खेलते । होता प्रेमसनेह ॥
दादू प्रेमसनेह बिन । खरी दुहेली देह ॥ ७७ ॥

साहिब सौँ मिलि खेलते । होता प्रेमसनेह ॥
परगट दरसन देखते । दादू सुखिया देह ॥ ७८ ॥

आज्ञा अपरंपार की । बस अंबर भरतार ॥
हरे पटंबर पहिर करि । धरती करइ सिँगार ॥

बसुधा सब फूलइ फरइ । पृथिवी अनँत अपार ॥
गगन गरज जल थल भरे । दादू जय जय कार ॥ ७९ ॥

काला मुँह करि काल का । साईं सदा सुकाल ॥
मेघ तुम्हारे घर घना । बरसहु दीनदयाल ॥ ८० ॥

तुम्ह को भावइ और कुछ । तुम्ह कुछ कीया और ॥
मेहर करहु तो छूटिये । नाहिं तो नाहीं ठौर ॥ ८१ ॥

मुझ भावइ सो मैं किया । तुझ भावइ सो नाहिं ॥
दादू गुनहगार है । मैं देखा मन माहिँ ॥ ८२ ॥

खुसी तुम्हारी त्यों करहु । हम तो मानी हार ॥
भावइ बंदा बकसिये । भावइ गहि करि मार ॥ ८३ ॥

जो साहिब लेखा लिया। सीस काट सूली दिया॥
मेहर माया कर फल कीया। जीये जीये कर जीया॥ ८४॥

इति बिनती को अंग संपूर्णम्॥ ३४॥

अथ साषीभूत को अंग ॥

———:0:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्ब साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥

देखनहारा जगत का । अंतर पूरइ साखि ॥
दादू संमत सो सही । दूजा और न राखि ॥ २ ॥

माहैं तैं मुझ को कहइ । अंतरजामी आप ॥
दादू दूजा धुंध है । साचा मेरा जाप ॥ ३ ॥

करता है सो करइगा । दादू साषीभूत ॥
कौतुकहारा होइ रहा । अनकरता अवधूत ॥ ४ ॥

आप अकेला सब करइ । घट में लहर उठाइ ॥
दादू सिर दे जीव के । यों न्यारा होइ जाइ ॥ ५ ॥

आप अकेला सब करइ । औरों के सिर देइ ॥
दादू सोभादास को । अपना नावँ न लेइ ॥ ६ ॥

राजस करि उतपति करइ । सातक करि प्रतिपाल ॥
तामस करि परलय करइ । निरगुन कौतुकहार ॥ ७ ॥

ब्रह्म जीव हरि आतमा । खेलइ गोपी कान ॥
सकल निरंतर भरि रहा । साषीभूत सुजान ॥ ८ ॥

जानम मरना सानि कर । यह पिंड उपजाया ॥
साईं दीया जीव को । ले जग में आया ॥ ९ ॥

बिष अम्रित पावक पानी । सतगुरु समझाया ॥
मनसा बाचा करमना । सोई फल पाया ॥ १० ॥

जानइ बूझइ जीव सब। गुन औगुन कीजइ॥
जान बूझ पावक पडइ। दैव दोष न दीजइ॥ ११॥

मन ही माहिँ होइ मरइ। जीवइ मन ही माहिँ॥
साहिब साषीभूत है। दादू दूषन नाहिँ॥ १२॥

बुरा भला सिर जीव के। होवइ इसही माहिँ॥
दादू करता करि रहा। सो सिर दीजइ नाहिँ॥ १३॥

परमारथ को राखिये। कीजइ परउपकार॥
दादू सेवक सो भला। नीरंजन निरकार॥ १४॥

जिन्हका तिन्हको सौँपिये। सुकरित परउपकार॥
दादू सेवक सो भला। सिर नहिँ लेवइ भार॥ १५॥

करता होइ कर कुछ करइ। उस माहिँ बँधावइ॥
दादू उस को पूछिये। उत्तर नहिँ आवइ॥ १६॥

सेवा सुकरित सब गया। मैँ मेरा मन माहिँ॥
दादू आपा जब लगइ। साहिब मानइ नाहिँ॥ १७॥

कोइ उतारहिँ आरती। कोइ सेवा करि जाहिँ॥
कोइ आइ पूजा करहिँ। कोइ खिआवहिँ खाहिँ॥ १८॥

कोई सेवक होइ रहे। कोई संगति माहिँ॥
कोइ आइ दरसन करहिँ। हम तेँ होता नाहिँ॥ १९॥

ना हम करहिँ करावहीँ। पिअहिँ पिआवहिँ नीर॥
करइ करावइ साइँयाँ। दादू सकल सरीर॥ २०॥

करइ करावइ साइँयाँ। जिन्ह दीया औजूद॥
दादू बंदा बीच मेँ। सोभा को मौजूद॥ २१॥

देवइ लेवइ सब करइ। जिन्ह सिरजा सब कोइ॥
दादू बंदा महल मेँ। सोर करहिँ सब कोइ॥ २२॥

जूबा खेलहि जानपति । ता को लखइ न कोइ ॥
सब जग बइठा जीत करि । काहू लिपत न होइ ॥ २३ ॥

इति साषीभूत को अंग संपूर्णम् ॥ ३९ ॥

अथ बेली को अंग।

—:o:—

दादू नमो निरंजनं। नमस्कार गुरुदेवतः॥
बंदनं सर्ब साधवा। परनामं पारंगतः॥ १॥
अम्रित रूपी नावँ ले। आतमतत पोषइ॥
सहजहिँ सहज समाधि मेँ। धरनी जल सोखइ॥
पसरइ तीनोँ लोक मेँ। लिपित नाहिँ धोखइ॥
सो फल लागइ सहज मेँ। सुंदर सब लोकइ॥ २॥
दादू बेली आतमा। सहज फूल फल होइ॥
सहज सहज सतगुरु कहइ। बूझइ बिरला कोइ॥ ३॥
जो साहिब सीँचइ नहीँ। तो बेली कुम्हिलाइ॥
दादू सीँचइ साइँयाँ। बेली बढती जाइ॥ ४॥
हरि तरवर तत आतमा। बेली कर बिस्तार॥
दादू लागइ अमर फल। साधू सीँचनहार॥ ५॥
दादू सूखा रुख खडा। काहे न हरिअर होइ॥
आपइ सीँचइ अमीरस। सो फल फरिया सोइ॥ ६॥
कधी न सूखइ रुख खडा। अम्रित सीँचा आप॥
दादू हरिअर सो फरइ। कछू न व्यापइ ताप॥ ७॥
जो घट रोपे रामजी। सीँचे अमी अघाइ॥
दादू लागइ अमर फल। कबहूँ सूख न जाइ॥ ८॥
हरि जल बरसे बाहिरा। सूखइ काया खेत॥
दादू हरिअर होइगा। सीँचनहार सचेत॥ ९॥
अमर बेलि है आतमा। खार समुंदर माहिँ॥
सूखइ खारे नीर सोँ। सो फल लागइ नाहिँ॥ १०॥

बहु गुनवंती बेलि है । ऊगी कारर माहिँ ॥
सींचे खारे नीर सोँ । ता तेँ उपजइ नाहिँ ॥ ११ ॥
बहु गुनवंती बेलि है । मीठी धरती माहिँ ॥
मीठा पानी सींचिये । दादु अमरफल खाहिँ ॥ १२ ॥
अम्रित बेली बाहिये । अम्रित का फल होइ ॥
अम्रित का फल खाइ कर । मुआ न सुनिये कोइ ॥ १३ ॥
बिष की बेली बाहिये । बिष ही का फल होइ ॥
बिष ही का फल खाइ कर । अमर नहीँ कलि होइ ॥ १४ ॥
सतगुरु संगति ऊपजइ । साहिब सींचनहार ॥
प्राग बिरिछ पीवइ सदा । दादू फरइ अपार ॥ १५ ॥
दया धरम का रुख खडा । सत सोँ बढता जाइ ॥
सँतोष सोँ फूलइ फरइ । दादु अमरफल खाइ ॥ १६ ॥

इति बेली को अंग संपूर्णम् ॥ ३६ ॥

———:o:———

अथ अबिहड को अंग ।

———:o:———

दादू नमो निरंजनं । नमस्कार गुरुदेवतः ॥
बंदनं सर्व साधवा । परनामं पारंगतः ॥ १ ॥

संगी सोई कीजिये । कलि अजरामर होइ ॥
ना वह मरइ न बीछुडइ । ना दुख व्यापइ कोइ ॥ २ ॥

संगी सोई कीजिये । अस्थिर येहि संसार ॥
ना वह फिरइ न हम खपहिँ । अइसा लेहु बिचार ॥ ३ ॥

संगी सोई कीजिये । सुख दुख का साथी ॥
दादू जीवन मरन का । सो सदा सँगाती ॥ ४ ॥

संगी सोई कीजिये । कबहूँ पलट न जाइ ॥
आदि अंत बिहडइ नहीँ । ता सन यह मन लाइ ॥ ५ ॥

माया बिहडइ देखता । काया संग न जाइ ॥
क्रित्रिम बिहडहिँ बावरे । अजरामर लव लाइ ॥ ६ ॥

दादू अबिहड आप है । अमर उपजावनहार ॥
अबिनासी आपइ रहइ । बिनसइ सब संसार ॥ ७ ॥

दादू अबिहड आप है । साचा सिरजनहार ॥
आदि अंत बिहडइ नहीँ । बिनसइ सब आकार ॥ ८ ॥

दादू अबिहड आप है । अबिचल रहा समाइ ॥
निहचल रमता राम है । जो देखइ सो जाइ ॥ ९ ॥

दादू अबिहड आप है । कबहूँ बिहडइ नाहिँ ॥
घटइ बढइ नाहिँ एकरस । उपज खपहिँ उन माहिँ ॥१०॥

अबिहड अँग बिहडइ नहीं । अपलट पलट न जाइ ॥
दादू अनघट एकरस । सब में रहा समाइ ॥ ११ ॥
कबहुँ न बिहडइ सो भला । साधू दृढ मत होइ ॥
दादू हीरा एकरस । बाँधि गाठरी सोइ ॥ १२ ॥

इति अबिहड को अंग संपूर्णम् ॥ ३७ ॥

———:o:———

सतगुरुप्रसादेन प्रोक्तं भगतियोगो नाम तत्त्वसारमतः ॥
सर्वसाधुबुद्धिज्ञानं सर्वशास्त्रं च शोधनम् ।
रामनामसतगुरुसंख्या अबिहडमहिमामहातमम् ॥